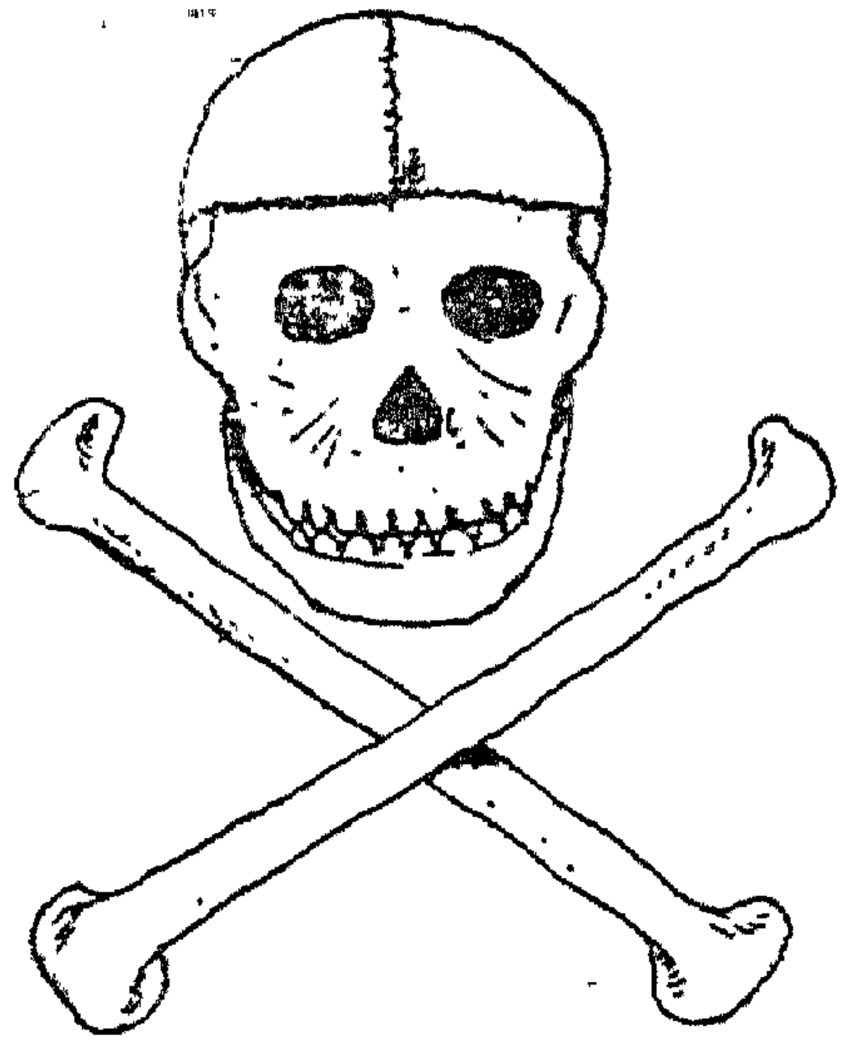
यक्षिणी भैरव सिद्धि



साधक को चाहिए

★ कि एकान्त में बैठकर यह विचार कर लें कि पुस्तक का उपयोग मनमानी मुराद पूरी करने के लिए न करे। ऐसा न हो कि दूसरों की हानि करने पर अपनी हानि हो जाय।

★ कि दुनियाँदारी से दूर रहने वाले, साधू महात्माओं के इस प्रसाद पर जो जान जोखिम में डालकर उन्होंने अध्ययन के आधार पर दिया है, विश्वास करें।

★ कि जटाधारी साधू व फकीरों की वाणियाँ जो डूबते को सहारा देने वाली हैं, सर्वगुण सम्पन्न भगवान जैसी ही अमर समझें।

★ कि वह यह न भूलें कि यह सभी मैटर संग्रहीत हैं, फिर भी किसी कारण पूर्ण प्राप्ति न होने पर इसमें हमारी जिम्मेदारी न समझें।

★ इन सूत्रों की प्रसिद्धि सात समुन्दर पार भी ऐसी ही हो सकती है जैसी कि अपने यहाँ मगर नीयत में सफाई होवे तब।

तंत्र और जादू-विद्या
पर
श्रेष्ठ पुस्तकें

१.	तान्त्रिक साधन विधि	७.५०
२.	यन्त्र सिद्धि	७.५०
३.	मन्त्र सिद्धि	७.५०
४.	तन्त्र सिद्धि	७.५०
५.	वशीकरण सिद्धि	७.५०
६.	यक्षिणी-भैरव सिद्धि	७.५०
७.	अष्ट-सिद्धि	७.५०
८.	कामाख्या सिद्धि	७.५०
९.	देवी-देवता सिद्धि	७.५०
१०.	भूत-प्रेत-पिशाच सिद्धि	७.५०
११.	अघोर-विद्या-सिद्धि	७.५०
१२.	मोहिनी-विद्या सिद्धि	७.५०
१३.	बंगाला तन्त्र-मन्त्र सिद्धि	७.५०
१४.	छाया पुरुष (हमजाद सिद्धि)	७.५०
१५.	मनोकामना सिद्धि	७.५०
१६.	दक्षिण देश के अद्भुत चमत्कार	७.५०

यक्षिणी भैरव सिद्धि

प्राचीन तन्त्र शास्त्रोक्त यक्षिणी, दशमहाविद्या, अष्ट योगिनी, अष्ट नायिका, षट् किन्नरी, अष्ट नागिनी, प्रेतिनी, पिशाचिनी, डाकिनी, स्वप्नावती, मधुमती, पद्मावती, मृतसंजीवनी विद्या, बटुक भैरव तथा भैरवादि साधन सम्बन्धी मन्त्र, यन्त्र, तन्त्र, जप-होम-विधि, स्तव, कवच आदि विविध विषय विभूषित अभूतपूर्व संकलन-ग्रंथ

लेखक

राजेश दीक्षित

प्रकाशक

देहाती पुस्तक भण्डार

चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-६

गुरुमूलमिदं शास्त्रं गुरुमूलमिदं जगत् ।
गुरुदेव परं ब्रह्म गुरुदेव शिवः स्वयम् ।।
गुरुर्गति गुरुर्देवो गुरुर्देवी तथा प्रिये ।
स्वर्गलोके मर्त्यलोके नागलोके च वर्तते ।।

चेतावनी

लेखक
राजेश दीक्षित

★

प्रकाशक :
देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाज़ार, दिल्ली

★

★

प्रथम संस्करण

★

मूल्य : ७·५० साढे सात रु०

YAKSHINI BHAIRAV SIDDHI
BY
RAJESH DIXIT

दो शब्द

★'महा इन्द्रजाल' का यह खण्ड 'यक्षिणी भैरव सिद्धि' आपके समक्ष प्रस्तुत है। इसमें तन्त्र शास्त्र के विभिन्न ग्रन्थों से 'यक्षिणी साधन', 'दशमहा विद्या-साधन', 'अष्ट योगिनी-साधन', 'अष्ट नायिका साधन', 'अष्ट नागिनी-साधन', 'अष्ट भूतिनी साधन', 'प्रेतिनी-साधन', 'पिशाचिनी-साधन', 'डाकिनी-साधन', स्वप्नावती विद्या, मधुमती विद्या, पद्मावती विद्या, मृत संजीवनी विद्या, बटुक भैरव साधन तथा भैरव साधन के शास्त्रोक्त मन्त्र, मन्त्र, तन्त्र, जप-विधि स्तव, कवच आदि को संकलित किया गया है। इसके अतिरिक्त यक्षिणी और भैरव-साधन के अन्य लोक-प्रचलित मन्त्र एवं तन्त्र भी इस ग्रंथ में संग्रहीत हुए हैं।

★यक्षिणी, महाविद्या, योगिनी, नायिका, नागिनी, भूतिनी, प्रेतिनी, पिशाचिनी, डाकिनी एवं महाविद्यायें—ये सभी एक ही परमाशक्ति आदि शक्ति के विभिन्न रूप माने जाते हैं, परन्तु जिस प्रकार उनके स्वरूप में विभिन्नता है, उसी प्रकार उनकी साधन-विधि में भी विभिन्नता पाई जाती है। प्रस्तुत ग्रन्थ में उनका पृथक् पृथक् एवं सविस्तार वर्णन करने की चेष्टा की गई है।

★जैसा कि 'महा इन्द्रजाल' के पूर्ववर्ती अन्य खण्डों में भी कहा जा चुका है, यहाँ पर भी हमें वही बात पुनः कहनी है कि किसी भी देवी-देवता अथवा मन्त्र-तन्त्र की सिद्धि उसके साधक की श्रद्धा, विश्वास एवं साधना पर निर्भर करती है। अविश्वासी, अश्रद्धालु अथवा विधिपूर्वक साधन न करने वाले साधकों को कोई लाभ प्राप्त नहीं होता। अतः तन्त्रशास्त्र के किसी भी साधन को करते समय साधक को पूर्ण श्रद्धालु, विश्वासी एवं यथाविधि प्रयत्नशील रहना आवश्यक है।

★एक मुख्य बात यह भी कहनी है कि पुस्तक में उल्लिखित विद्या केवल उपलक्ष मात्र होती है। इससे साधक को मार्ग-दर्शन तो प्राप्त होता है, परन्तु यथार्थ सिद्धि के लिए गुरु-निर्देश प्राप्त करना आवश्यक है। देश में कहीं भी विद्वान् तन्त्र शास्त्रियों की कमी नहीं है। जिज्ञासु साधक को चाहिए कि वह किसी भी साधन को प्रारम्भ करने से पूर्व योग्य गुरु से निर्देश और आशीर्वाद अवश्य प्राप्त करे, तभी उसका श्रम सफल होगा तथा साधना-काल में उपस्थित होनें वाले विघ्नों से मुक्ति प्राप्त हो सकेगी।

★हमारा कार्य तन्त्र शास्त्र के प्रामाणिक माने जाने वाले प्राचीन तथा अर्वाचीन ग्रन्थों से सामग्री संकलित कर उसे समुचित सम्पादन के साथ पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना मात्र है। 'महा इन्द्रजाल' के सभी खण्डों का लेखन एवं सम्पादन इसी दृष्टि से किया गया है। इन ग्रन्थों में वर्णित प्रयोगों के सत्यासत्य का निर्णय पाठकों को स्वानुभव से करना चाहिए। जिन ग्रन्थों द्वारा प्रस्तुत तथा अन्य खण्डों की सामग्री संकलन में सहायता प्राप्त की गई है, उनके लेखकों के प्रति हम हृदय से कृतज्ञ हैं।

आशा है, पाठकगण हमारे इस श्रम का स्वागत करेंगे।

महोली की पौर,
मथुरा

—राजेश दीक्षित

काव्य-व्याकरण-पुराण-न्याय-वेदान्त शिरोमणि
अपने आदि विद्या-गुरु एवं मातामह
स्व० पं० शुकदेवप्रसाद पाण्डेय
की
पुण्य-स्मृति में सादर
समर्पित

यक्षिणी भैरव सिद्धि

गुरोः स्थानं हि कैलासं तत्र चिन्तामणेर्गृहम् ।
वृक्षालिः कल्पवृक्षालिः लता कल्पलता स्मृता ।।
जलंखातं स्वर्गगंगा सर्वं पुण्यमयं शिवे ।
गुरुगेहे स्थिता दास्यो भैरव्यः परिकीर्त्तिता ।।
भृत्यान्भैरवरूपाँश्च भावयेन्मतिमान्सदा ।।
प्रदक्षिणं कृतं येन गुरो स्थानं महेश्वरि ।
प्रदक्षिणीकृता तेन सप्तद्वीपा वसुन्धरा ।।

× × ×

आदिनाथो महादेवि महाकालो हि यः स्मृतः ।
गुरुः स एवं देवेशि सर्वेन्मन्त्रेऽधुना परः ।।
शैवे शाक्ते वैष्णवे च गाणपत्ये तथैन्दवे ।
महाशैवे च सौरे च स गुरुर्नात्र संशयः ।।
मन्त्रवक्ता स एव स्यान्नापरः परमेश्वरि ।।

× × ×

गुरुपादोदकं पुण्यं सर्वतीर्थावगाहनात् ।
सर्वतीर्थावगाहे तु यत्फलं प्राप्नुयान्नरः ।।
तत्फलं प्राप्नुयान्मर्त्यो पादोदककणाद्गुरोः ।
स स्नातः सर्वतीर्थेषु योऽभिषेकं ततश्चरेत् ।।

× × ×

गुरोः पादरजो मूर्ध्नि धारयेद्यस्तु मानवः ।
सर्व पापविनिर्मुक्तः स शिवो नात्र संशयः ।।

× × ×

तेनैव रजसा देवि तिलकं यस्तु कारयेत् ।
चतुर्भुजो न सन्देहः स वैकुण्ठपतिर्भवेत् ।।

× × ×

तद्रजो भक्षितं येन एकस्मिन्दिवसेऽपि च ।
कोटियज्ञोद्भवं पुण्यं लभते नात्र संशयः ।।

विषय-सूची

आवश्यक ज्ञातव्य

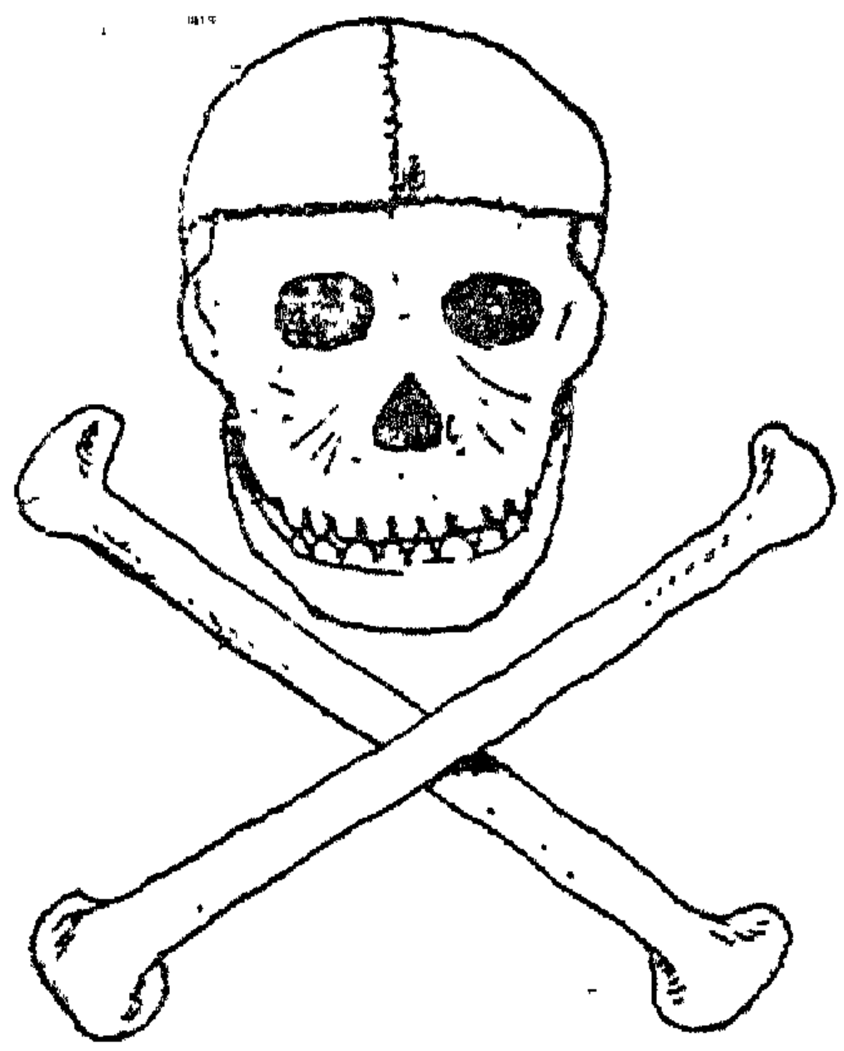
संख्या		पृष्ठ संख्या
१	श्रद्धा, विश्वास और धैर्य की धारणा	१७
२	जप और पूजन की विधियाँ	१८
३	यक्षिणी क्या हैं ?	१९
४	दश महाविद्या क्या हैं ?	२०
५	योगिनी क्या हैं ?	२१
६	नायिका क्या हैं ?	२१
७	नागिनी क्या हैं ?	२१
८	भूतनी आदि क्या हैं ?	२२
९	विद्यायें क्या हैं ?	२२
१०	भैरव क्या हैं ?	२३
११	पूजन-सामग्री के सम्बन्ध में	२३

यक्षिणी साधन

१	कामरत्नोक्त यक्षिणी साधन-विधि	२५
२	'विभ्रमा' यक्षिणी साधन	२५
३	रतिप्रिया यक्षिणी साधन	२६
४	सुर-सुन्दरी यक्षिणी साधन	२६
५	अनुरागिणी यक्षिणी साधन	२७
६	जलवासिनी यक्षिणी साधन	२७
७	वटवासिनी यक्षिणी साधन	२७
८	चण्डवेगा यक्षिणी साधन	२७
९	विशाला यक्षिणी साधन	२८
१०	महामाया यक्षिणी साधन	२८
११	चन्द्रिका यक्षिणी साधन	२८
१२	रक्तकम्बला यक्षिणी साधन	२९
१३	विद्युज्जिह्वा यक्षिणी साधन	२९
१४	कर्णपिशाचिनी यक्षिणी साधन	२९
१५	चामुण्डा यक्षिणी साधन	३०
१६	चिञ्चिपिशाची यक्षिणी साधन	३०
१७	विचित्रा यक्षिणी साधन	३१
१८	हंसी यक्षिणी साधन	३१

१६	मदना यक्षिणी साधन	३१
२०	कालकर्णिका यक्षिणी साधन	३२
२१	लक्ष्मी यक्षिणी साधन	३२
२२	शोभना यक्षिणी साधन	३२
२३	नटी यक्षिणी साधन	३२
२४	पद्मिनी यक्षिणी साधन	३३
२५	विविधतन्त्रोक्त यक्षिणी साधन विधि	३३
२६	साधक के लिए निर्देश	३३
२७	धनदा यक्षिणी साधन	३४
२८	'पुत्रदा' यक्षिणी साधन	३४
२६	महालक्ष्मी यक्षिणी साधन	३४
३०	'जया' यक्षिणी साधन	३४
३१	'अशुभक्षयकारिणी' यक्षिणी साधन	३५
३२	'राज्यप्रदा' यक्षिणी साधन	३५
३३	'राज्यदाता' यक्षिणी साधन	३५
३४	'सर्वकार्यसिद्धिदा' यक्षिणी साधन	३५
३५	'वाचासिद्धि' यक्षिणी साधन	३६
३६	'सर्वविद्या' यक्षिणी साधन	३६
३७	'सन्तोष' यक्षिणी साधन	३६
३८	'विद्यादाता' यक्षिणी साधन	३६
३६	'सुरसुन्दरी' यक्षिणी साधन	३६
४०	'अनुरागिणी यक्षिणी साधन	३७
४१	अमृता यक्षिणी साधन	३७
४२	'कर्ण पिशाचिनी' यक्षिणी साधन	३८
४३	भोग यक्षिणी साधन (१)	३८
४४	भोग यक्षिणी साधन (२)	३८
४५	धनदा यक्षिणी साधन	३६
४६	श्मशान यक्षिणी साधन (१)	३६
४७	श्मशान यक्षिणी साधन (२)	३६
४८	वशीकरण यक्षिणी साधन	३६
४६	वन्धमोचन यक्षिणी साधन	४०
५०	अदृष्टकरण यक्षिणी साधन	४०
५१	विद्यासाधन यक्षिणी साधन	४०
५२	अष्टमहासिद्धि यक्षिणी साधन	४१
५३	औषधि उत्पाटन यक्षिणी मन्त्र	४१
५४	मार्ग-गमन विघ्ननाशक यक्षिणी मन्त्र	४१

यक्षिणी भैरव सिद्धि



साधक को चाहिए

★ कि एकान्त में बैठकर यह विचार कर लें कि पुस्तक का उपयोग मनमानी मुराद पूरी करने के लिए न करें। ऐसा न हो कि दूसरों की हानि करने पर अपनी हानि हो जाय।

★ कि दुनियाँदारी से दूर रहने वाले, साधू महात्माओं के इस प्रसाद पर जो जान जोखिम में डालकर उन्होंने अध्ययन के आधार पर दिया है, विश्वास करें।

★ कि जटाधारी साधू व फकीरों की वाणियाँ जो डूबते को सहारा देने वाली हैं, सर्वगुण सम्पन्न भगवान जैसी ही अमर समझें।

★ कि वह यह न भूलें कि यह सभी मैटर संग्रहीत हैं, फिर भी किसी कारण पूर्ण प्राप्ति न होने पर इसमें हमारी जिम्मेदारी न समझें।

★ इन सूत्रों की प्रसिद्धि सात समुन्दर पार भी ऐसी ही हो सकती है जैसी कि अपने यहाँ मगर नीयत में सफाई होवे तब।

यक्षिणी भैरव सिद्धि

प्राचीन तन्त्र शास्त्रोक्त यक्षिणी, दशमहाविद्या, अष्ट योगिनी, अष्ट नायिका, षट् किन्नरी, अष्ट नागिनी, प्रेतिनी, पिशाचिनी, डाकिनी, स्वप्नावती, मधुमती, पद्मावती, मृतसंजीवनी विद्या, बटुक भैरव तथा भैरवादि साधन सम्बन्धी मन्त्र, यन्त्र, तन्त्र, जप-होम-विधि, स्तव, कवच आदि विविध विषय विभूषित अभूतपूर्व संकलन-ग्रंथ

लेखक

राजेश दीक्षित

प्रकाशक

देहाती पुस्तक भण्डार

चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-६

गुरुमूलमिदं शास्त्रं गुरुमूलमिदं जगत् ।
गुरुदेव परं ब्रह्म गुरुदेव शिवः स्वयम् ।।
गुरुर्गतिा गुरुर्देवो गुरुर्देवी तथा प्रिये ।
स्वर्गलोके मर्त्यलोके नागलोके च वर्तते ।।

चेतावनी

लेखक
राजेश दीक्षित

★

प्रकाशक :
देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाज़ार, दिल्ली

★

★

प्रथम संस्करण

★

मूल्य : ७.५० साढे सात रु०

YAKSHINI BHAIRAV SIDDHI
BY
RAJESH DIXIT

दो शब्द

★'महा इन्द्रजाल' का यह खण्ड 'यक्षिणी भैरव सिद्धि' आपके समक्ष प्रस्तुत है। इसमें तन्त्र शास्त्र के विभिन्न ग्रन्थों से 'यक्षिणी साधन', 'दशमहा विद्या-साधन', 'अष्ट योगिनी-साधन', 'अष्ट नायिका साधन', 'अष्ट नागिनी-साधन', 'अष्ट भूतिनी साधन', 'प्रेतिनी-साधन', 'पिशाचिनी-साधन', 'डाकिनी-साधन', स्वप्नावती विद्या, मधुमती विद्या, पद्मावती विद्या, मृत संजीवनी विद्या, बटुक भैरव साधन तथा भैरव साधन के शास्त्रोक्त मन्त्र, मन्त्र, तन्त्र, जप-विधि स्तव, कवच आदि को संकलित किया गया है। इसके अतिरिक्त यक्षिणी और भैरव-साधन के अन्य लोक-प्रचलित मन्त्र एवं तन्त्र भी इस ग्रंथ में संग्रहीत हुए हैं।

★यक्षिणी, महाविद्या, योगिनी, नायिका, नागिनी, भूतिनी, प्रेतिनी, पिशाचिनी, डाकिनी एवं महाविद्यायें—ये सभी एक ही परमाशक्ति आदि शक्ति के विभिन्न रूप माने जाते हैं, परन्तु जिस प्रकार उनके स्वरूप में विभिन्नता है, उसी प्रकार उनकी साधन-विधि में भी विभिन्नता पाई जाती है। प्रस्तुत ग्रन्थ में उनका पृथक् पृथक् एवं सविस्तार वर्णन करने की चेष्टा की गई है।

★जैसा कि 'महा इन्द्रजाल' के पूर्ववर्ती अन्य खण्डों में भी कहा जा चुका है, यहाँ पर भी हमें वही बात पुनः कहनी है कि किसी भी देवी-देवता अथवा मन्त्र-तन्त्र की सिद्धि उसके साधक की श्रद्धा, विश्वास एवं साधना पर निर्भर करती है। अविश्वासी, अश्रद्धालु अथवा विधिपूर्वक साधन न करने वाले साधकों को कोई लाभ प्राप्त नहीं होता। अतः तन्त्रशास्त्र के किसी भी साधन को करते समय साधक को पूर्ण श्रद्धालु, विश्वासी एवं यथाविधि प्रयत्नशील रहना आवश्यक है।

★एक मुख्य बात यह भी कहनी है कि पुस्तक में उल्लिखित विद्या केवल उपलक्ष मात्र होती है। इससे साधक को मार्ग-दर्शन तो प्राप्त होता है, परन्तु यथार्थ सिद्धि के लिए गुरु-निर्देश प्राप्त करना आवश्यक है। देश में कहीं भी विद्वान् तन्त्र शास्त्रियों की कमी नहीं है। जिज्ञासु साधक को चाहिए कि वह किसी भी साधन को प्रारम्भ करने से पूर्व योग्य गुरु से निर्देश और आशीर्वाद अवश्य प्राप्त करे, तभी उसका श्रम सफल होगा तथा साधना-काल में उपस्थित होनें वाले विघ्नों से मुक्ति प्राप्त हो सकेगी।

★हमारा कार्य तन्त्र शास्त्र के प्रामाणिक माने जाने वाले प्राचीन तथा अर्वाचीन ग्रन्थों से सामग्री संकलित कर उसे समुचित सम्पादन के साथ पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना मात्र है। 'महा इन्द्रजाल' के सभी खण्डों का लेखन एवं सम्पादन इसी दृष्टि से किया गया है। इन ग्रन्थों में वर्णित प्रयोगों के सत्यासत्य का निर्णय पाठकों को स्वानुभव से करना चाहिए। जिन ग्रन्थों द्वारा प्रस्तुत तथा अन्य खण्डों की सामग्री संकलन में सहायता प्राप्त की गई है, उनके लेखकों के प्रति हम हृदय से कृतज्ञ हैं।

आशा है, पाटकगण हमारे इस श्रम का स्वागत करेंगे।

महोली की पौर,
मथुरा

—राजेश दीक्षित

काव्य-व्याकरण-पुराण-न्याय-वेदान्त शिरोमणि
अपने आदि विद्या-गुरु एवं मातामह
स्व० पं० शुकदेवप्रसाद पाण्डेय
की
पुण्य-स्मृति में सादर
समर्पित

यक्षिणी भैरव सिद्धि

गुरोः स्थानं हि कैलासं तत्र चिन्तामणेर्गृहम् ।
वृक्षालिः कल्पवृक्षालिः लता कल्पलता स्मृता ।।
जलंखातं स्वर्गगंगा सर्वं पुण्यमयं शिवे ।
गुरुगेहे स्थिता दास्यो भैरव्यः परिकीर्त्तिता ।।
भृत्यान्भैरवरूपाँश्च भावयेन्मतिमान्सदा ।।
प्रदक्षिणं कृतं येन गुरो स्थानं महेश्वरि ।
प्रदक्षिणीकृता तेन सप्तद्वीपा वसुन्धरा ।।

× × ×

आदिनाथो महादेवि महाकालो हि यः स्मृतः ।
गुरुः स एवं देवेशि सर्वेन्मन्त्रेऽधुना परः ।।
शैवे शाक्ते वैष्णवे च गाणपत्ये तथैन्दवे ।
महाशैवे च सौरे च स गुरुर्नात्र संशयः ।।
मन्त्रवक्ता स एव स्यान्नापरः परमेश्वरि ।।

× × ×

गुरुपादोदकं पुण्यं सर्वतीर्थविगाहनात् ।
सर्वतीर्थविगाहे तु यत्फलं प्राप्नुयान्नरः ।।
तत्फलं प्राप्नुयान्मर्त्यो पादोदककणाद्गुरोः ।
स स्नातः सर्वतीर्थेषु योऽभिषेकं ततश्चरेत् ।।

× × ×

गुरोः पादरजो मूर्ध्नि धारयेद्यस्तु मानवः ।
सर्व पापविनिर्मुक्तः स शिवो नात्र संशयः ।।

× × ×

तेनैव रजसा देवि तिलकं यस्तु कारयेत् ।
चतुर्भुजो न सन्देहः स वैकुण्ठपतिर्भवेत् ।।

× × ×

तद्रजो भक्षितं येन एकस्मिन्दिवसेऽपि च ।
कोटियज्ञोद्भवं पुण्यं लभते नात्र संशयः ।।

विषय-सूची

आवश्यक ज्ञातव्य

संख्या		पृष्ठ संख्या
१	श्रद्धा, विश्वास और धैर्य की धारणा	१७
२	जप और पूजन की विधियाँ	१८
३	यक्षिणी क्या हैं ?	१९
४	दश महाविद्या क्या हैं ?	२०
५	योगिनी क्या हैं ?	२१
६	नायिका क्या हैं ?	२१
७	नागिनी क्या हैं ?	२१
८	भूतनी आदि क्या हैं ?	२२
९	विद्यायें क्या हैं ?	२२
१०	भैरव क्या हैं ?	२३
११	पूजन-सामग्री के सम्बन्ध में	२३

यक्षिणी साधन

१	कामरत्नोक्त यक्षिणी साधन-विधि	२५
२	'विभ्रमा' यक्षिणी साधन	२५
३	रतिप्रिया यक्षिणी साधन	२६
४	सुर-सुन्दरी यक्षिणी साधन	२६
५	अनुरागिणी यक्षिणी साधन	२७
६	जलवासिनी यक्षिणी साधन	२७
७	वटवासिनी यक्षिणी साधन	२७
८	चण्डवेगा यक्षिणी साधन	२७
९	विशाला यक्षिणी साधन	२८
१०	महामाया यक्षिणी साधन	२८
११	चन्द्रिका यक्षिणी साधन	२८
१२	रक्तकम्बला यक्षिणी साधन	२९
१३	विद्युज्जिह्वा यक्षिणी साधन	२९
१४	कर्णपिशाचिनी यक्षिणी साधन	२९
१५	चामुण्डा यक्षिणी साधन	३०
१६	चिञ्चिपिशाची यक्षिणी साधन	३०
१७	विचित्रा यक्षिणी साधन	३१
१८	हंसी यक्षिणी साधन	३१

१६	मदना यक्षिणी साधन	३१
२०	कालकर्णिका यक्षिणी साधन	३२
२१	लक्ष्मी यक्षिणी साधन	३२
२२	शोभना यक्षिणी साधन	३२
२३	नटी यक्षिणी साधन	३२
२४	पद्मिनी यक्षिणी साधन	३३
२५	विविधतन्त्रोक्त यक्षिणी साधन विधि	३३
२६	साधक के लिए निर्देश	३३
२७	धनदा यक्षिणी साधन	३४
२८	'पुत्रदा' यक्षिणी साधन	३४
२६	महालक्ष्मी यक्षिणी साधन	३४
३०	'जया' यक्षिणी साधन	३४
३१	'अशुभक्षयकारिणी' यक्षिणी साधन	३५
३२	'राज्यप्रदा' यक्षिणी साधन	३५
३३	'राज्यदाता' यक्षिणी साधन	३५
३४	'सर्वकार्यसिद्धिदा' यक्षिणी साधन	३५
३५	'वाचासिद्धि' यक्षिणी साधन	३६
३६	'सर्वविद्या' यक्षिणी साधन	३६
३७	'सन्तोष' यक्षिणी साधन	३६
३८	'विद्यादाता' यक्षिणी साधन	३६
३६	'सुरसुन्दरी' यक्षिणी साधन	३६
४०	'अनुरागिणी यक्षिणी साधन	३७
४१	अमृता यक्षिणी साधन	३७
४२	'कर्ण पिशाचिनी' यक्षिणी साधन	३८
४३	भोग यक्षिणी साधन (१)	३८
४४	भोग यक्षिणी साधन (२)	३८
४५	धनदा यक्षिणी साधन	३६
४६	श्मशान यक्षिणी साधन (१)	३६
४७	श्मशान यक्षिणी साधन (२)	३६
४८	वशीकरण यक्षिणी साधन	३६
४६	बन्धमोचन यक्षिणी साधन	४०
५०	अदृष्टकरण यक्षिणी साधन	४०
५१	विद्यासाधन यक्षिणी साधन	४०
५२	अष्टमहासिद्धि यक्षिणी साधन	४१
५३	औषधि उत्पाटन यक्षिणी मन्त्र	४१
५४	मार्ग-गमन विघ्ननाशक यक्षिणी मन्त्र	४१

५५	'भोग यक्षिणी' साधन	४१
५६	'सिद्धि' यक्षिणी साधन	४२
५७	वशीकरण यक्षिणी साधन	४२
५८	मातंगेश्वरी यक्षिणी साधन	४२
५९	विजयदा यक्षिणी साधन	४३
६०	सर्वसिद्धि प्रदाता यक्षिणी साधन	४३
६१	रक्त चामुण्डा यक्षिणी साधन	४३
६२	पिंगला यक्षिणी साधन	४४
६३	महामाया यक्षिणी साधन	४५
६४	उच्छिष्ट यक्षिणी साधन	४५
६५	प्रेतहर यक्षिणी साधन	४५
६६	क्षीर यक्षिणी साधन	४६
६७	अन्नपूर्णा यक्षिणी साधन	४६
६८	मातंगी यक्षिणी साधन	४६
६९	श्मशान यक्षिणी साधन	४६
७०	माहेन्द्री यक्षिणी साधन	४७
७१	शंखिनी यक्षिणी साधन	४७
७२	चन्द्रिका यक्षिणी साधन	४७
७३	मदनमेखला यक्षिणी साधन	४७
७४	विकला यक्षिणी साधन	४८
७५	लक्ष्मी यक्षिणी साधन	४८
७६	मानिनी यक्षिणी साधन	४८
७७	शतपत्रिणी यक्षिणी साधन	४९
७८	सुलोचना यक्षिणी साधन	४९
७९	विलासिनी यक्षिणी साधन	४९
८०	नटी यक्षिणी साधन	४९
८१	कामेश्वरी यक्षिणी साधन	५०
८२	स्वर्णरेखा यक्षिणी साधन	५०
८३	सुर सुन्दरी यक्षिणी साधन	५१
८४	प्रमोदा यक्षिणी साधन	५१
८५	अनुरागिणी यक्षिणी साधन	५१
८६	पद्मकेशी यक्षिणी साधन	५२
८७	महा यक्षिणी साधन	५२
८८	पद्मिनी यक्षिणी साधन	५२
८९	कनकवती यक्षिणी साधन	५३
९०	रतिप्रिया यक्षिणी साधन	५३

९१	मनोहरा यक्षिणी साधन	५३
९२	कालिका देवी यक्षिणी साधन	५४
९३	कर्णपिशाचिनी यक्षिणी साधन	५४
९४	विचित्रा यक्षिणी साधन	५५
९५	महानन्दा यक्षिणी साधन	५५
९६	नखकेशी यक्षिणी साधन	५५
९ने	सिद्धेश्वरी यक्षिणी साधन	५५
९८	विभ्रमा यक्षिणी साधन	५६
९९	भोजनदा यक्षिणी साधन	५६
१००	सुलोचना यक्षिणी साधन	५६
१०१	रतिप्रिया यक्षिणी साधन	५७
१०२	कर्णपिशाचिनी यक्षिणी साधन	५७
१०३	छन्द्रगिरा यक्षिणी साधन	५७
१०४	सुरसुन्दरी यक्षिणी साधन	५८
१०५	अनुरागिणी यक्षिणी साधन	५८
१०६	कामेश्वरी यक्षिणी साधन	५८
१०७	शंखिनी यक्षिणी साधन	५९
१०८	त्यागा यक्षिणी साधन	५९
१०९	स्वामीश्वरी यक्षिणी साधन	५९
११०	वट यक्षिणी साधन	६०
१११	चंद्र योगिनी यक्षिणी साधन (१)	६०
११२	चंद्र योगिनी यक्षिणी साधन (२)	६०
११३	विशाला यक्षिणी साधन	६१
११४	भास्करी यक्षिणी साधन	६१
११५	अन्नपूर्णा यक्षिणी साधन	६१
११६	पात्रपूर्णा यक्षिणी साधन	६१
११७	भण्डारपूर्णा यक्षिणी साधन	६२
११८	कनकवती यक्षिणी साधन	६२
११९	चमुण्डा यक्षिणी साधन	६२
१२०	पद्मावती यक्षिणी साधन	६३
१२१	महामाया यक्षिणी साधन	६३
१२२	महामाया यक्षिणी साधन (२)	६४
१२३	चंद्रिका यक्षिणी साधन	६४
१२४	माहेन्द्र यक्षिणी साधन	६४
१२५	कमलसुन्दरी यक्षिणी साधन	६४
१२६	स्वर्णरेखा यक्षिणी साधन	६५

संख्या		पृष्ठ संख्या
१२७	प्रमोदा यक्षिणी साधन	६५
१२८	रतिप्रिया यक्षिणी साधन	६५
१२९	पद्मिनी यक्षिणी साधन	६६
१३०	कनकवती यक्षिणी साधन	६६
२३१	रक्तकम्बला यक्षिणी साधन	६७

दशमहाविद्या साधन

१	काली साधन	६८
२	काली के निमित्त जप-होम	७०
३	काली स्तव	७०
४	काली कवच	८०
५	तारा साधन	८५
६	तारा मन्त्र, तारा ध्यान	८५
७	तारा पूजन का यंत्र	८६
८	तारा के निमित्त जप-होम	८६
९	तारा स्तव	८६
१०	तारा कवच	८७
११	महाविद्या साधन	९०
१२	महाविद्या मंत्र	९०
१३	महाविद्या ध्यान	९०
१४	महाविद्या पूजन का यंत्र	९०
१५	महाविद्या के निमित्त जप-होम	९१
१६	महाविद्या स्तव	९१
१७	महाविद्या कवच	९५
१८	भुवनेश्वरी साधन	९७
१९	भुवनेश्वरी मंत्र	९७
२०	भुवनेश्वरी ध्यान	९७
२६	भुवनेश्वरी पूजन यंत्र	९८
२२	भुवनेश्वरी के निमित्त जप-होम	९८
२३	भुवनेश्वरी स्तव	९८
२४	भुवनेश्वरी कवच	१०७
२५	भैरवी साधन	१०८
१६	भैरवी मंत्र	१०८
२७	भैरवी ध्यान	१०८
२८	भैरवी पूजन का यंत्र	१०९
२९	भैरवी के निमित्त जप-होम	१०९

संख्या		पृष्ठ संख्या
३०	भैरवी स्तव	१०९
३१	भैरवी कवच	११४
३२	छिन्नमस्ता साधन	११५
३३	छिन्नमस्ता मंत्र	११५
३४	छिन्नमस्ता ध्यान	११५
३५	छिन्नमस्ता पूजन का यंत्र	११७
३६	छिन्नमस्ता के निमित्त जप-होम	११७
३७	छिन्नमस्ता स्तव	११७
३८	छिन्नमस्ता कवच	१२१
३९	धूमावती साधन	१२२
४०	धूमावती मंत्र	१२२
४१	धूमावती ध्यान	१२२
४२	धूमावती पूजन का यंत्र	१२३
४३	धूमावती के निमित्त जप-होम	१२३
४४	धूमावती स्तव	१२३
४५	धूमावती कवच	१२४
४६	बगला साधन	१२४
४७	बगला मंत्र	१२४
४८	बगलामुखी ध्यान	१२५
४९	बगलामुखी पूजन का यंत्र	१२५
५०	बगलामुखी के निमित्त जप-होम	१२६
५१	बगलामुखी स्तव	१२६
५२	बगला मुखी कवच	१२६
५३	मातंगी साधन	१२७
५४	मातंगी मंत्र	१२७
५५	मातंगी ध्यान	१२७
५६	मातंगी पूजन का यन्त्र	१२८
५७	मातंगी के निमित्त जप-होम	१२८
५८	मातंगी स्तव	१२८
२९	मातंगी कवच	१३०
६०	कमला (लक्ष्मी) साधन	१३१
६१	कमला मन्त्र	१३१
६२	कमला ध्यान	१३२
६३	कमला पूजन का यन्त्र	१३२
६४	कमला के निमित्त जप-होम	१३२
६५	कमला स्तव	१३३

६६ लक्ष्मी स्तव का माहात्म्य १४४
६७ कमला कवच १४६
६८ कवच का माहात्म्य १४७

अष्ट योगिनी साधन

१ सुरसुन्दरी योगिनी साधन १५०
२ मनोहरा योगिनी साधन १५३
३ कनकवती योगिनी साधन १५४
४ कामेश्वरी योगिनी साधन १५६
५ रतिसुन्दरी योगिनी साधन १५७
६ पद्मिनी योगिनी साधन १५८
७ नटिनी योगिनी साधन १५९
८ मधुमती योगिनी साधन १६०
९ योगिनी-साधन के लिए विशेष निर्देश १६२

अष्ट नायिका साधन

१ जया साधन १६३
२ विजया साधन १६३
३ रतिप्रिया साधन १६४
४ काञ्चनकुण्डली साधन १६४
५ स्वर्णमाला साधन १६५
६ जयावती साधन १६५
७ सुरंगिणी साधन १६५
८ विद्राविणी साधन १६६

षट किन्नरी साधन

१ मनोहारिणी किन्नरी साधन १६७
२ सुभगाकिन्नरी साधन १६८
३ विशालनेत्रा किन्नरी साधन १६८
४ सुरतप्रिया किन्नरी साधन १६८
५ सुमुखी किन्नरी साधन १६९
६ दिवाकरमुखी किन्नरी साधन १६९

अष्ट नागिनी साधन

१ अनन्तमुखी नागिनी मन्त्र १७०
२ कर्कोटमुखी नागिनी मन्त्र १७१
३ पद्मिनीमुखी नागिनी मन्त्र १७१

४	तक्षकमुखी नागिनी मन्त्र	१७१
५	महा पद्ममुखी नागिनी मन्त्र	१७१
६	वासुकीमुखी नागिनी मन्त्र	१७१
७	कुलीरमुखी नागिनी मन्त्र	१७१
८	शंखिनी नागिनी मन्त्र	१७१
९	नागिनी मन्त्र साधन विधि	१७१
१०	पहली विधि	१७२
११	दूसरी विधि	१७२
१२	तीसरी विधि	१७२
१३	चौथी विधि	१७२
१४	पाँचवीं विधि	१७३
१५	छठी विधि	१७३
१६	सातवीं विधि	१७३
१७	आठवीं विधि	१७४
१८	नवीं विधि	१७४
१९	दसवीं विधि	१७४
२०	ग्यारहवीं विधि	१७४

नवभूतिनी साधन

१	भूतिनी मन्त्र	१७६
२	महाभूतिनी साधन	१७६
३	कुण्डलवती भूतिनी साधन	१७७
४	सिन्दूरिणी भूतिनी साधन	१७८
५	हारिणी भूतिनी साधन	१७८
६	नटी भूतिनी साधन	१७८
७	अति (महा) नटी भूतिनी साधन	१७९
८	चेटिका भूतिनी साधन	१७९
९	कामेश्वरी भूतिनी साधन	१८०
१०	कुमारिका भूतिनी साधन	१८०

विविध साधन

१	प्रेतिनी साधन.	१८२
२	पिशाचिनी साधन	१८३
३	डाकिनी साधन	१८३
४	कुल कुण्डलिनी साधन	१८४

संख्या		पृष्ठ संख्या
५	देवियों के बीज मन्त्र	१८४
६	दैवविद्या साधन	१८५
७	षोडशी कवच	१८५
८	व्याधि विनाशिनी कवच	१८६
९	स्वप्नावती विद्या	१८७
१०	मृतसंजीवनी विद्या	१८७
११	मधुमती विद्या	१८८
१२	पद्मावती विद्या	१८८

बटुक भैरव साधन

१	बटुक भैरव मन्त्र	१८९
२	बटुक भैरव मन्त्र साधन विधि	१८९
३	करांगन्यास	१९०
४	ध्यान के स्वरूप	१९०
५	सात्विक ध्यान	१९१
६	राजस ध्यान	१९१
७	तामस ध्यान	१९२
८	ध्यान का फल	१९२
९	भैरव पूजा का मन्त्र	१९२
१०	बलिदान विधि	१९६

भैरव साधन

१	भैरव मन्त्र	१९७
२	भैरव साधन न्यास	१९७
३	भैरव ध्यान	१९७
४	भैरव पूजन का यन्त्र	१९८
५	भैरव के जप तथा होम की विधि	१९८

भैरव साधन की अन्य प्रणालियाँ

१	भैरव साधन का मन्त्र तथा प्रयोग (१)	२००
२	भैरव-साधन का मन्त्र तथा प्रयोग (२)	२०१
३	भैरव-साधन का मन्त्र तथा प्रयोग (३)	२०२
४	भैरव-साधन का तन्त्र (१)	२०३
५	भैरव-साधन का तन्त्र (२)	२०३
६	भैरव-साधन का तन्त्र (३)	२०४

यक्षणी भैरव सिद्धि

आवश्यक ज्ञातव्य

यक्षिणी, भैरव आदि के साधन से पूर्व प्रत्येक साधक को निम्न-लिखित बातों का ज्ञान प्राप्त कर लेना आवश्यक है। जो साधक इन निर्देशों का पालन नहीं करते, उन्हें सिद्धि प्राप्त होना असम्भव है।

श्रद्धा, विश्वास और धैर्य की धारणा

किसी भी साधन को प्रारम्भ करने से पूर्व साधक को उसके प्रति पूर्ण श्रद्धावान्, विश्वासी अर्थात् आस्थावान् एवं धैर्यवान् होना आवश्यक है। जो साधक साधन के प्रति अश्रद्धा अथवा अनास्था रखते हैं, उन्हें सिद्धि प्राप्त नहीं होती। अतः साधक को चाहिए कि यदि किसी साधन के विषय में उसके मन में तनिक भी सन्देह हो तो उसे करना कदापि प्रारम्भ न करे।

इसी प्रकार साधना-काल में साधक का धैर्यवान् होना परम आवश्यक है। जो साधक साधन में आने वाली कठिनाइयों के कारण अपना धैर्य तथा साहस छोड़ बैठते हैं, उन्हें भी सिद्धि प्राप्त नहीं होती। अनेक बार ऐसा भी सुना और देखा गया है कि साधना-काल में आने वाली कठिनाइयों से विचलित हो जाने के कारण साधक को

शारीरिक अथवा अन्य प्रकार की हानियाँ उठानी पड़ी हैं। अतः जब साधक में कठिनाइयों से लोहा लेने का साहस न हो, तब तक उसे किसी भी साधन में प्रवृत्त नहीं होना चाहिए (तान्त्रिक साधनों का मार्ग खतरों से भरा हुआ बताया गया है। इसमें तनिक सी भी असावधानी, प्रमाद, भूल अथवा साहसहीनता साधक के लिए प्राणघातक सिद्ध हो सकती है।

जप और पूजन की विधियाँ

प्रस्तुत ग्रंथ में जिन साधनों का वर्णन किया गया है, उनके जप, पूजन तथा होमादि की संक्षिप्त विधियाँ प्रत्येक प्रयोग के साथ दे दी गई हैं। फिर भी उनके विषय में विस्तृत जानकारी प्राप्त कर लेना प्रत्येक साधक के लिए आवश्यक है। प्रत्येक देवी-देवता के जप, पूजन की विधियों का विस्तृत वर्णन 'महा इन्द्रजाल' के और होम, 'तांत्रिक जप पूजन और होम की विधियाँ' नामक खण्ड में किया गया है। साधकों को चाहिए कि वे किसी भी साधन को प्रारम्भ करने से पूर्व उस साधन में प्रयुक्त होने वाले 'जप, पूजन तथा होम की विधियों की पूर्ण जानकारी प्राप्त करने के लिए उक्त खण्ड को अवश्य पढ़ लें और उसी के निर्देशानुसार सब कार्य करें।

जो साधक उक्त खण्ड को न लेना चाहें, उन्हें चाहिए कि वे जप, पूजन तथा होम की सर्वांगपूर्ण विधि का ज्ञान किसी कर्मकाण्ड एवं तन्त्रशास्त्र के ज्ञाता विद्वान् व्यक्ति से अवश्य प्राप्त कर लें। इस ज्ञान को प्राप्त किये बिना साधन में सफलता प्राप्त होना असंभव है। उदाहरण के लिए, किसी स्थान पर षोडशोपचार पूजन का विधान कहा गया है तो किसी स्थान पर अन्य प्रकार से पूजन-होमादि करने की व्यवस्था बताई गई है, तो जब तक साधक को उन सब विधियों का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं होगा, तब तक वह उन्हें प्रयुक्त किस प्रकार कर सकेगा ? इसलिए जप, पूजन एवं होम की विधियों का यथार्थ ज्ञान प्राप्त कर लेना अत्यावश्यक है। 'महा इन्द्रजाल' के 'यन्त्र सिद्धि' तथा 'मन्त्र सिद्धि' नामक खण्डों में यन्त्रों तथा मन्त्रों के लेखन,

जप, तथा होम आदि की संक्षिप्त विधियों का वर्णन किया गया है। साधकों को उक्त खण्डों का अध्ययन करने से भी बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त हो सकता है।

यक्षिणी क्या है ?

हिन्दू धर्मशास्त्रों में मनुष्येतर जिन प्राणि-जातियों का उल्लेख हुआ है, उनमें देव, गन्धर्व, यक्ष, किन्नर, नाग, राक्षस, पिशाच आदि प्रमुख हैं। इन जातियों के स्थान जिन्हें 'लोक' कहा जाता है—भी मनुष्यजाति के प्राणियों से भिन्न पृथ्वी से कहीं अन्यत्र अवस्थित हैं। इनमें से कुछ जातियों का निवास आकाश में और कुछ का पाताल में माना जाता है।

इन जातियों का मुख्य गुण इनकी सार्वभौमिक सम्पन्नता है, अर्थात् इनके लिए किसी वस्तु को प्राप्त कर लेना अथवा प्रदान कर देना सामान्य बात है। ये जातियाँ स्वयं विविध सम्पत्तियों की स्वामिनी हैं। मनुष्य जाति का जो प्राणी इनमें से किसी भी जाति के किसी प्राणी की साधना करता है अर्थात् उसे जप, होम, पूजन आदि द्वारा अपने ऊपर अनुरक्त कर लेता है, उसे ये मनुष्येतर जाति के प्राणी उसकी अभिलाषित वस्तु प्रदान करने में समर्थ होते हैं। इन्हें अपने ऊपर प्रसन्न करने एवं उस प्रसन्नता द्वारा अभिलषित वस्तु प्राप्त करने की दृष्टि से ही इनका विविध मन्त्रोपचार आदि के द्वारा साधन किया जाता है जिसे प्रचलित भाषा में 'सिद्धि' कह कर पुकारा जाता है।

यक्षिणियाँ भी मनुष्येतर जाति की प्राणी हैं। ये यक्ष जाति के पुरुषों की पत्नियाँ हैं और इनमें विविध प्रकार की शक्तियाँ सन्निहित मानी जाती हैं। विभिन्न नामधारिणी यक्षिणियाँ विभिन्न शक्तियों से सम्पन्न हैं—ऐसी तान्त्रिकों की मान्यता है। अतः विभिन्न कार्यों की सिद्धि एवं विभिन्न अभिलाषाओं की पूर्ति के लिए तंत्रशास्त्रियों

द्वारा विभिन्न यक्षिणियों के साधन की क्रियाओं का आविष्कार किया गया है। यक्ष जाति चूँकि चिरंजीवी होती है, अतः यक्षिणियाँ भी प्रारम्भिक काल से अब तक विद्यमान हैं और वे जिस साधक पर प्रसन्न हो जाती हैं, उसे अभिलषित वर अथवा वस्तु प्रदान करती हैं।

अब से कुछ सौ वर्ष भारतवर्ष में यक्ष-पूजा का अत्यधिक प्रचलन था। अब भी उत्तर भारत के कुछ भागों में 'जखैया' के नाम से यक्ष-पूजा प्रचलित है। पुरातत्त्व विभाग द्वारा प्राचीन काल में निर्मित यक्षों की अनेक प्रस्तर मूर्तियों की खोज की जा चुकी है। देश के विभिन्न पुरातत्त्व संग्रहालयों में यक्ष तथा यक्षिणियों की विभिन्न प्राचीन मूर्तियाँ भी देखने को मिल सकती हैं।

कुछ लोग यक्ष तथा यक्षिणियों को देवता तथा देवियों की ही एक उपजाति के रूप में मानते हैं और उसी प्रकार उनका पूजन तथा आराधनादि भी करते हैं। इनकी संख्या सहस्रों में हैं।

दश महाविद्या क्या है ?

१. काली, २. तारा, ३, महाविद्या, ४. भुवनेश्वरी, ५. भैरवी, ६. छिन्नमस्ता, ७. धूमावती, ८. बगलामुखी, ९. मातंगी और १०. कमल—ये दस देवियाँ 'दश महाविद्या' के रूप में प्रसिद्ध हैं।

यथार्थ में ये सभी देवियाँ एक ही आदि शक्ति जिसे शिवा, दुर्गा, पार्वती अथवा लक्ष्मी कहा जाता है—की प्रतिमूर्तियाँ हैं। इन सबके स्वामी (पति) भगवान् सदाशिव हैं। साधकों की प्रसन्नता के लिए विभिन्न अवसरों पर पराशक्ति महादेवी ने अपने जो विविध रूप धारण किये हैं, उन्हीं का दश महाविद्याओं के रूप में पृथक्-पृथक् जप, ध्यान एवं पूजन आदि किया जाता है। भगवती महादेवी के ये सभी रूप अपने भक्तों तथा साधकों को प्रसन्नता एवं अभिलषित वस्तु प्रदान करने वाले हैं। आदि शक्ति की उपासना का विधान भी हमारे देश में सहस्रों वर्षों से चला आ रहा है और 'शाक्त मत' के नाम से इनकी उपासना करने वालों का एक पृथक् सम्प्रदाय ही बन गया है।

योगिनी क्या है ?

योगिनियों की उत्पत्ति आदि शक्ति महादेवी के एक स्वरूप काली (जिनका ऊपर दश महाविद्याओं में उल्लेख किया जा चुका है) के स्वेद-कणों से मानी गई है। 'घोर' नामक महादैत्य का वध करने के लिए जब भगवती ने 'काली का स्वरूप' धारण किया था, उस समय दैत्य-राज से वध करते समय उसके शरीर से जो स्वेद-बिन्दु नीचे गिरे, उनसे करोड़ों योगिनियों की उत्पत्ति हुई थी। वे सभी योगिनियाँ भगवती काली के साथ ही विद्यमान रहती हैं तथा भगवती के अंश से उत्पन्न होने के कारण वे सब भी भगवती महादेवी के ही समान सामर्थ्यशलिनी तथा अपने भक्तों की अभिलाषा को पूर्ण करने वाली हैं। पृथक्-पृथक् योगिनी पृथक्-पृथक् विशिष्ट गुणों एवं क्षमता को धारण करने वाली बताई गई है।

नायिका क्या है ?

नायिकाएँ भी यक्षिणियों की ही एक उपजाति के रूप में प्रसिद्ध हैं।

नागिनी क्या हैं ?

जैसा कि पहले बताया जा चुका है, मनुष्येतर जातियों में एक जाति 'नाग' का भी उल्लेख हुआ है। इनका निवास 'नाग लोक' में माना जाता है। नाग लोक की अवस्थिति पृथ्वी के नीचे पाताल लोक के समीप बताई गई हैं। नागिनियाँ इसी जाति की स्त्रियाँ हैं। नागि-नियों को परमसुन्दरी एवं दैवी शक्ति से सम्पन्न माना जाता है। हमारे देश में नाग-पूजा का प्रचलन भी सहस्रों वर्षों से है। आज भी वह यत्र-तत्र-सर्वत्र पाया जाता है। सर्पों की पूजा नागों के प्रतीक रूप में ही की जाती है।

नाग-देवताओं की प्राचीन प्रस्तर मूर्तियाँ भी पुरातत्त्व विभाग द्वारा प्रचुर संख्या में उपलब्ध की गई हैं, जिन्हें देश के विभिन्न पुरा-

तत्त्व संग्रहालयों में देखा जा सकता है। नाग-वंशी राजाओं का उल्लेख भी पुराण तथा इतिहास के ग्रंथों में पाया जाता है।

नाग-जाति में भी अपने भक्त साधक को अभिलषित वर एवं सामग्री प्रदान करने की क्षमता कही गई है, इसलिए उनका साधन करने के लिए विविध मन्त्र, जप तथा होम की प्रथाएँ प्रचलित हैं।

भूतना आदि क्या हैं ?

मनुष्येतर जातियों में भूत, प्रेत, पिशाच, वैताल, डाकिनी आदि की स्थिति भी प्राचीन काल से मानी जाती है। इन सभी को भूतेश्वर भगवान् शिव का अनुचर बताया गया है। इनकी स्त्रियाँ भूतनी, प्रेतिनी, पिशाचिनी, वैतालिनी आदि भगवती शिवा की अनुचरी हैं और उन्हीं के साथ निवास करती हैं।

भगवान् शिव और भगवती शिवा के अनुचर-अनुचरी होने के कारण भूत-भूतिनी, प्रेत-प्रेतिनी, पिशाच-पिशाची, वेताल-वैताली, डाकिनी, शाकिनी आदि भी दैवी शक्तियों से सम्पन्न हैं और ये अपने भक्तों पर प्रसन्न होकर उन्हें अभिलषित वर एवं वस्तुएँ प्रदान करने की सामर्थ्य रखते हैं। इसलिए इनकी सिद्धि के लिए विभिन्न मन्त्र, यन्त्र, जप, होम एवं पूजन की विधियों का आविष्कार तथा प्रचलन किया गया है।

इन सब की पूजादि का प्रचलन भी हमारे देश में सहस्रों वर्ष पूर्व आरम्भ हुआ था और वह आप भी सर्वत्र पाया जाता है। जिन मनुष्यों पर इन जातियों के प्राणी प्रसन्न हो जाते हैं, उन्हें उनकी मनोभिलाषित प्रत्येक वस्तु प्रदान करते हैं।

विद्याएँ क्या हैं ?

स्वप्नावनी, मधुमती, पद्मावती, मृतसंजीवनी आदि विद्याएँ भी महाविद्याओं की ही प्रतिरूपा हैं। इन सभी के साधन में उसी एक

आदिशक्ति की विभिन्न प्रकारों से आराधना की जाती है। सिद्ध हो जाने पर ये विद्याएँ साधक को अभिलषित वस्तु प्रदान करती हैं।

भैरव क्या हैं ?

भैरव को भगवान् शिव का प्रधान सेवक तथा उन्हीं का प्रतिरूप कहा गया है। वे भगवान शिव के अन्य अनुचर भूत-प्रेतादि गणों के अधिपति हैं। उनकी उत्पत्ति भगवती महामाया की कृपा से हुई है। अतः वे भगवान् भूतनाथ महादेव एवं भगवती महादेवी के अनुरूप ही शक्ति तथा सामर्थ्यवान् हैं।

भैरव के अनेक स्वरूपों का वर्णन पुराणों में किया गया है। यथा—बटुक भैरव, काल भैरव आदि।

गुरु गोरखनाथ द्वारा प्रवर्तित नाथ-सम्प्रदाय में भैरव-पूजा का विशेष महत्त्व माना गया है और इस संसार की उत्पत्ति, स्थिति एवं प्रलय का आदिकरण भी भगवान् भैरव तथा भगवती भैरवी को बताया गया है।

भगवान् भैरव प्रसन्न होकर अपने साधक भक्तों को अभिलषित वर एवं वस्तुएँ प्रदान करने में समर्थ हैं, इसीलिए हमारे देश में भैरव पूजन की प्रथा भी सहस्त्रों वर्षों से प्रचलित है। आज भी भारतवर्ष के विभिन्न स्थानों में भैरव के मन्दिर पाये जाते हैं, जहाँ उनकी नियमित रूप से पूजा तथा उपासना की जाती है। प्राचान तन्त्रशास्त्रों में भैरव-साधन की विविध विधियों का उल्लेख पाया जाता है तथा अर्वाचीन ग्रंथों में लोकभाषा के माध्यम से भी भैरव-सिद्धि के अनेक उपाय कहे गये हैं।

पूजन-सामग्री के सम्बन्ध में

यक्षिणी, भैरवी, योगिनी, महाविद्या आदि की पूजा तथा होम की विधियों में अनेक स्थानों पर मांस-मदिरा आदि के प्रयोग का भी

उल्लेख हुआ है। आधुनिक धर्माचार्य देव-पूजा आदि की क्रियाओं में मांस-मदिरा के योग का विरोध करते हुए पाये जाते हैं। उनकी दृष्टि में ये सब वस्तुएँ निकृष्ट हैं तथा हिंसा एवं पाप को बढ़ावा देने वाली हैं। यहाँ पर हम उनके तर्क-वितर्कों में जाने की आवश्यकता नहीं समझते। संक्षेप में इतना ही कहा जा सकता है कि तन्त्रशास्त्र के प्रायः सभी प्रयोग ऐसी ही वस्तुओं द्वारा सम्पन्न तथा पूर्ण होते हैं। जो लोग इन वस्तुओं के प्रयोग के विषय में अरुचि रखते हैं, उन्हें तन्त्र-साधन की दिशा में अग्रसर ही नहीं होना चाहिए। ये साधन तो इन्हीं सब वस्तुओं पर निर्भर करते हैं। अस्तु, हमने प्रस्तुत संकलन में हिंसा-अहिंसा का विचार किये बिना सम्पूर्ण साधन-विधियों का ज्यों का त्यों उल्लेख कर दिया है। साधकों को चाहिए कि वे जिस मत के मानने वाले हों, उसके अनुसार ही किसी साधन को प्रारम्भ करें। यह स्मरणीय है कि आत्मा की आवाज के विरुद्ध किया गया कोई भी साधन फलदायी नहीं होता है।

यक्षिणी साधन

कामरत्नोक्त यक्षिणी साधन विधि

अब कामरत्न नामक तन्त्र-ग्रन्थ में उल्लिखित यक्षिणी-साधन की विधियों का वर्णन किया जाता है।

उक्त ग्रन्थ में लिखा है कि साधन-काल में तथा उसके पश्चात् साधक को चाहिए कि वह मांस, मदिरा एवं ताम्बूल (पान) का परित्याग कर दे और किसी का स्पर्श न करे।

साधनकाल में प्रतिदिन प्रातःकाल नित्यकर्म से निवृत्त हो, स्नान करके, किसी एकान्त स्थान में मृगचर्म पर बैठकर मन्त्र का तब तक जप करे जब तक कि सिद्धि प्राप्त न हो। जिस यक्षिणी के साधन में जिस विधि का उल्लेख किया गया हैं उसी के अनुसार आचरण करना चाहिए। यक्षिणी का ध्यान करते समय उसका माता, भगिनी, पुत्री अथवा मित्र के रूप में चिन्तन करना चाहिए।

'विभ्रमा' यक्षिणी साधन

मन्त्रः—

'ॐ ह्रीं विभ्रमरूपे विभ्रमं कुरु कुरु ऐह्येहि भगवती स्वाहा।"

साधन विधि—श्मशान में बैठकर, मौन धारण कर, इस मन्त्र का तब तक जप करे, जब तक मनवांछित फल को देने वाली विभ्रमा यक्षिणी प्रकट न हो। साधक को चाहिए कि वह साधनकाल में एका-

ग्रमन से साधन करे तथा निश्चिन्त रहे। डरे नहीं। गूगल और घी का दशांश हवन करे। इस विधि से साधन करने पर 'विभ्रमा' यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को अभीप्सित फल प्रदान करती है।

'रतिप्रिया' यक्षिणी-साधन

मन्त्र:—

"ॐ ह्रीं रतिप्रिये स्वाहा।"

साधन विधि—भोजपत्र पर कुंकुम द्वारा एक ऐसी देवी का चित्र बनाए जो गौर वर्ण, आभूषणों से सुसज्जित एवं कमलपुष्पों से अलंकृत हो। श्वेत कागज पर भी यह चित्र बनाया जा सकता है।

तदुपरान्त उस चित्र का चमेली के फूलों से पूजन करे तथा उक्त मन्त्र का एक सहस्र जप करे। इस क्रिया को सात दिन तक, तीनों समय करना चाहिए। अर्थात् प्रतिदिन ३००० मंत्र का जप और तीन बार पूजनादि की क्रिया करनी चाहिये। साधन पूरा होने पर अर्द्ध-रात्रि के समय 'रतिप्रिया यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को पच्चीस स्वर्ण मुद्रा प्रदान करती है—ऐसा तंत्रशास्त्र का कथन है।

'सुरसुन्दरी' यक्षिणी-साधन

मन्त्र:—

"ॐ ह्रीं आगच्छ आगच्छ सुन्दरि स्वाहा।"

साधन विधि—दिन में तीन बार एकलिंग महादेव का पूजन करे तथा उक्त मंत्र को तीनों काल में तीन-तीन हजार जपे। एक मास तक इस प्रकार साधन करने से 'सुरसुन्दरी यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक के समीप आती है। जब यक्षिणी प्रकट हो, उस समय साधक को चाहिये कि वह उसे अर्घ्य देकर प्रणाम करे। जब यक्षिणी यह प्रश्न करे—"तूने मुझे कैसे स्मरण किया ?" उस समय साधक यह कहे—"हे कल्याणी ! मैं दरिद्रता से दग्ध हूँ। आप मेरे दोष को दूर करें।" यह सुनकर यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को दीर्घायु एवं धन प्रदान करती है।

'अनुरागिणी' यक्षिणी साधन

मन्त्रः—

"ॐ ह्रीं अनुरागिणि मैथुनप्रिये स्वाहा ।"

साधन विधि—इस मन्त्र को भोजपत्र के ऊपर कुंकुम से लिखकर, किसी भी प्रतिपदा से पूजन आरम्भ करे। त्रिकाल में तीन सहस्र मंत्र का जप करे। एक महीने तक इस जप के करने के बाद रात्रि में जप करे तो अर्द्ध रात्रि के समय यक्षिणी साधक पर प्रसन्न होकर, उसे एक सहस्र स्वर्ण-मुद्रा प्रदान करती है—ऐसा तन्त्र शास्त्रों का कथन है।

'जलवासिनी' यक्षिणी साधन

मन्त्रः—

"ॐ भगवन् समुद्रदेहि रत्नानिजलवासो ह्रीं नमस्तुते स्वाहा ।"

साधन विधि—समुद्र तट पर बैठकर, इस मन्त्र का एक लाख जप करने से 'जलवासिनी' यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को उत्तम रत्न प्रदान करती हैं, ऐसा तन्त्रशास्त्रों में लिखा है।

'वटवासिनी' यक्षिणी साधन

मन्त्रः—

"ॐ ह्रीं विटपवासिनि यक्षकुलप्रसूते वटयक्षिणि ऐह्येहि स्वाहा ।"

साधन विधि—त्रिराहे पर जहाँ वटवृक्ष हो, वहाँ पवित्र होकर, बैठकर, इस मन्त्र को तीन लाख जप करे तो 'वटवासिनी यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को वस्त्र, अलंकार और दिव्यांजन प्रदान करती है—ऐसा तंत्रशास्त्रों का कथन है।

'चण्डवेगा' यक्षिणी साधन

मन्त्रः—

(१) "ॐ नमश्चन्द्रा[illegible] स्वाहा ।"

(२) "ॐ [illegible] भगवते [illegible] चण्डवेगिनि स्वाहा ।"

साधन बिधि—वटवृक्ष के ऊपर चढ़कर मौन धारण् करके, उक्त दोनों में से किसी भी एक मंत्र को एक लाख बार जपे। तदुपरान्त सात बार मंत्र पढ़कर कांजी से अपने मुख का प्रक्षालन करे। रात्रि के समय में तीन महीने तक इस विथ्रि से जप करने पर 'चण्डवेगा यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को दिव्य रसायन प्रदान करती है। तन्त्रशास्त्र के अनुसार ये दोनों मंत्र भगवान् शंकर ने स्वयं कहे हैं।

'विशाला यक्षिणी' साधन

मंत्र:—

"ॐ ऐं विशाले क्रीं ह्रीं श्रीं क्लीं कीं स्वाहा।"

साधन विधि—चिरमिटी के वृक्ष के नीचे पवित्र होकर इस मंत्र का एक लाख जप करे तथा सौंफ के फूलों को घी में मिलाकर हवन करे तो 'विशाला यक्षिणी' प्रसन्न होकर सावक को दिव्य रसायन भेंट करती है।

'महाभया यक्षिणी' साधन

मन्त्र:—

"ॐ क्रीं महाभये क्लीं स्वाहा।"

साधन विधि—साधक मनुष्य की हड्डियों की माला बनाकर कण्ठ में, दोनों हाथों में तथा दोनों कानों में धारण करे, तत्पश्चात् निर्भय और पवित्र होकर एक लाख मंत्र का जप करे तो 'महाभया यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को एक रसायन देती है, जिसे खाने से सब प्रकार के रत्न हस्तगत होते हैं।

'चन्द्रिका यक्षिणी' साधन

मन्त्र:—

"ॐ ह्रीं चन्द्रिके हंस: क्रीं क्लीं स्वाहा।"

साधन विधि—इस मंत्र को शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से आरम्भ कर, पूर्णिमा तक ९ लाख की संख्या में तब तक जपे, जब तक कि

चन्द्रमा दीखता रहे। साधन पूरा होने पर 'चन्द्रिका यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को अमृत प्रदान करती है जिसे पीकर साधक चिरजीवी होता है।

'रक्तकम्बला यक्षिणी' साधन

मन्त्र:—

"ॐ ह्रीं रक्त कम्बले महादेवि मृतकमुत्थापय प्रतिमां चालय पर्वतान् कम्पय नीलयविलसत हुं हुं स्वाहा।"

साधन विधि—इस मंत्र का तीन महीने तक जप करने से 'रक्त-कम्बला यक्षिणी' प्रसन्न होकर मृतक को जीवित कर देती है तथा प्रतिमाओं को चलायमान कर देती है—ऐसा तंत्रशास्त्र का कथन है।

'विद्युज्जिह्वा यक्षिणी' साधन

मंत्र:—

"ॐ कारमुखे विद्युजिह्व ॐ हुं चेटके जय जय स्वाहा।"

साधन विधि—इस मंत्र को १०८ बार जप कर वटवृक्ष के नीचे थोड़े से मीठे भोजन का बलिदान करे। इस प्रकार एक मास तक निरन्तर साधन करने से 'विद्युज्जिह्वा यक्षिणी' स्वयं प्रकट होकर साधक के हाथ से भोजन ग्रहण करती है तथा उसे यह वर देती है कि मैं सदैव तेरे समीप बनी रहूँगी और साधक को भूत, भविष्यत् तथा वर्तमान तीनों काल की बात बता देती है।

'कर्णपिशाचिनी यक्षिणी' साधन

मन्त्र:—

"ॐ क्रीं समान शक्ति भगवति कर्ण पिशाचिनी चण्डरोषिणि वद वद स्वाहा।"

साधन विधि—पहले इस मंत्र का १०००० जप करे, फिर ग्वार-पाठे को दोनों हाथों पर मलकर शयन करे तो शयन के समय में 'कर्ण पिशाचिनी यक्षिणी' समस्त शुभाशुभ फल को कह जाती है।

'चामुण्डा यक्षिणी' साधन

मन्त्रः—

"ॐ क्रीं आगच्छ आगच्छ चामुण्डे श्रीं स्वाहा ।"

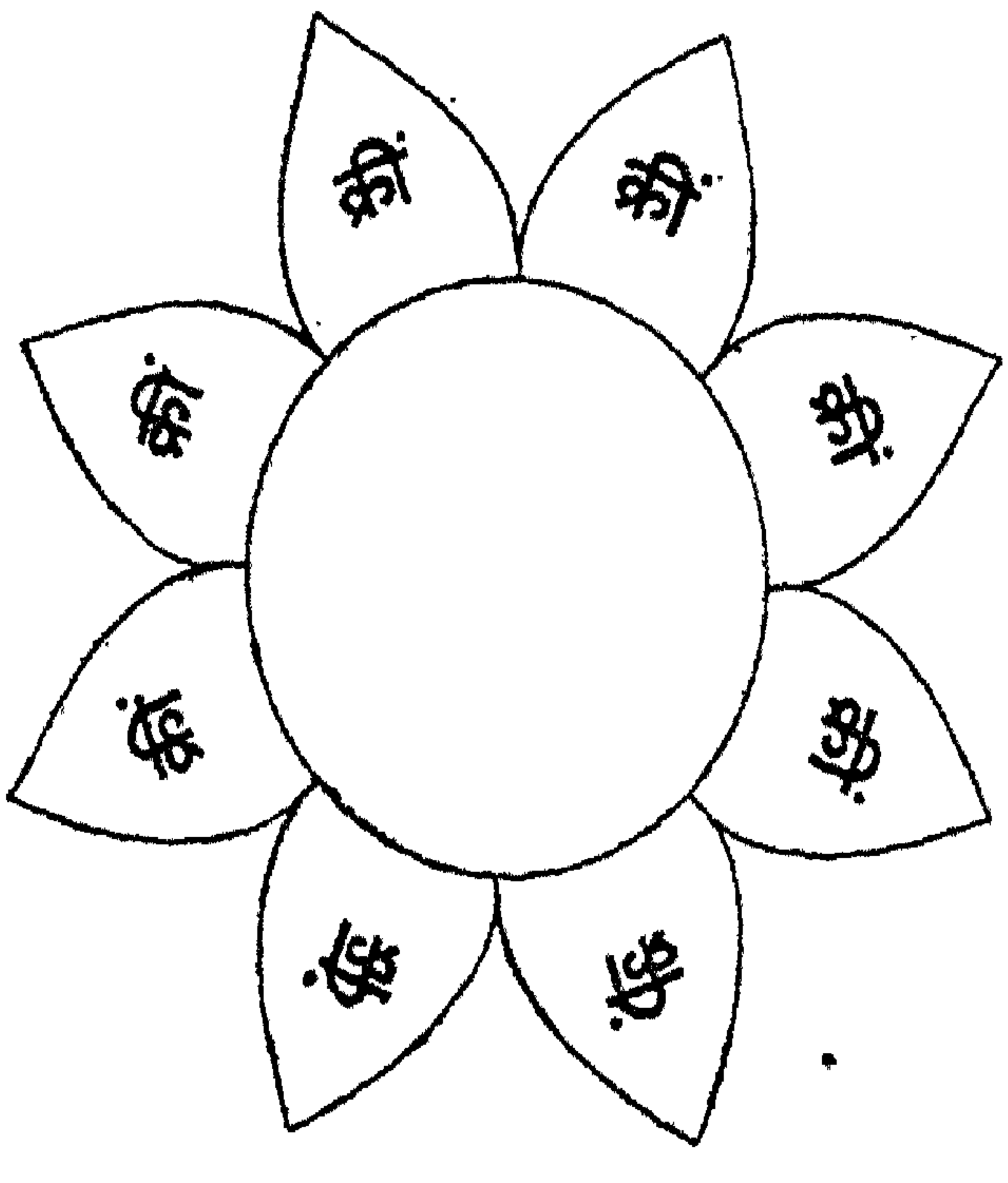
साधन विधि—मिट्टी और गोबर से पृथ्वी को लीपकर, उसपर कुशा बिछादे, फिर पंचोपचार एवं नैवेद्य से देवी का पूजन कर, रुद्राक्ष की माला से उक्त मंत्र का दस लाख जप करे तो 'चामुण्डा यक्षिणी' प्रसन्न होकर सोते समय अर्द्ध रात्रि में साधक को सभी शुभाशुभ फल स्वप्न में कह देती है।

'चिञ्चिपिशाची यक्षिणी' साधन

मन्त्रः—

"ॐ क्रीं चिञ्चिपिशाचिनि स्वाहा ।"

साधन विधि—नील वर्ण के भोजपत्र के ऊपर गोरोचन, केशर और दूध से अष्टदल कमल बनाए। फिर प्रत्येक दल पर माया बीज लिखकर मस्तक पर धारण करे। यन्त्र के स्वरूप को नीचे की ओर प्रदर्शित किया गया है। इसी के अनुसार बना ले।



मन्त्र को मस्तक पर धारण करने के उपरान्त मंत्र का यथाशक्ति संख्या में जप करे।

इस प्रकार सात दिन तक यत्नपूर्वक जप करने से 'चिञ्चिपिशाची यक्षिणी' साधक पर प्रसन्न होकर स्वप्न में भूत, भविष्यत् के सब वृत्तान्त को कह देती है।

'विचित्रा यक्षिणी' साधन

मन्त्रः—

"ॐ विचित्र विचित्र रूपे सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।"

साधन विधि—वटवृक्ष के नीचे, पवित्र होकर उक्त मंत्र का एक लाख बार जप करे तथा बंधूक के फूल, शहद, अन्न और दूध—इन सब को मिलाकर हवन करे, तो 'विचित्रा यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को मनवांछित फल प्रदान करती है।

'हंसी यक्षिणी' साधन

मन्त्रः—

"ॐ हंसि हंसि जने ह्रीं क्लीं स्वाहा।"

साधन विधि—नगर के भीतर प्रवेश करके, पवित्र होकर उक्त मंत्र का एक लाख जप करे तथा घी में मिले हुए कमल के पत्तों का दशांश घी में हवन करे तो 'हंसी यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को एक अंजन देती है, जिसे आँखों में लगाने से पृथ्वी में गढ़ा हुआ धन दिखाई देने लगता है। साधक को चाहिए कि जब उसे पृथ्वी में गढ़ा धन दिखाई दे तो उसे निर्भयता से ग्रहण करले।

'मदना यक्षिणी' साधन

मन्त्रः—

"ॐ मदने विडम्बिनी अनंगसगं सन्देहि देहि क्लीं क्रीं स्वाहा।"

साधन विधि—पवित्र होकर स्थिर चित्त से इस मंत्र का एक लाख जप करे तथा दूध और चमेली के फूलों की एक लाख आहुति दे

तो 'मदना यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को एक गुटिका देती है, जिसे मुँह में धारण करने से मनुष्य अदृश्य हो जाता है, अर्थात् और लोगों को दिखाई नहीं देता।

'कालकर्णिका यक्षिणी' साधन

मन्त्रः—

"ॐ ह्रीं क्लीं कालकर्णिके ठः ठः स्वाहा।"

साधन विधि—इस मंत्र का एक लाख जप करे तथा ढाक की लकड़ी, घी और शहद का हवन करे तो 'कालकर्णी यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को अनेक प्रकार के ऐश्वर्य देती है।

'लक्ष्मी यक्षिणी' साधन

मन्त्रः—

"ॐ ऐं लक्ष्मीं श्रीं कमलधारिणि कलहंसः स्वाहा।"

साधन विधि—इस मन्त्र का एक लाख जप करे, फिर अपने घर में बैठकर लाल कनेर के फूलों से दशांश हवन करे तो 'लक्ष्मी यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को दिव्य रसायन प्रदान करती है।

'शोभना यक्षिणी' साधन

मन्त्रः—

"ॐ अशोक पल्लवाकारकरतले शोभने श्रीं क्षः स्वाहा।"

साधन विधि—चतुर्दशी के दिन लाल माला एवं लाल वस्त्र धारण करके इस मन्त्र का एक लाख जप करे तो 'शोभना यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक जो अनेक प्रकार के भोग प्रदान करती है।

'नटी यक्षिणी' साधन

मन्त्रः—

"ॐ ह्रीं क्रीं नटि महानटि रूपवति स्वाहा।"

साधन विधि—अशोक वृक्ष के नीचे जाकर चन्दन का मण्डल लगाकर देवी का पूजन करके एक सहस्त्र बार धूप दे तथा एक हजार

वार उक्त मंत्र का जप करे। इस विधि से एक महीने तक साधन करे। साधन-काल में रात्रि में केवल एक बार भोजन करे तथा रात्रि में फिर मन्त्र जपकर अर्द्ध रात्रि में पूजन करे तो 'नटी यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को रस-अंजन तथा अन्य दिव्य भोग प्रदान करती है।

'पद्मिनी यक्षिणी'[2] साधन

मन्त्रः—

"ओ३म् क्रीं पद्मिनि स्वाहा।"

साधन विधि—चौक के भीतर चन्दन का हाथ भर चौका लगाकर 'पद्मिनी यक्षिणी' का पूजनकर गूगल की धूप देकर, एक सहस्त्र आहुति दे तथा एक मास तक रात्रि जागरण करके रात्रि भर यथा-शक्ति संख्या में उक्त मंत्र का जप करे। अवधि पूरी होने पर 'पद्मिनी यक्षिणी' साधक पर प्रसन्न होकर, अर्द्ध रात्रि के समय दिव्य भोग तथा धन प्रदान करती हैं।

विविध यन्त्रोक्त यक्षिणी साधन विधि

अब विभिन्न तन्त्र ग्रन्थों से उद्धृत कर, विभिन्न यक्षिणियों के साधन मंत्र और उनकी साधन-विधि का वर्णन किया जाता है। पाठ भेद के अनुसार जिन यक्षिणियों के साधन-मंत्र और साधन-विधि में जो अन्तर है, उसे अलग-अलग प्रकार से पृथक्-पृथक् दे दिया गया है। पाठ-भेद से इसमें कई मन्त्र बार-बार प्रयुक्त हुए हैं। साथ ही साधन सम्बन्धी देसी भाषा के मंत्रों को भी इसी प्रकरण में सन्निविष्ट कर दिया गया है।

साधक के लिये निर्देश

जिस किसी यक्षिणी का साधन करना हो, उसका माता, भगिनी (बहन), पुत्री अथवा मित्र, इनमें से किसी भी स्वरूप का ध्यान करे। मांस-रहित भोजन करे, पान खाना छोड़ दे, किसी का स्पर्श न करे

तथा निश्चिन्त होकर, एकान्त स्थान में मन्त्र का तब तक जप करे, जब तक सिद्धि प्राप्त न हो। जिन यक्षिणियों के साधन के लिए जिस स्थान पर बैठकर मंत्र जाप की विधि का वर्णन किया गया है उनका साधन उसी प्रकार से करना चाहिए।

'धनदा' यक्षिणी साधन

मंत्र—

"ॐ ऐं ह्रीं श्रीं धनं कुरु कुरु स्वाहा।"

साधन विधि—अश्वत्थ (पीपल) के वृक्ष पर बैठकर उक्त मंत्र का एकाग्रचित्त से १०००८ जप करने से 'धनदा यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को प्रदान धन करती है।

'पुत्रदा' यक्षिणी साधन

मंत्र—

"ॐ ह्रीं ह्री पुत्रं कुरु कुरु स्वाहा।"

साधन विधि—आम के वृक्ष पर बैठकर उक्त मन्त्र का एकाग्रचित्त से १०००० जक करने से 'पुत्रदा यक्षिणी' प्रसन्न होकर अपुत्री साधक को पुत्र प्रदान करती है।

'महालक्ष्मी' यक्षिणी साधन

मंत्र—

"ॐ ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः।"

साधन विधि—बरगद के वृक्ष पर बैठकर उक्त यंत्र का एकाग्रचित्त से १०००० जप करने ले 'महालक्ष्मी' यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को स्थिर लक्ष्मी प्रदान करती है।

जया यक्षिणी साधन

मंत्र—

"ॐ जय कुरु कुरु स्वाहा।"

साधन विधि—आक के पौधे की जड़ में बैठकर उक्त यंत्र का

एकाग्रचित्त से १०००० जप करने से जया यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को सभी कार्यों में विजय प्रदान करती है।

अशुभ क्षयकारिणी यक्षिणी साधन

मंत्र—

"ॐ क्लीं नमः।"

साधन विधि—धात्री (आँवला) वृक्ष की जड़ में बैठकर उक्त मंत्र का एकाग्रचित्त से १०००० जप करने से अशुभ क्षयकारिणी यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक के सभी अशुभों (अमंगलों) का विनाश करती है।

राज्यप्रदा यक्षिणी साधन

मंत्र—

"ॐ ऐं ह्लीं नमः।"

साधन विधि—तुलसी के पौधे की जड़ के समीप बैठकर उक्त यंत्र का एकाग्रचित्त से १००० वार जप करने से राज्यप्रदा यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को अकस्मात् ही राज्य की प्राप्ति कराती है।

राज्यदाता यक्षिणी साधन

मंत्र—

"ॐ ह्लीं नमः।"

साधन-विधि—अंकोल वृक्ष पर बैठकर उक्त मंत्र का एकाग्रचित्त से १०००० जप करने से राज्यदाता यक्षिणी साधक पर प्रसन्न होकर, उसे राजाधिराज बनाती है।

सर्व कार्यसिद्धिदा यक्षिणी साधन

मंत्र—

"ॐ वाङ्मयं नमः ऐं।"

साधन विधि—कुश की जड़ में बैठकर उक्त मंत्र का एकाग्रचित्त से १०००० जप करने से सर्व कार्य सिद्धिदा यक्षिणी साधक पर प्रसन्न होकर उसके सब कार्यों को सिद्ध करती है।

वाचासिद्धि यक्षिणी साधन

मंत्र—

"ॐ ह्रीं श्रीं भारत्यै नमः।"

साधन विधि—अपामार्ग पौधे पर बैठकर उक्त मंत्र का एकाग्रचित्त से १०००० जप करने से वाचासिद्धि यक्षिणी प्रसन्न होकर, साधक की वाचा सिद्ध करती है, अर्थात् साधक जो कहता है, वही होता है।

सर्व विद्या यक्षिणी साधन

मंत्र—

"ॐ ह्रीं श्रीं शारदायै नमः।"

साधन विधि—औदुम्बर के वृक्ष पर बैठकर उक्त मंत्र का एकाग्रमन से १०००० जप करने से सर्व विद्या यक्षिणी साधक पर प्रसन्न होकर, उसे सभी चौदह विद्याओं की सिद्धि प्रदान करती है।

सन्तोष यक्षिणी साधन

मंत्र—

"ॐ सरस्वत्यै नमः।"

साधन विधि—श्वेत घुंघची की जड़ पर बैठकर उक्त मंत्र का एकाग्रमन से १०००० जप करने से सन्तोष नामक यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को वांछित फल प्रदान करती है।

विद्यादाता यक्षिणी साधन

मंत्र—

ॐ नमो जगन्मात्रे नमः।

साधन विधि—निर्गुण्डी के पौधे पर बैठकर उक्त मन्त्र का एकाग्रचित्त से १००० जप करने पर विद्यादाता यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को विद्या प्रदान करती है।

सुरसुन्दरी यक्षिणी साधन

मंत्र—

"ॐ ह्रीं आगच्छ आगच्छ सुरसुन्दरी स्वाहा।"

साधन विधि—त्रिकाल में एकलिंग महादेव की विधिपूर्वक पूजा कर, धूप देकर, उक्त मन्त्र का प्रतिदिन ३००३ की संख्या में जप करे तथा सुरसुन्दरी यक्षिणी को प्रणाम कर अपनी अभिलाषा को प्रकट करता रहे। इस भाँति नियमपूर्वक एक मास तक साधन करने से सुरसुन्दरी यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को दर्शन देती है। साधक को चाहिए कि यक्षिणी दर्शन के समय उसे अर्घ्य देकर अपनी मनोभिलाषा को प्रकट करे। फलस्वरूप सुरसुन्दरी यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक की धन, आयु एवं चिरजीवन सम्बन्धी इच्छाओं को पूर्ण करती है।

अनुरागिणी यक्षिणी साधन

मंत्र—

"ॐ अनुरागिणि मैथुनप्रिये स्वाहा।"

साधन विधि—किसी भी प्रतिपदा से इस साधन को आरम्भ करना चाहिये। सर्व प्रथम कुंकुम से भोजपत्र के ऊपर उक्त यन्त्र को लिखे फिर तीनों सन्ध्याकाल में उक्त मंत्र का ३००० जप करे। इस प्रकार जब एक महीना पूरा हो जाय, तब आधी रात के समय पूजन करके उक्त मंत्र का ३००० जप को तो अनुरागिणी यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को दर्शन देती है और उससे उसकी मनोभिलाषा के सम्बन्ध में प्रश्न करती है। उस समय साधक को चाहिए कि वह यक्षिणी के समक्ष अपनी मनोभिलाषा को प्रकट करे। यक्षिणी उसकी पूर्ति कर देती है तथा साधक को प्रतिदिन सहस्र स्वर्ण मुद्राएँ प्रदान करती है। ऐसा तंत्रशास्त्रों में लिखा है।

अमृता यक्षिणी साधन

मंक्ष—

"ॐ ह्रीं चण्डिके हंसः ह्रीं क्लीं स्वाहा।"

साधन विधि—इस साधन को किसी भी शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से आरम्भ कर पूर्णिमा तक—जब तक चन्द्रमा दिखाई दे, करना

चाहिए। इस सम्पूर्ण अवधि में एक लाख मंत्र का जप करना चाहिए। इसके फलस्वरूप अमृता नामक यक्षिणी साधक को अमृत देकर चिरजीवी बना देती है—ऐसा तंत्र शास्त्रों का कथन है।

कर्णपिशाचिनी यक्षिणी साधन

मंत्र—

"ॐ ह्रीं चण्डवेगिनी वद वद स्वाहा।"

साधन विधि—सर्व प्रथम इस मंत्र का १०००० जप करना चाहिए। तदुपरान्त किसी कृष्ण वर्ण (काले रंग) की क्वारी कन्या को अभिमंत्रित कर उसका पूजन करे और उसके हाथों, पाँवों में कुंकुम लगाये। अलकों में मल्लिका-पुष्प तथा कनेर के पुष्प लगाकर लाल रंग के डोरे से वेष्टित करे। इस साधन के द्वारा कर्ण-पिशाचिनी यक्षिणी साधक के वशीभूत होकर उसे तीनों लोक और तीनों काल के शुभाशुभ का ज्ञान कराती रहती है। साधक को चाहिये कि वह मंत्र सिद्ध हो जाने पर अभिमंत्रित लाल सूत्र, मल्लिका पुष्प तथा लाल कनेर के पुष्प को धारण किये रहे।

भोग यक्षिणी साधन

मंत्र—

"ॐ नमो आगच्छ सुरसुन्दरी स्वाहा।"

साधन विधि—स्नान करके शुद्ध वस्त्र धारण कर उक्त मंत्र का ६०००० जप करे तथा पंच खाद्य (मेवा) का दशांश हवन कर, उसका दशांश तर्पण करे। पुरश्चरण की पूर्ति तक भूमि में शयन करे। वाणी को रोके और लघु दूध-भात का भोजन करे तो भोग यक्षिणी सिद्ध होकर साधक को प्रतिदिन स्वर्णमुद्रा देती है।

भोग यक्षिणी साधन २

मंत्र—

"ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः।"

साधन विधि—इस मंत्र का २०००० जप करके नैवेद्य, गरम दूध और खीर का भोजन करे तो भोग यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को विविध प्रकार के भोग प्रदान करती है और भूत-प्रेत पिशाचादि साधक की सेवा करते रहते हैं।

धनदा यक्षिणी साधन

मंत्र—

"ह्रां ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः।"

साधन विधि—इस मंत्र का १२५००० जप करने से धनदा यक्षिणी साधक पर प्रसन्न होकर उसे धन प्रदान करती है।

श्मशान यक्षिणी साधन (१)

मंत्र—

"ॐ क्लीं भगवतोभ्यो नमः।"

साधन विधि—इस मंत्र का ५०००० जप करे तथा मद्य के ३ रीते घड़े रख छोड़े, उनमें भोजन करे तो श्मशान यक्षिणी सिद्ध होकर साधक के कान में तीनों लोक की बात कहती है तथा उसे फल-फूल बीज लाकर देती है।

श्मशान यक्षिणी साधन (२)

मंत्र—

"ॐ ह्रूं ह्रीं स्फूं श्मशाने वासिनी श्मशाने स्वाहा।"

साधन विधि—श्मशान में नंगा होकर बैठे तथा बाल खोलकर ५०००० मंत्र का जप करे तो श्मशान यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को ऐसा वस्त्र देती है, जिसे धारण करने से साधक दूसरों की दृष्टि में अदृश्य हो जाता है।

वशीकरण यक्षिणी साधन

मंत्र—

"ॐ द्वार देवतायै ह्रीं स्वाहा।"

साधन विधि—नदी के तट पर, पवित्र होकर बैठे तथा इस मंत्र का २६००० जप करके दशांश गूगल तथा घी का हवन करे तो वशीकरण यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को इच्छित वर देती है। इस हवन की भस्म जिस स्त्री के शरीर से लगा दी जाय, वह वशीभूत हो जाती है।

बन्ध मोचन यक्षिणी साधन

मंत्र—

"ॐ नमो हटेले कुमारी स्वाहा।"

साधन विधि—इस मंत्र का सात दिन तक प्रतिदिन २००० जप करे तथा दशांश दूध और घृत का हवन करके एक क्वारी कन्या को पंच खाद्य वस्तुओं से भोजन कराये तो देवी प्रसन्न होकर साधक को बन्धन मुक्त कर देती है।

अदृष्टकरण यक्षिणी साधन

मंत्र—

"ॐ कनकवती करवीर के स्वाहा।"

साधन विधि—कृष्णपक्ष की अष्टमी से आरम्भ करके अमावस्या तक प्रतिदिन इस मंत्र का तीन सहस्र जप करे तथा दशांश कड़वे नीम की समिधाओं पर घृत से हवन करे तो अदृष्टकरण यक्षिणी प्रसन्न होती है। इस हवन की भस्म का तिलक मस्तक पर लगाने से अदृश्य करण होता है अर्थात् साधक दूसरों की दृष्टि में अदृश्य हो जाता है।

विद्या यक्षिणी साधन

मंत्र—

"ॐ ह्रीं वेदमातृभ्यः स्वाहा।"

साधन विधि—इस मन्त्र का २५००० जप करके दशांश पंच मेवा

का हवन करने से विद्या यक्षिणी सिद्ध होकर साधक को विद्या प्रदान करती है।

अष्टमहासिद्धि यक्षिणी साधन

मंत्र—

",ॐ क्लीं पद्मावती स्वाहा।"

साधन विधि—इस मंत्र का १२००००० जप करके पंच खाद्य (मेवा) का दशांश हवन करने से अष्ट महासिद्धि यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को अष्टमहासिद्धियाँ प्रदान करती है।

औषधि उत्पादन यक्षिणी मन्त्र

मंत्र—

"ॐ ह्रीं सर्वते सर्वते श्रीं क्लीं सर्वौषिधि प्राणदायिनी नैर्ऋत्यै नमो नमः स्वाहा।"

साधन विधि—इस मन्त्र का १०८ बार जप करके किसी औषधि को उखाड़ा जाय तो यक्षिणी की कृपा से वह रोगोन्मूलन में विशेष लाभप्रद सिद्ध होती है।

मार्ग-गमन विघ्ननाशक यक्षिणी मन्त्र

मन्त्र—

"ॐ नमो सिद्ध विनायकाय सर्वकार्यकर्त्रे सर्वविघ्नप्रशमनाय सर्वराजवश्यकरणाय सर्वजनसर्वस्त्रीपुरुषाकर्षणाय श्रीं ॐ स्वाहा।"

साधन विधि—इस मन्त्र का प्रतिदिन १०८ बार जप करके जिस कार्य को किया जाता है, वह सिद्ध होता है तथा किसी गाँव को जाते समय यदि इस मन्त्र का १०८ बार जप करके प्रस्थान किया जाय तो, यक्षिणी की कृपा से मार्ग के सब विघ्न दूर होते हैं तथा सब कार्य सिद्ध होते हैं।

भोग यक्षिणी साधन

मन्त्र—

"ॐ जगत्त्रयमातृके पद्मनिधे स्वाहा।"

साधन विधि—इस मन्त्र को २५०० की संख्या में जप कर पंचखाद्य का हवन करे तो 'भोगयक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को विविध प्रकार के अन्न-भोग प्रदान करती है।

सिद्धि यक्षिणी साधन

मन्त्र—

"ॐ नानाचरण पद्मावती स्वाहा।"

साधन विधि—इस मन्त्र का १०००००० जप करने तथा दशांश घी, गूगल और सेवती के फूलों का हवन करने से 'सिद्धि यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को प्रतिदिन अष्टभोग प्रदान करती है। मन्त्र जाप के समय कलश को चावल, उर्द तथा भोजन की वस्तुओं से भरकर रख लेना चाहिए तथा स्वयं मन्त्र का जप करना चाहिए। जब कलश रीता हो जाय, तब समझना चाहिए कि अब देवी प्रसन्न हुई है। उसी समय यन्त्र की सिद्धि भी समझ लेनी चाहिए।

वशीकरण यक्षिणी साधन

मन्त्र—

"ॐ नमो सर्वस्त्रीसर्वपुरुषवश्यकारिणी श्रीं ह्रीं स्वाहा।"

साधन विधि—यह मन्त्र ७२००० जपने तथा नारियल का दशांश हवन करने से सिद्ध होता है। इसके प्रभाव से 'वशीकरण यक्षिणी' प्रसन्न होकर, साधक जिस व्यक्ति को वशीभूत करने की इच्छा से से जप करता है, उसे वशीभूत कर देती है।

मातंगेश्वरी यक्षिणी साधन

मन्त्र—

"ॐ ह्रीं ॐ क्लीं नमो मातंगेश्वरी नमः।"

साधन विधि—इस मन्त्र का श्रेष्ठ मुहूर्त में जप करना आरम्भ करे। १००००० मन्त्र का जप करने तथा राल का दशांश हवन करने

से 'मातंगेश्वरी' यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को इच्छित अन्न प्रदान करती है।

'विजयदा यक्षिणी' साधन

मन्त्र—

"ॐ जीव पातालमर्दने हुं स्वाहा।"

साधन विधि—इस मन्त्र का ५२००० जप करने तथा सेवती के फूल का दशांश हवन करने से 'विजयदा यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को युद्ध में विजय प्रदान करती है। उसे अद्भुत बल प्राप्त होता है तथा शरीर में घाव नहीं लगता। यदि इस मन्त्र का यात्रा करते समय जप करता रहे तो बहुत चलने पर भी थकावट नहीं आती है।

सर्वसिद्धिप्रदाता यक्षिणी साधन

मन्त्र—

"ॐ श्रीकाक कमलवर्द्धने सर्वकार्य सर्वार्थान् देहि देहि सर्वकार्यं कुरु परिचर्य्यं सर्वसिद्धि पादुकायां हं क्षं श्रीं द्वादशान्नदायिने सर्वसिद्धि-प्रदाय स्वाहा।"

साधन विधि—इस मन्त्र का १००००० की संख्या में जप करके गेहूँ-चने का दशांश हवन करने से 'सर्वसिद्धि प्रदाता यक्षिणी' वीरू-चेटक की प्रसन्नता होती है और वह साधक को सहस्र गौ, स्त्री तथा अनेक वस्तुएँ लाकर देती है। पृथ्वी के समस्त फल-फूल, समस्त द्वीपों के अन्न तथा वस्त्र एवं प्रार्थना करने पर अन्य अनेक प्रकार की वस्तुओं को प्रदान करती है। बुलाने पर शीघ्र ही आ जाती है तथा जो वस्तु माँगी जाय, उसे लाकर देती है।

रक्तचामुण्डा यक्षिणी साधन

"ॐ सिद्धि रक्त चामुण्डे घुरंघुरं अमुकीवशमानय स्वाहा।"

साधन विधि—इस रक्तचामुण्डा यक्षिणी मन्त्र से अभिमंत्रित गुड़हल के सहस्र फूलों से हवन करने पर राजा वशीभूत होता है।

कनेर के सहस्त्र फूलों से हवन करने पर सब लोग वशीभूत होते हैं। कपूर के साथ सेवती के सहस्त्र फूलों का हवन करने से द्रव्य-प्राप्ति होती है। जुही के सहस्त्र फूलों का हवन करने से पुत्र-प्राप्ति होती है। स्त्री का नाम लेकर हवन करने से स्त्री की प्राप्ति होती है। सेमल के सहस्त्र फूलों का हवन करने से शत्रु की मृत्यु तथा उच्चाटन होता है। निवारी के सहस्त्र फूलों का हवन करने से शत्रु का नाश होता है। सहस्त्र कमलों से हवन करने पर अकाल में बादल होकर वर्षा होती है। 'अमुक रोगी के रोग का नाश हो' इस प्रकार कहते हुए सहस्त्र कचनार के फूलों से हवन करने पर रोगी का रोग नष्ट होता है। अलसी के सहस्त्र फूलों से हवन करने पर सबकी वृद्धि होती है तथा मूँगरा के सहस्त्र फूलों से हवन करने पर सुभिक्ष होता है और वर्षा होती है। यह 'रक्तचामुण्डा यक्षिणी मन्त्र' अनेक प्रकार की अभिलाषाओं को पूर्ण करने वाला है। मन्त्र में जिस स्थान पर 'अमुक' शब्द आया है, वहाँ साध्य व्यक्ति के नाम का उच्चारण करना चाहिए।

पिंगला यक्षिणी साधन

मन्त्र—

ॐ नमो पिंगले चपले नानापशुमोहिनी स्वाहा।

साधन विधि—मध्याह्न काल के उपरान्त इस मन्त्र का सायंकाल में ५००००० जप करे एवं बाल मेष (मेढ़ का बच्चा) तथा कुक्कुट (मुर्गे) के गुह्यस्थल का दशांश हवन करे। करंज, शल्लकी, कंकोल और पाटल, इन सब वस्तुओं को रखकर देवी की प्रार्थना करे। मन्त्र-जाप की संख्या पूर्ण हो जाने पर 'पिंगला यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक के पास आती है। उस समय निर्भय होकर सम्पूर्ण रात्रि उसके साथ समागम करे। स्थित न रहे तो वह प्रसन्न होकर साधक को इच्छित वस्तुएँ प्रदान करती है।

महामाया यक्षिणी साधन

मन्त्र—

"ॐ नमो महामाया महाभोगदायिनी हुं स्वाहा।"

साधन विधि—इस मन्त्र का ५००० जप करके स्वयं मिष्टान्न का भोजन करे तथा स्त्रियों का पूजन कर पंचखाद्य (मेवा), घी और मुनक्का का दशांश हवन करे तो 'महायक्षिणी' साधक पर प्रसन्न होती हैं। यक्षिणी की कृपा से अपनी स्त्री तथा अन्य सब स्त्रियाँ, जिनकी अभिलाषा की जाय, साधक के वशीभूत होती हैं और साधक राज-मान्य, वशीभूत करने वाला तथा सुखी होता है। राजा उसे प्रतिदिन पाँच मुद्रा तथा अलंकार आदि भेंट करता है।

उच्छिष्ट यक्षिणी साधन

मन्त्र—

"ॐ जगत्त्रय मातृके पद्मनिभे स्वाहा"

साधन विधि—स्नानादि से पवित्र होकर अथवा अपवित्र अवस्था में, बैठे हुए अथवा लेटे हुए, चलते समय अथवा रुकते समय, उच्छिष्ट अवस्था में इस यन्त्र का बीस सहस्र जप करे तो 'उच्छिष्ट यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को अन्न-वस्त्र से परिपूर्ण करती है।

प्रेतहर यक्षिणी साधन

मन्त्र—

"ॐ ह्रां ह्रीं श्रीं क्लीं नमः।"

साधन विधि—पीपल के वृक्ष के नीचे बैठकर इस मन्त्र का ३२००० जप करे तथा घी, दूध और नैवेद्य देवी की भेंट करे तो 'प्रेत-हर यक्षिणी' प्रसन्न होती है तथा साधक को भूत, प्रेत, पिशाच, यक्षों के ऊपर आधिपत्य प्राप्त होता है और वे उसकी आज्ञा का पालन करते

'क्षीर यक्षिणी' साधन

मन्त्र—

ॐ नमो ज्वालामाणिक्यभूषणायै नमः।

साधन विधि—अपने घर के द्वार की वेदिका में बैठकर रात्रि के समय इस मन्त्र का १५०० जप करे तथा घी, दूध सहित प्राथना करे तो 'क्षीरयक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को केले के फल प्रदान करती है।

'अन्नपूर्णा यक्षिणी' साधन

मन्त्र—

ॐ नमो मातंगेश्वर्यै नमः।

साधन विधि—श्मशान में बैठकर वहाँ की धूलि का सर्वांग में लेप कर इस मंत्र का ३५००० सहस्त्र जप करने तथा सुगन्धित द्रव्य का दान करने से 'अन्नपूर्णा यक्षिणी' प्रसन्न होकर, साधक को दस सहस्त्र व्यक्तियों के पोषण योग्य अन्न प्रतिदिन प्रदान करती है।

'मातंगी यक्षिणी' साधन

ॐ ह्रीं क्लीं मातंगेश्वर्यै नमः।

साधन विधि—अपने घर में दीपक के सामने बैठ कर उक्त मन्त्र का १००००० जप करके दशांश राल का हवन करने से 'मातंगी यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को स्त्री, राजलक्ष्मी, महिषी एवं अश्वादि वस्तुएँ प्रदान करती है।

'श्मशान यक्षिणी साधन

मन्त्र—

ॐ क्रीं भगवतीभ्यो नमः।

साधन विधि—अपने सामने स्वनिर्मित तीन पात्र रख कर १००००० मंत्र का जप करे तो 'श्मशान यक्षिणी' प्रसन्न हो कर साधक से तीनों लोकों की बात कहती और पर्ण-पुष्प लाकर देती है।

'माहेन्द्री यक्षिणी' साधन

मन्त्र—

माहेन्द्री दुलुकुलुहंसः स्वाहा ।

साधन विधि—उपवास करके, इन्द्रधनुष के उदयकाल से आरम्भ कर, एक निर्गुण्डी के वृक्ष के नीचे बैठकर इस मन्त्र का १००००० जप करके दशांश हवन करने से 'माहेन्द्री यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को पाताल से सिद्धि लाकर देती है तथा भेंट-भोग लगाती है ।

'शंखिनी यक्षिणी' साधन

मन्त्र—

ॐ शंखधारिणी शंखाभरणे ह्रां ह्रीं क्लीं क्लीं श्रीं स्वाहा ।

साधन विधि—सूर्योदय के समय से आरम्भ करके वटवृक्ष के नीचे बैठकर इस मन्त्र का १०००० जप करके तथा मल्लिका के फूलों से घृत-सहित दशांश हवन करने से 'शंखिनी यक्षिणी' साधक पर प्रसन्न होकर, उसे प्रतिदिन पाँच स्वर्ण मुद्रा एवं प्रार्थित वस्तुएँ प्रदान करती है ।

'चन्द्रिका यक्षिणी' साधन

मन्त्र—

ॐ ह्रीं चन्द्रिके हंसः स्वाहा ।

साधन विधि—शुक्ल पक्ष की चाँदनी में इस मन्त्र का १००००० जप करने से 'चन्द्रिका यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को अमृत प्रदान करती है, जिसे पीकर वह चिरजीवी हो जाता है ।

'मदनमेखला यक्षिणी' साधन

मन्त्र—

ॐ ह्रूं मदनमेखले नमः स्वाहा ।

साधन विधि—मधूक वृक्ष के नीचे १४ दिन इस मंत्र का १००००० जप करने से 'मदनमेखला यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को दिव्य-अंजन प्रदान करती है।

विकला यक्षिणी साधन

मन्त्र—

"ॐ विकले ऐं ह्रीं श्रीं क्लैं स्वाहा।"

साधन विधि—घर में बैठकर तीन महीने तक इस मन्त्र का १००००० जप करके कनेर के फूलों का घी सहित दशांश हवन करने अथवा सुरा-धान्य का दशांश हवन करने से 'विकला यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को इच्छित वस्तु प्रदान करती है।

लक्ष्मी यक्षिणी साधन

मन्त्र—

"ॐ ऐं लक्ष्मी वं श्रीकमलधारिणी हंसः स्वाहा।"

साधन विधि—इस मन्त्र का घर में बैठकर १००००० जप करने तथा कनेर पुष्प और घृत का दशांश हवन करने से 'लक्ष्मी यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को रसायन भेंट करती है।

मानिनी यक्षिणी साधन

मन्त्र—

"ॐ ऐं मानिनी ह्रीं एह्येहि सुन्दरी हंस हंसमिह संगमह स्वाहा।"

साधन विधि—इस मन्त्र को चौराहे पर बैठकर १२५००० जपने तथा लाल कमलों का घी के साथ दशांश हवन करने से 'मानिनी यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को दिव्य खड्ग प्रदान करती है, जिसके द्वारा वह राज्य को प्राप्त कर लेता है।

'शतपत्रिणी यक्षिणी' साधन

मन्त्र—

ॐ ह्रां शतपत्रिके ह्रीं ह्रीं श्रीं स्वाहा।

साधन विधि—कमल-वन के समीप इस मन्त्र का १००००० जप करे अथवा सेवती के वन में एक लाख जप करके पुष्पों और घी का दशांश हवन करे तो 'शतपत्रिका यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को दिव्य-रसायन प्रदान करती है।

'सुलोचना यक्षिणी' साधन

मन्त्र—

ॐ क्लैं सुलोचना द्विदेवी स्वाहा।

साधन विधि—नदी तट पर बैठकर इस मन्त्र का ३००००० जप करे तो 'सुलोचना यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को दो पादुकाएँ प्रदान करती है, जिन पर चढ़कर साधक पृथ्वी में मन की गति के समान गमन कर सकता है।

विलासिनी यक्षिणी साधन

मन्त्र—

ॐ वरुणाक्ष विलासिनी आगच्छागच्छ ह्रीं प्रिय मे भव प्रिया मे भव क्लैं स्वाहा।

साधन विधि—नदी तट पर बैठकर इस मन्त्र का ५००००० जप करने तथा घृत-गूगल का दशांश हवन करने से 'विलासिनी यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को सौभाग्य प्रदान करती है।

'नटी यक्षिणी' साधन

मन्त्र—

ॐ ह्रीं नटि महानटि स्वरूपवती स्वाहा।

साधन विधि—पूर्णिमा के दिन अशोक वृक्ष के नीचे जाकर, चन्दन से सुन्दर मण्डल बनाकर देवी की पूजा करके धूप दे तथा उसी दिन से आरम्भ करके, एक महीने तक प्रतिदिन १००० मन्त्र का जप करे। रात्रि को भोजन करके, पूजा करने के बाद अर्द्धरात्रि में जप करना चाहिए। इस साधन से 'नटी यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को निधि रस, अंजन तथा दिव्य योग प्रदान करती है। इस मन्त्र के जप के लिए चन्दन की माला बनानी चाहिए।

'कामेश्वरी यक्षिणी' साधन

मन्त्र—

ॐ ह्रीं आगच्छागच्छ कामेश्वरी स्वाहा।

साधन विधि—पवित्र होकर, एकासन पर बैठ, तीनों सन्ध्याओं में इस मन्त्र का एक-एक सहस्र जप करे तथा रात्रि के समय पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि से देवी का पूजन कर मन्त्र का जप करे और प्रसन्न रहे तो 'कामेश्वरी यक्षिणी' प्रसन्न होकर आधी रात के समय प्रकट होकर साधक को दिव्य रस-रसायन देती है।

'स्वर्णरेखा यक्षिणी' साधन

मन्त्र—

ॐ वर्कंरशाल्मले सुवर्णरेखे स्वाहा ॐ ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लः स्वाहा।

साधन विधि—एकलिंग महादेव का षडंग विधिपूर्वक पूजन करके, कृष्णपक्ष की पूर्व संध्या से आरम्भ करके एक मास तक इस मन्त्र का प्रतिदिन १००० जप करे तथा अन्त में रात्रि में भोजन करे तो 'स्वर्णरेखा यक्षिणी' प्रसन्न होकर अर्द्धरात्रि के समय साधक को अलंकारादि प्रदान करती है। छैः मास तक इस क्रिया को करते रहने से साधक के शरीर को दिव्य बना देती है। 'ह्लां' इत्यादि से हृदयादि न्यास करना चाहिए।

'सुरसुन्दरी यक्षिणी' साधन

मन्त्र—

ॐ ह्रीं आगच्छ आगच्छ सुर सुन्दरी स्वाहा ।

साधन विधि—एकलिंग महादेव की मूर्ति के समक्ष मिष्टान्न, गूगल, घृत का हवन करे तथा तीनों संध्याओं में प्रतिदिन ३००० मन्त्र का जप करे। इस प्रकार एक मास तक निरन्तर साधन करने से 'सुरसुन्दरी यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक के समक्ष प्रकट होती है। यक्षिणी जब प्रकट हो, उस समय साधक को चाहिए कि वह अर्घ्य देकर उसे प्रणाम कहे। जब यक्षिणी कहे—'क्या इच्छा है ?' उस समय उसे उत्तर दे—'हे देवी ! मैं दारिद्रय से व्याकुल हूँ, अतः आप मेरे दारिद्रय का शीघ्र नाश करें।' तब यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को निधि एवं चिर-जीवन प्रदान करती है।

'प्रमोदा यक्षिणी' साधन

मन्त्र—

"ॐ ह्रीं प्रमोदाय स्वाहा ।"

साधन विधि—रात्रि को उठकर इस मन्त्र का प्रतिदिन १००० जप करे। इस प्रकार एक मास तक साधन करने से 'प्रमोदा यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को निधि प्रदान करती है।

'अनुरागिणी यक्षिणी' साधन

मन्त्र—

ॐ ह्रीं अनुरागिणी मैथुनप्रिये स्वाहा ।

साधन विधि—प्रथम भोजपत्र पर कुंकुम से देवी की मूर्ति लिखे। फिर प्रतिपदा से आरम्भ करके पूर्णिमा तक तीनों काल में पूजन करके प्रतिदिन ३००० का जप करे तो 'अनुरागिणी यक्षिणी' प्रसन्न होकर अर्द्धरात्रि में साधक को दर्शन तथा प्रतिदिन एक सहस्र स्वर्ण-मुद्रा प्रदान करती है।

'पद्मकेशी यक्षिणी' साधन

मन्त्र—

ॐ ह्रीं नखकेशी कनकवती स्वाहा।

साधन विधि— मन्त्री गन्धर्व के घर जाकर २१ दिन तक देवी की पूजा करके प्रतिदिन १००० मन्त्र का जप करे। रात्रि में भोजन करे तथा एकाग्रचित्त से रहे तो 'पद्मकेशी यक्षिणी' प्रसन्न होकर, अर्द्धरात्रि के समय साधक को दर्शन देती है और उसकी कामना पूर्ण करती है।

'महायक्षणी' साधन

मन्त्र—

ॐ ह्रीं महायक्षिणि भामिनि प्रिये स्वाहा।

साधन विधि—रवि अथवा चन्द्रवार से आरम्भ करके प्रथम तीन दिन करके माला, गंध और स्नानादि उपचारों से देवी की पूजा करे। तदुपरान्त ग्रहण लगने पर मन्त्र जपना आरम्भ करे और ग्रहण के मोक्ष तक मन्त्र का जप करता रहे तो 'महायक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को इच्छित वस्तु प्रदान करती है।

'पद्मिनी यक्षिणी' साधन

मन्त्र—

ॐ ह्रीं पद्मिनि स्वाहा।

साधन विधि—स्नानोपरान्त पूजा की सामग्री एकत्र कर, चन्दन सुगन्ध से एक हाथ प्रमाण मण्डल का निर्माण करे। उसमें 'पद्मिनी यक्षिणी' की पूजा कर, गूगल की धूप दे तथा प्रतिदिन १००० मन्त्र का जप करे। एक मास तक इस प्रकार साधन करने से 'पद्मिनी यक्षिणी' प्रसन्न होकर अर्द्ध रात्रि के समय साधक को निधि एवं दिव्य योग प्रदान करती है।

'कनकवती यक्षिणी' साधन

मन्त्र—

ॐ ह्रीं आगच्छ आगच्छ कनकवती स्वाहा ।

साधन विधि—वटवृक्ष अथवा बेल के वृक्ष के नीचे चन्दन से अच्छा मण्डल बनाकर, नैवेद्य की कल्पना कर, 'कनकवती यक्षिणी' का पूजन करे तथा शशा-मांस की आहुति दे। सात दिन तक इस विधि से साधन करने पर 'कनकवती यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को उत्तम अंजन प्रदान करती है । उसे आँखों में लगा कर साधक पृथ्वी के भीतर गढ़े हुए निधि (खजाने) का दर्शन कर सकता है तथा उसे भी कर सकता है ।

'रतिप्रिया यक्षिणी' साधन

मन्त्र—

ॐ ह्रीं रतिप्रिये स्वाहा ।

साधन विधि—शंखलिप्त पट्टवस्त्र के ऊपर गौरवर्ण देवी की एक ऐसी मूर्ति बनाये, जो हाथ में कमल तथा समस्त अलंकारों को धारण किये हुए हो । फिर जाती पुष्प और धूप से उसका पूजन करे तथा एक सप्ताह तक प्रतिदिन एक सहस्र मन्त्र का जप करता रहे । इस प्रकार ये साधन करने पर 'रतिप्रिया यक्षिणी' प्रसन्न होकर अर्द्ध-रात्रि के समय साधन को दर्शन देती है तथा प्रतिदिन २५ स्वर्ण-मुद्रा प्रदान करती है । उन स्वर्णमुद्राओं को प्रतिदिन ही खर्च कर देना चाहिए । अपने पास बचाकर नहीं रखना चाहिए—ऐसा तंत्र-ग्रंथों का कथन है ।

,मनोरा यक्षिणी' साधन

मन्त्र—

ॐ ह्रीं सर्वकामदे मनोहरे स्वाहा ।

साधन विधि—नदी के तट पर किसी पवित्र स्थान में चन्दन से मण्डल बना कर विधिपूर्वक 'मनोहरा यक्षिणी' का पूजन और ध्यान करे। तदुपरान्त सात दिन तक १०००० मन्त्र का जप करे तो 'मनोहरा यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को प्रतिदिन सौ स्वर्णमुद्रायें देती है। उन स्वर्ण मुद्राओं को प्रतिदिन खर्च कर देना चाहिए। यदि उन्हें बचाकर रक्खा जायगा, तो यक्षिणी क्रुद्ध होकर स्वर्ण-मुद्रा देना बन्द कर देगी।

'मनोहरा यक्षिणी' के ध्यान का मन्त्र इस प्रकार है—

कुरंगनेत्रां शरदिन्दुवक्त्रां
लिम्बाधरां चन्दनगंध माल्याम्।
चीनांशुकीं पीनकुचांमनोज्ञां
श्यामा सदा कामकरां विचित्राम्।
ध्यायेम्।

'कालिका देवी यक्षिणी' साधन

मन्त्र—

ॐ कालिकादेव्यै स्वाहा।

साधन विधि—गोशाला में बैठकर इस मन्त्र का २००००० की संख्या में जप करे तथा घृत के साथ दशांश होम करे तो 'कालिकादेवी यक्षिणी' प्रसन्न होकर मध्यरात्रि में साधक को अभीप्सित वर प्रदान करती है।

'कर्णपिशाचिनी यक्षिणी' साधन

मन्त्र—

ॐ कर्णपिशाचिनि पिंगललोचने स्वाहा।

साधन विधि—पूजा-स्थान में बैठकर एक लाख मंत्र का जप करे, दशांश घृत का हवन करे तथा एक समय तिल की तिलवटी खाय तो

'कर्णपिशाचिनी यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक के कान में तीनों लोकों की बात कहती है एवं पाताल का द्रव्य दिखा देती है।

'विचित्रा यक्षिणी' साधन

मन्त्र—

ॐ विचित्रे चित्ररूपेण सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।

साधन विधि—पवित्र हो, वटवृक्ष के नीचे बैठ कर १००००० मंत्र का जप करे। तत्पश्चात् शहद, घृत और दूध मिला कर बन्धूक के फूलों से योनिकुण्ड में दशांश हवन करे तो 'विचित्रा यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को अनेक प्रकार की विभिन्न वस्तुयें प्रदान करती है तथा उसके मनोरथों को पूरा करती है।

'महानन्दा यक्षिणी' साधन

मन्त्र—

ऐं ह्रीं महानन्दे भीषणे ह्रीं ह्रं स्वाहा।

साधन विधि—तिराहे पर बैठ कर इस मन्त्र का एक लाख जप करे तथा दशांश घी एवं गूगल का होम करे तो 'महानन्दा यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को विचित्र सिद्धि प्रदान करती है।

'नखकेशी यक्षिणी' साधन

मन्त्र—

ॐ ह्रीं नखकेशि कनकवति स्वाहा।

साधन विधि—यक्ष के घर में जाकर, नंगा होकर २१ दिन तक इस मन्त्र का जप करे तथा रात्रि के समय में पूजा करे। मंत्र का आवर्तन एकाग्रचित्त से करे तो 'नखकेशी यक्षिणी' प्रसन्न होकर अर्द्ध-रात्रि के समय साधक को मनवांछित वस्तु प्रदान करती है।

सिद्धेश्वरी यक्षिणी' साधन

मन्त्र—

ॐ कुवल्ये हिलि हिलि तु तु तु सिद्धि सिद्धेश्वरी ह्रीं स्वाहा।

साधन विधि—उक्त मन्त्र का तीन लाख की संख्या में जप करके दशांश गूगल का तथा एक लाख कमलों का होम करे।' सर्वांगलोचना के चित्र को पट्ट वस्त्र पर लिखकर, होम के अन्त में ध्यान करे तो 'सिद्धेश्वरी यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को अभीप्सित धन प्रदान करती है।

विभ्रमा यक्षिणी साधन

मंत्र—

ॐ ह्रीं विभ्रम रूपे विभ्रमे कुरु कुरु एह्येहि भगवति स्वाहा।

साधन विधि—श्मशान में जाकर, निर्भय हो, उक्त मंत्र का दो लाख जप करे और दशांश घी का हवन करे तो विभ्रमा यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को पचास मनुष्यों का भोजन प्रतिदिन प्रदान करती है।

भोजनदा यक्षिणी साधन

मंत्र—

ॐ ह्रीं जलपाणिनि ज्वल ज्वल हुँ ल्वुं स्वाहा।

साधन विधि—शाक, यूष, दूध, सत्तू का भोजन करके किसी श्वेत वस्तु के आसन पर बैठकर, प्रतिदिन पूजन करके उक्त मंत्र का १३००००० जप करे। तदुपरान्त खीर की एक सहस्र आहुतियाँ देकर हवन करे तो भोजनदा यक्षिणी, प्रसन्न होकर साधक को प्रतिदिन एक सहस्र व्यक्तियों का भोजन प्रदान करती है तथा अत्यन्त लम्बी आयु देती है—ऐसा तंत्र शास्त्रों में कहा गया है।

सुलोचना यक्षिणी साधन

मंत्र—

ॐ भूते सुलोचने ल्वुं।

साधन विधि—एक लाख कमल दलों का हवन करके उक्त मंत्र का ११०००० जप करके चन्द्रग्रहण में हवन करे अथवा मालती पुष्पों

का हवन करके १२००० मंत्र का जप करके सूर्य ग्रहण में हवन करे। जब ग्रहण मुक्त हो, तब मंत्र सिद्ध हो जाता है। मंत्र सिद्ध हो जाने पर सुलोचना यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक द्वारा एक सहस्र बार मंत्र का जप पुनः किये जाने पर एक सहस्र मनुष्यों का भोजन प्रदान करती है।

रतिप्रिया यक्षिणी साधन

मंत्र—

ॐ ह्रीं रतिप्रिये स्वाहा।

साधन विधि—शंख मृत्तिका को पट्ट में लगाकर, उसके ऊपर गौर वर्ण, हाथ में कमल लिये, सर्वाभूषण धारिणी देवी की मूर्ति लिखकर, जाती पुष्पादि चढ़ा कर, उक्त मंत्र का प्रतिदिन १०००० जप करे तो रतिप्रिया यक्षिणी प्रसन्न होकर अर्द्ध रात्रि के समय साधक को प्रतिदिन पच्चीस स्वर्ण-मुद्रा प्रदान करती है।

कर्ण पिशाचिनी यक्षिणी साधन

मंत्र—

ॐ ह्रीं चः चः कम्बलके गृह्ण पिण्डं पिशाचिके स्वाहा

साधन विधि—इक्कीस दिन तक प्रतिदिन सू ँ उदयास्त के समय मंत्र का जप करे तथा अपने आहार में से एक पिण्ड सन्ध्या के समय ऊपर छत पर फेंक दे तो तीन सप्ताह में कर्णपिशाचिनी यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक की शैया पर आती है और उसे प्रतिदिन २५ स्वर्णमुद्रा प्रदान करती है तथा साधक जो कुछ पूछता है, उसका उत्तर कान में तुरन्त कह देती है।

चन्द्रगिरा यक्षिणी साधन

मंत्र—

ॐ गुलु गुलु चन्द्रामृतमयि अवजातिलं हुलु हुलु चन्द्रणि रे स्वाहा।

साधन विधि—घर में अथवा वन में इस मंत्र का १००००० जप करे तथा प्रतिदिन पुष्प, धूपादि से पूजन कर पंचामृत द्वारा दशांश हवन करे तो चन्द्रगिरा यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को प्रति दिन एक सहस्र स्वर्ण-मुद्रा प्रदान करती है।

सुरसुन्दरी यक्षिणी साधन

मन्त्र—

ॐ ह्रीं आगच्छ सुरसुन्दरि स्वाहा।

साधन विधि—तीनों संध्याओं में एकलिंग महादेव का पूजन कर उक्त मंत्र का १००० जप करे। जब सुरसुन्दरी यक्षिणी प्रसन्न होकर प्रकट हो और साधक से पूछे कि 'तुम क्या चाहते हो ?' उस समय साधक कहे—'हे देवी ! मैं दरिद्रता से दग्ध हो रहा हूँ, अतः तुम मेरे दारिद्रय का नाश करो।' तब यक्षिणी प्रसन्न होकर उसे धन तथा दीर्घायु प्रदान करती है।

अनुरागिणी यक्षिणी साधन

मन्त्र—

ॐ ह्रीं अनुरागिणी मैथुनप्रिये स्वाहा।

साधन विधि—भोज पत्र के ऊपर कुंकुम से यक्षिणी की प्रतिमा लिखकर प्रतिपदा से पूजन आरम्भ करे तथा तीनों काल की संधि में उक्त मंत्र का तीन सहस्र जप करके रात्रि के समय पूजन करे। एक मास तक यह क्रम बनाये रहे तो अनुरागिणी यक्षिणी प्रसन्न होकर अर्द्ध रात्रि के समय साधक को दर्शन देती है तथा प्रतिदिन एक सहस्र स्वर्ण-मुद्रा प्रदान करती है।

कामेश्वरी यक्षिणी साधन

मन्त्र—

ॐ ह्रीं सर्व कामदे मनोहरे स्वाहा।

साधन विधि—नदी तट पर किसी श्रेष्ठ स्थान में चंदन द्वारा सुन्दर मण्डल बना कर देवी की पूजा करे तथा उक्त मंत्र का प्रतिदिन ३००० की संख्या में जप करे। इस प्रकार तीन सप्ताह तक जप करने से कामेश्वरी यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को प्रतिदिन सहस्त्र स्वर्ण-मुद्रा प्रदान करती है । साधक को चाहिये कि वह उन स्वर्ण-मुद्राओं को प्रतिदिन व्यय कर दिया करे अन्यथा यक्षिणी क्रुद्ध होकर स्वर्ण-मुद्रा देना बंद कर देती है।

शंखिनी यक्षिणी साधन

मंत्र—

ॐ ह्रीं शंख धारिणि शंखाभरणे ह्लां ह्लीं क्लीं ऐं श्रां स्वाहा।

साधन विधि—प्रातःकाल सूर्योदय के समय मंत्र का १०००० की संख्या में जप करे। इस प्रकार एक मास तक जप और पूजन करे। शुद्ध पट्ट वस्त्र पर यक्षिणी की मूर्ति बना कर श्वेत पुष्प तथा खीर से पूजन करे। कनेर की लकड़ी और घी से दशांश होम करे तो शंखिनी यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को प्रतिदिन पाँच रुपये देती है।

त्यागा यक्षिणी साधन

मंत्र—

ॐ अहोत्यागि ममत्यागार्थं देहि मे वित्तं वीर सेवितं स्वाहा।

साधन विधि—इस मंत्र का ४००००० जप करनेसे त्यागा यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को भोग के निमित्त अनेक प्रकार की वस्तुयें प्रदान करती है।

स्वामीश्वरी यक्षिणी साधन

मंत्र—

ॐ ह्रीं आगच्छ स्वामीश्वरि स्वाहा।

साधन विधि—एकान्त एवं पवित्र स्थान में बैठकर तीनों संध्याओं

में उक्त मंत्र का २००० जप करे। इस प्रकार एक मास तक निरन्तर जप करे, तदुपरान्त पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, घृतपूर्ण दीपक से रात्रि के समय, एकाग्रचित्त होकर पूजन करे तो स्वामीश्वरी यक्षिणी प्रसन्न होकर अर्द्ध रात्रि के समय साधक को दिव्य रसायन, वस्त्र और अलंकार भेंट करती है।

वटयक्षिणी साधन

मंत्र—

ॐ ह्रीं श्रीं वटवासिनि यक्ष कुल प्रसूते वट यक्षिणि ऐह्येहि स्वाहा।

साधन विधि—तिराहे पर स्थित वट वृक्ष के नीचे बैठकर रात्रि के समय उक्त मंत्र का ३००००० जप करने से वट यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को दिव्य वस्त्र, अलंकार, रस-रसायन और अंजन प्रदान करती है।

चन्द्रयोगिनी यक्षिणी साधन (१)

मंत्र—

ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रयोगिने स्वाहा।

साधन विधि—वट वृक्ष के ऊपर चढ़कर उक्त मंत्र का १००००० जप करके, सात बार मंत्र पढ़कर काँजी से अपना मुँह धोये तथा रात्रि में दो पहर तक जप करे तो वट यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को दिव्यरस-रसायन प्रदान करती है एवं अनेक क्षुद्र कर्मों की सिद्धि देती है।

चन्द्रयोगिनी यक्षिणी साधन (२)

मंत्र—

ॐ ह्रीं नमश्चन्द्रद्रवे कर्णाकर्णं कारणे चंद्रयोगिने स्वाहा।

साधन विधि—इस मंत्र की साधन विधि भी पूर्वोक्त मंत्र की ही भांति है।

विशाला यक्षिणी साधन

मन्त्र—

ॐ ह्रीं विशाले द्रां द्रूं क्लीं एह्य हि स्वाहा।

साधन विधि—इमली के वृक्ष के नीचे बैठकर इस मन्त्र का १००००० जप करने से विशाला यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को दिव्य रस-रसायन भेंट करती है।

भास्करी यक्षिणी साधन

मन्त्र—

ॐ नमो उच्चेसटे चाण्डालिनि क्षोभिणि दह दह द्रव द्रव आन पूरी श्री भास्करी नमः स्वाहा।

साधन विधि—इस मन्त्र का १००००० जप करने से भास्करी यक्षिणी प्रसन्न होकर, साधक को इच्छित वस्तुयें प्रदान करती है।

अन्नपूर्णा यक्षिणी साधन

मन्त्र—

ॐ नमो ईश्वर घल ब्रह्म केशरि रिद्धि सिद्धि दीन्ही हमारे हाथ, भरो भंडार, बास करो सुखी रक्षा कर श्री अन्नपूर्णा ज्वालामुखी चोखा एक।

साधन विधि—इस मन्त्र का पहले १०००० जप करे। तदुपरान्त २२१२३ बार जप करे तो अन्नपूर्णा यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को विविध प्रकार की भोज्य वस्तुएँ प्रदान करती है।

पात्रपूर्णा यक्षिणी साधन

मन्त्र—

ॐ नमो गुप्त वोरवर मञ्जान सब कोण मानै तेरी आन गंगा की

लहर जमना को प्रमान। या कोठार राजा का भंडार राजा प्रजा लागै है पाँच राती ऋद्धि लाव नव नाथ चौरासी सिद्ध का पात्र भरा जो हमार, पात्र भरो न भरो तो पार्वती का चीर चौधा करो फुरो मन्त्र ईश्वरो वाच।

साधन विधि—इस मन्त्र को १०००० जप करने से पात्रपूर्णा यक्षिणी प्रसन्न होकर साधक को विविध प्रकार की भोजन-सामग्री प्रदान करती है।

भण्डारपूर्णा यक्षिणी साधन

मन्त्र—

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं वामे नमः।

साधन विधि—दीप मालिका के दिन इस मन्त्र को २०२८ की संख्या में जपकर लक्ष्मी को सिन्दूर चढ़ावे तथा धूप, दीप, पुष्पों से पूजन करे तो भण्डार पूर्णा यक्षिणी प्रसन्न होकर, साधक के भण्डार को अटल बनाये रखती है।

कनकवती यक्षिणी साधन

मन्त्र—

ॐ ह्रौं आगच्छ कनकवती स्वाहा।

साधन विधि—गौरवर्ण, हाथ में कमल लिये हुए कनकवती के चित्र का चमेली के पुष्पों से पूजन कर, पच्चीस दिन तक उक्त मन्त्र का प्रतिदिन २१०० जप करे तो कनकवती यक्षिणी प्रसन्न होकर अर्द्धरात्रि के समय साधक के समीप प्रकट होकर उसे इच्छित वस्तु प्रदान करती है।

चामुण्डा यक्षिणी साधन

ॐ नमो चामुण्डे प्रचण्डे इन्द्राय ॐ नमो विप्र चाण्डालिनी शोभिनी प्रकर्षिणी कर्षय आकर्षय द्रव्यमानय प्रबलमानय हुँ फट् स्वाहा।

साधन विधि—प्रथम दिन उपवास कर शीतलता से रहे, क्रोध न करे। पृथ्वी पैर शयन करे। मीठा भोजन करे तथा भोजन करते-करते छोड़ दे। फिर अपवित्र स्थान में मन्त्र का जप करे। प्रतिदिन १००० मन्त्र का जप करे। २१ दिन तक जप करने रहने से सिद्धि प्राप्त होती है। आरम्भ में सात दिन तक पृथ्वी पर शयन करे। उस अवधि में आश्चर्य दिखाई देंगे। तीसरे दिन स्वप्न में यक्षिणी का रौद्र रूप दिखाई देता है। यदि स्वप्न में दिखाई न दे तो २१ दिन तक फिर जप करे। उस स्थिति में 'चामुण्डा यक्षिणी' का स्त्री रूप प्रत्यक्ष दिखाई देता है। उसे देखकर भयभीत न हो। उस रूप द्वारा छल करने पर भी डरे नहीं। वह अभक्ष वस्तु लाकर दे, अनाचार करे फिर भी मन को शंकित न करे तो मंत्र सिद्ध हो जाता है और लक्ष्मी प्रत्यक्ष होकर, साधक के घर में निवास करती है।

'पद्मावती यक्षिणी' साधन

मन्त्रः—

"ॐ नमो धरणीन्द्रा पद्मावती आगच्छ आगच्छ कार्य कुरु कुरु जहाँ भेजूँ वहाँ जाओ, जो मगाऊँ सो आन देओ। आन न देवो तो श्री पारसनाथ की आज्ञा सत्यमेव कुरु कुरु स्वाहा।"

साधन विधि—पूर्व अथवा आग्नेय दिशा की ओर मुँह करके बैठे तथा कार्तिक बदी त्रयोदशी से आरम्भ करके प्रतिपदा तक इस मंत्र का प्रतिदिन एक सहस्र जप करे तो 'पदमावती यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को इच्छित वस्तु लाकर देती है।

'महामाया यक्षिणी' साधन (१)

मन्त्रः—

"ॐ ह्रीं महाभये हुं फट् स्वाहा।"

साधन विधि—मनुष्य के कण्ठ, कान और हाथ की हड्डियों की माला बनाकर, अपने गले में धारण करे तथा श्मशान में बैठकर,

निर्भय हो, उक्त मंत्र का १००००० जप करे तो 'महामाया यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को रसायन प्रदान करती है, जिसके द्वारा साधक पर्वतों को भी चलायमान कर सकता है तथा बलिष्ठ एवं पलित केशों (श्वेत केश) से मुक्त होकर, चिरजीवी बना रहता है।

'महामाया यक्षिणी' साधन (२)

मन्त्रः—

"ब्लीं स्वाहा।"

साधन विधि—इस मंत्र की साधन विधि भी पूर्वोक्त मंत्र की भाँति ही है।

'चन्द्रिका यक्षिणी' साधन

मन्त्रः—

"ॐ ह्रीं चन्द्रिके हंसः (क्लीं) स्वाहा।"

साधन विधि—शुक्ल पक्ष में जब तक चाँदनी दिखाई देती रहे, इस मंत्र का जप करना चाहिये। इसके प्रभाव से 'चन्द्रिका यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को अमृत प्रदान करती है, जिसे पीकर, वह चिरजीवी हो जाता है।

'माहेन्द्र यक्षिणी' साधन

मन्त्रः—

"ऐं ह्रीं ऐन्द्रिमाहेन्द्रि कुलु कुलु चुलु चुलु हंसः स्वाहा।"

साधन विधि—जिस समय आकाश में इन्द्र धनु का उदय हो, उस समय निर्गुण्डी के वृक्ष के नीचे बैठकर इस मंत्र का जप आरम्भ करे। एक लाख मंत्र जपने से 'माहेन्द्र यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को पाताल की सिद्धि तथा अभीप्सित वस्तुयें प्रदान करती है।

कमलसुन्दरी यक्षिणी साधन

मंत्रः—

"ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं प्लं कमलसौंदर्यै नमः विस्तर विस्तर स्वाहा।"

साधन विधि—धूप-दीप से पूजन करके इस मंत्र का १००००० जप करने से 'कमलसुन्दरी यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को अभीप्सित फल प्रदान करती है।

'स्वर्णरेखा यक्षिणी साधन

मन्त्र:—

"ॐ चर्क चर्क शालमल स्वर्णरेखे स्वाहा।"

साधन विधि—एकलिंग महादेव का षडंग विधि से पूजन कर, कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा की पूर्व सन्ध्या से इस मंत्र का जप आरम्भ करे। एक मास तक प्रतिदिन ८००० मंत्र का जप करे। मासान्त में पूजन करे तथा रक्तवर्ण देवता का एकलिंग में ध्यान करते हुए, रात्रि के समय पुन: मूल मंत्र का जप करे तो ६ महीने में सिद्धि प्राप्त होती है। मंत्र सिद्ध हो जाने पर 'स्वर्णरेखा यक्षिणी' अर्द्ध रात्रि के समय प्रसन्न होकर साधक को दिव्य अंजन, वस्त्र तथा अलंकार प्रदान करती है।

'प्रमोदा यक्षिणी' साधन

मन्त्र:—

"ॐ ह्रीं प्रमोदायै स्वाहा।"

साधन विधि—अर्द्ध रात्रि के समय प्रतिदिन १००० मंत्र का जप करने से यह मंत्र एक महीने में सिद्ध होता है। उस समय 'प्रमोदा यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को निधि (पृथ्वी में गढ़े हुए गुप्त खजाने) का दर्शन कराती है।

'रतिप्रिया यक्षिणी' साधन

मन्त्र:—

"ॐ ह्रीं यक्षिणी भामिनी रतिप्रिये स्वाहा।"

साधन विधि—चन्द्र-ग्रहण से तीन दिन पूर्व निराहार रहकर इस मंत्र का यथाशक्ति हर समय जप करता रहे तो चन्द्र ग्रहण की मुक्ति के समय 'रतिप्रिया यक्षिणी' प्रसन्न होकर साधक को दिव्य अंजन लाकर देती है। उसके प्रभाव से साधक पृथ्वी में गढ़ी हुई निधि को देख और उसे प्राप्त कर सकता है।

'पद्मिनी यक्षिणी' साधन

मन्त्रः—

"ॐ ह्रीं पद्मिनी स्वाहा।"

साधन विधि—एकलिंग शिव के स्थान में चन्दन से एक हाथ प्रमाण मण्डल बनाकर उसमें 'पद्मिनी यक्षिणी' का पूजन करे तथा धूप, गूगल देकर उक्त मंत्र का १००० जप करे। इस प्रकार एक मास तक पूजन और जप करके, रात्रि के समय मन्त्र का पुनः जप करे तो 'पद्मिनी यक्षिणी' प्रसन्न होकर अर्द्धरात्रि के समय साधक को दिव्य अंजन प्रदान करती है, जिसके द्वारा साधक को गढ़ा हुआ खजाना दिखाई देने लगता है।

'कनकवती यक्षिणी' साधन

मन्त्र—

"ॐ ह्रीं आगच्छ कनकवति स्वाहा।"

साधन विधि—वट वृक्ष के नीचे चन्दन का एक सुन्दर मण्डल बना कर उसमें यक्षिणी का पूजन कर नैवेद्य चढ़ाये। तदुपरान्त शशा-मांस और आसव से पूजन कर उक्त मन्त्र का १००० की संख्या में जप करे। इस प्रकार एक महीने तक जप और पूजन करते रहने से 'कनकवती यक्षिणी' प्रसन्न होकर अर्द्ध रात्रि के समय साधक को दिव्य अंजन प्रदान करती है, जिसे लगाकर साधक पृथ्वी में गढ़े हुए खजाने को देख सकता है और उसे प्राप्त भी कर सकता है।

रक्तकम्बल यक्षिणी साधन

मन्त्र—

"ॐ ह्रीं रक्त कम्बले देवी मृतकमुत्थापय प्रतिमां चालय पर्वतान् कम्पय नीलम विलसत् हुं हुं।"

साधन विधि—इस मन्त्र का तीन महीने तक निरन्तर जप करने से 'रक्त कम्बला यक्षिणी' प्रसन्न होती है। इस मंत्र की सिद्धि से मृतक उठ बैठता है तथा प्रतिमा चलने लगती है।

इस मन्त्र को १०८ बार जप कर, अपने निमित्त सुस्वादु भोजन को देवी की बलि के निमित्त वट वृक्ष के नीचे बलि दे और इस प्रकार एक मास तक करता रहे तो 'रक्त कम्बला यक्षिणी' स्वयं आकर अपने हाथ से उसका भोजन ग्रहण करती है तथा वर देकर प्रतिदिन समीप बनी रहती है। उसे भूत-भविष्य की सब भली-बुरी बातों के बारे में बताती रहती है और अपने प्रभाव से साधक द्वारा प्रतिमा तथा पर्वतों का चालन भी करा सकती है।

दश महाविद्या साधन

अब दश महाविद्याओं के साधन का वर्णन किया जाता है। उनके मन्त्र, ध्यान, पूजा-यन्त्र, जप-होम, स्तव तथा कवच की विधि का विवरण नीचे प्रस्तुत है। दश महाविद्याओं के नाम इस प्रकार हैं—

(१) काली, (२) तारा, (३) महाविद्या, (४) भुवनेश्वरी, (५) भैरवी, (६) छिन्नमस्ता, (७) धूमावती, (८) वगलामुखी, (९) मातंगी और (१०) कमला अर्थात् लक्ष्मी।

ये दशों महाविद्याएँ साधक को अभीप्सित फल प्रदान करने वाली हैं। चूँकि इन महाविद्याओं के ध्यान, स्तव तथा कवच के मन्त्र संस्कृत में हैं, अतः साधकों की जानकारी के लिए उन्हें भी भाषा टीका सहित उद्धृत किया गया है। साधक को चाहिए कि वह ध्यान, स्तव तथा कवच का पाठ मूल संस्कृत में ही करे, तभी सिद्धि प्राप्त होगी।

मन्त्रादि के निर्माण की विधि अथवा अन्य जो भी बात समझ में न आये, उसकी जानकारी किसी संस्कृतज्ञ तांत्रिक विद्वान् द्वारा प्राप्त लेनी चाहिए। पूजन की क्रिया में जिन अन्यान्य बातों की जानकारी की आवश्यकता है, उन्हें गुरु के मुख से सुन कर जान लेना चाहिए।

काली साधन

सर्व प्रथम 'काली' साधन के मन्त्र, ध्यान, यंत्र, जप, होम, स्तव एवं कवच का वर्णन किया जाता है।

"क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्वाहा।"

इस मन्त्र के द्वारा 'काली' की पूजा तथा जप आदि करना चाहिए।

काली के ध्यान की विधि मूल संस्कृत में नीचे दी जा रही है। बाद में उसका भाषा अर्थ भी दे दिया गया है। साधक को चाहिए कि वह ध्यान करते समय मूल संस्कृत का ही प्रयोग करे।

"करालवदनां घोरां मुक्तकेशीं चतुर्भुजाम्।
कालिकां दक्षिणां दिव्यां मुण्डमालाविभूषिताम्॥
सद्यश्छिन्न शिरः खड्गवामाधोर्ध्वकराम्बुजाम्।
अभयं वरदञ्चैव दक्षिणाधोर्ध्वपाणिकाम्॥
महामेघप्रभां श्यामां तथा चैव दिगम्बरीम्।
कण्ठावसक्तमुण्डालीगलद्रुधिरचर्च्चिताम्॥
कर्णावतंसतानीतशवयुग्मभयानकाम्।
घोरदंष्ट्राकरालास्यां पीनोन्नतपयोधराम्॥
शवानां करसंघातैः कृतकाञ्चीं हसन्मुखीम्।
सृक्कच्छटागलद्रक्तधाराविस्फूरिताननाम्॥
घोररावां महारौद्रीं श्मशानालयवासिनीम्।

बालार्कमण्डलाकारलोचनत्रितयान्विताम् ॥
दन्तुरां दक्षिणव्यापिमुक्तालम्बिकचोच्चयाम् ।
शवरूपमहादेव हृदयोपरि संस्थिताम् ॥
शिवाभिर्घोररावाभिश्चतुर्दिक्षु समन्विताम् ।
महाकालेन च समं विपरीतरतातुराम् ॥
मुखप्रसन्नवदनां स्मेराननसरोरुहाम् ।
एवं संचिन्तयेत् कालीं सर्व्वकामसमृद्धिदाम् ॥"

भाषा-टीका—कालिका देवी भयंकर मुख वाली, घोरा, बिखरे केशों वाली, चार भुजाओं वाली तथा मुण्डमाला से अलंकृत हैं। उनके बाईं ओर के दोनों हाथों में सद्य छेदन किए हुए मृतक का मस्तक एवं खड्ग है तथा दाईं ओर के दोनों हाथों में अभय और वर मुद्रा विद्यमान है।

कण्ठ में मुण्डमाला को धारण किए हुए काली देवी सघन मेघ की भाँति श्याम वर्ण तथा दिगम्बरी हैं। उनके कण्ठ में सद्य छेदित मुण्डों की माला से जो रक्त टपक रहा है, उससे उनका शरीर लिप्त है। वे घोरदंष्ट्रा, करालवदना तथा उन्नत स्तनों वाली हैं।

काली देवी के दोनों कानों में दो मृतक मुण्ड आभूषण के रूप में सुशोभित हैं। उनकी कटि में मृतक के हाथों की करधनी विद्यमान है। वे हास्यमुखी हैं। उनके दोनों ओठों से रुधिर की धारा क्षरित होने के कारण उनका वदन कम्पित हो रहा है। वे घोर शब्द वाली, महाभयंकरी तथा श्मशानवासिनी हैं।

उनके तीनों नेत्र तरुण अरुण की भाँति हैं। उनके दाँत बड़े हैं और वे लम्बायमान केश-कलाप से युक्त हैं। वे शवरूपी महादेव के हृदय के ऊपर स्थित हैं। उनके चारों ओर घोर रव करने वाली गीदड़ियाँ भ्रमण कर रही हैं। वे देवी महाकाल के साथ विपरीत विहार में आसक्त हैं। वे प्रसन्नमुखी, सुहास्यवदना तथा सर्वकाम-समृद्धि-दायिनी हैं।

इस विधि से काली देवी का ध्यान करना चाहिए।

पहले बिन्दु, फिर निजबीज 'क्रीं', तदुपरान्त भुवनेश्वरी बीज 'ह्रीं' लिखकर, उसके बाहर त्रिकोण तथा उसके बाहर चार त्रिकोण अंकित करके वृत्त अष्टदल पद्म और पुनर्वार वृत्त अंकित करें। उसके बाहर चतुर्द्वार अंकित करना चाहिए। यह काली-पूजन का यन्त्र है।

इस यन्त्र के स्वरूप का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमारी 'देवी-देवता सिद्धि' नामक पुस्तक को पढ़ना चाहिए। उसमें इस मन्त्र के स्वरूप को प्रदर्शित किया गया है। इसके अतिरिक्त अन्य दशमहाविद्याओं (जिनका वर्णन आगे किया गया है) के पूजन के यन्त्र के स्वरूप को भी उक्त पुस्तक में प्रदर्शित किया गया है। श्रेष्ठ गुरु द्वारा भी इस यन्त्र के स्वरूप को जाना जा सकता है अथवा स्वयं भी इस पूर्वोक्त विधि से यन्त्र का निर्माण किया जा सकता है। यन्त्र को भोजपत्र के ऊपर अष्टगंध से लिखना चाहिए।

काली के निमित्त जप-होम

पूजा के अन्त में मूल मन्त्र का एक लाख जप करके जप का दशांश घृत-होम करना चाहिए।

काली-स्तव

मूल संस्कृत में काली-स्तव इस प्रकार है—

कर्पूरं मध्यमान्त्यस्वरपररहितं सेन्दुवामाक्षियुक्तं
बीजन्ते मातरेतस्त्रिपुरहरवधूः त्रिःकृतं ये जपन्ति
तेषां गद्यानि च मुखकुहराद्‌ल्लसन्त्येव वाचः
स्वच्छन्दं ध्वान्तधाराधररुचिरुचिरे सर्व्वसिद्धिं गतानाम्॥

भाषा टीका—"हे जननी! हे सुन्दरी! तुम्हारे शरीर की कान्ति श्याम मेघ की भाँति मनोहर है। जो व्यक्ति तुम्हारे एकाक्षरी बीज

को तिगुना करके जप करते हैं, वे शिव की अणिमादि अष्टसिद्धि का लाभ करते हैं तथा उनके मुख से गद्य-पद्यमयी वाणी निकलती है।"

ईशानः सेन्दुवामश्रवणपरिगतं बीजमन्यन्महेशि
द्वन्द्वं ते मन्दचेता यदि जपति जनो वारमेकं कदाचित्।
जित्वा वाचामधीशं धनदमपि चिरं मोहयन्नम्बुजाक्षी
वृन्दं चन्द्रार्द्धचूडे प्रभवति स महाघोरबाणावतंसे ॥

भाषा टीका—"हे महेश्वरी! तुम्हारी चूड़ा में अर्द्धचन्द्र सुशोभित है। तुम्हारे दोनों कानों में दो महा भयंकर बाण अलंकार रूप से विराजमान हैं। विषमत्त पुरुष भी तुम्हारे 'हुँ' इस बीज को दूना करके पवित्र अथवा अपवित्र काल में एक बार जपने मात्र से ही विद्या और धन द्वारा सुरगुरु एवं कुबेर को परास्त करने में समर्थ हो जाता है। वह पुरुष अपने सौन्दर्य से सुन्दरी स्त्रियों को भी मोहित कर लेता है, इसमें सन्देह नहीं है।

ईशो वैश्वानरस्थः शशधरविलसद्वामनेत्रेण युक्तो
बीजं तेद्वन्द्वमन्यद्विगलितचिकुरे कालिके ये जपन्ति।
द्वेष्टारं घ्नन्ति ते च त्रिभुवनमपि ते वश्यभावं नयन्ति
सृक्कद्वन्द्वास्त्रधाराद्वयधरवदने दक्षिणे कालिकेति ॥

भाषा टीका—"हे मुक्त केशी! तुम काल के साथ विहार करती हो, इसलिए तुम्हारा नाम 'कालिका' है। तुम वामा होकर दक्षिणदिक् स्थित महादेव को पराजित करती हुई स्वयं निर्वाण प्रदान करती हो, इसलिए तुम 'दक्षिणा' नाम से सुप्रसिद्ध हुई हो। तुम्हारे दोनों ओठों से रुधिर की धारा क्षरित होती है, जिससे तुम्हारा मुखमण्डल परम सुशोभित होता है। जो व्यक्ति तुम्हारे 'ह्रीं, ह्रीं' इन दोनों बीजों का जप करते हैं, वे शत्रुओं को पराजित करके त्रिभुवन को अपने वशीभूत कर सकते हैं अथवा जो व्यक्ति इस मन्त्र का जप करते हैं, वे शत्रुकुल को अपने वश में करके त्रिभुवन में विचरण कर सकते हैं।"

ऊर्ध्वं वामे कृपाणं करतलकमले छिन्नमुण्डं तथाधः
सव्ये चाभीर्वरञ्च त्रिजगदघहरे दक्षिणेकालिकेति ।
जप्त्वैतन्नामवर्णं तव सनुविभवं भावयन्त्येतदम्ब
तेषामष्टौ करस्थाः प्रकटितवदने सिद्धयस्त्र्यम्बकस्य ।।

भाषा टीका—"हे जगन्माता ! तुम तीनों लोकों के पातकियों के पाप का हरण करती हो। तुम्हारे दाँतों की पंक्ति अत्यन्त भयंकर है। तुम अपने ऊपर के बाँये हाथ में खड्ग, नीचे के बाँये हाथ में छिन्नमुण्ड, ऊपर के दाँये हाथ में अभय तथा नीचे के दक्षिण हाथ में वर धारण किए हुए हो। जो व्यक्ति तुम्हारे पत्रक विभव स्वरूप 'दक्षिण कालिके' मन्त्र का जप करते हैं और तुम्हारे स्वरूप का चिन्तन करते हैं, वे अणिमादिक अष्ट सिद्धियों को प्राप्त करते हैं।"

वर्गाद्यं वह्निसंस्थं विधुरतिललितं तत्त्रयं कूर्च्चयुग्मं
लज्जाद्वन्द्वञ्च पश्चात्स्मितमुखि तदधष्टद्वयं योजयित्वा ।
मातर्ये ये जपन्ति स्मरहरमहिले भावयन्ते स्वरूपं
ते लक्ष्मीलास्यलीला कमलदलदृश कामरूपाः भवन्ति ।।

भाषा टीका—"हे स्मरहर की महिले ! तुम्हारे मुख मण्डल पर मृदु-मधुर हास्य सुशोभित है। जो मनुष्य तुम्हारे स्वरूप का ध्यान करते हुए तुम्हारे नवाक्षर मन्त्रं 'क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा' का जप करते हैं, वे कामदेव की भाँति मनोहर सौन्दर्य को प्राप्त होते हैं और उनके नेत्रकमल की लीला पद्मदल के समान लम्बी तथा रमणीय होती है।"

प्रत्येकं वा त्रयं वा द्वयमपि च परं बीजमत्यन्तगुह्यं
त्वन्नाम्ना योजयित्वा सकलमपि सदा भावयन्तो जयन्ति ।
तेषां नेत्रारविन्दे विहरति कमला वक्त्रशुभ्राशुबिम्बे
वाग्देवी दिव्यमुण्डस्रगतिशयलसत्कण्ठपीनस्तनाढ्ये ।।

भाषा-टीका—"हे जगन्माता ! तुम्हारे उपदेश से ही यह त्रिभुवन अपने कार्य में नियुक्त होता है, इसलिए तुम 'देवी' नाम से प्रसिद्ध हो। मुण्डमाला धारण करने के कारण तुम्हारा कण्ठ परम सुशोभित है। तुम्हारा वक्षःस्थल पुष्ट तथा ऊँचे स्तनमण्डल से सुशोभित है।"

"हे महेश्वरी ! जो व्यक्ति तुम्हारा ध्यान करते हुए 'दक्षिणे कालिके' इस नाम के पूर्व तथा अन्त में पूर्वकथित अतिगुह्य एकाक्षर मन्त्र अथवा इस त्रिगुणित तीन अक्षर के मन्त्र अथवा 'ईशो वैश्वानरस्थं' इत्यादि श्लोक में कथित नवाक्षर मन्त्र अथवा गुह्य वाईस अक्षर के मन्त्र को मिलाकर जप करते हैं, उनके कमलनयनों में कमला तथा मुखचन्द्र में वाग्देवी विलास करती है।"

गतासूनां बाहुप्रकरकृतकञ्चीपरिलस—
न्नितम्बां दिग्वस्त्रां त्रिभुवनविधात्रीं त्रिनयनाम्।
श्मशानस्थे तल्पे शवहृदि महाकालसुरत—
प्रसक्तां त्वां ध्यायञ्जननि जडचेता अपि कविः॥

भाषा टीका—"हे जननी ! तुम त्रिलोक की सृष्टिकर्त्री, त्रिलोचना तथा दिगम्बरी हो। तुम्हारा नितम्ब देश वाहुनिर्म्मित काञ्ची से अलंकृत है। तुम श्मशान में स्थित शवरूपी महादेव की हृदय-शय्या पर महाकाल के साथ क्रीड़ा में रत हो। विषयमत्त मूर्ख व्यक्ति भी तुम्हारा इस प्रकार ध्यान करने से अलौकिक कवित्व शक्ति को प्राप्त कर लेते हैं।"

शिवाभिर्घोराभिः शवनिवसमुण्डास्थिनिकरैः
परं संकीर्णायां प्रकटितचितायां हरवधूम्।
प्रविष्टां सन्तुष्टामुपरि सुरतेनातियुवतीं
सदा त्वां ध्यायन्ति क्वचिदपि न तेषां परिभवः॥

भाषा टीका—"हे कालिके ! तुम महादेव की प्रियतमा हो। तुम नवयुवती तथा विपरीत-विहार में सन्तुष्ट हो। जिस स्थान में भयंकर शिवागण भ्रमण करती हैं तुम उन्ही मृतक-मुण्डों की अस्थियों से आच्छादित श्मशानभूमि में नृत्य करती हो। तुम्हारा इस प्रकार चिन्तन करने से पराभव को प्राप्त नहीं होना पड़ता है।

वदामस्ते किंवा जननि वयमुच्चैर्जडधियो
न धाता नापीशो हरिरपि न ते वेत्ति परमम्।
तथापि त्वद्भक्तिर्मुखरयति चास्माकमसिते
तदेतत्क्षन्तव्यं न खलु शिशुरोषः समुचितः॥

भाषा टीका—"हे जननी ! जब महादेव, ब्रह्मा तथा नारायण भी तुम्हारे परमतत्त्व को नहीं जानते, तब हम मूढ़मति मनुष्य तुम्हारे तत्त्व का वर्णन किस प्रकार कर सकते हैं ? हम जो इस विषय में प्रवृत्त हुए हैं, उसका कारण तुम्हारे भजन के प्रति हमारे मन की उत्सुकता ही है। हमें अनधिकार विषय में उद्यम करते हुए देखकर तुम्हें क्रोध उत्पन्न हो सकता है, परन्तु तुम हमें अपनी मूर्ख सन्तान जानकर क्षमा कर दो।"

समन्तादापीनस्तनजघनधृग् यौवनवती
रतासक्तो नक्तं यदि जपति भक्तस्तवममुम्।
विवासास्त्वां ध्यायन् गलितचिकुरस्तस्य वशगाः
समस्ताः सिद्धौघा भुवि चिरतरं जीवति कविः॥

भाषा टीका—"हे शिव प्रिये ! जो पुरुष नग्न तथा मुक्त केश होकर पुष्ट तथा ऊँचे स्तन वाली युवती नारी के सहित क्रीड़ा-सुख के अनुभव पूर्वक रात्रि में तुम्हारा चिन्तन करते हुए तुम्हारे मन्त्र का जप करते हैं, वे कवित्व की शक्ति से सम्पन्न होकर बहुकाल पर्यन्त पृथ्वी पर निवास करते हैं तथा सम्पूर्ण अभीष्ट उनके समीप बना रहता है।"

समः सुस्थीभूतो जपति विपरीतो यदि सदा
विचिन्त्य त्वां ध्यायन्नतिशयमहाकालसुरताम् ।
तदा तस्य क्षोणीतलविहरमाणस्य विदुषः
कराम्भोजे वश्याः स्मरहरवधू सिद्धिनिवहाः ॥

भाषा टीका—"हे हरवल्लभे ! तुम महाकाल के साथ विहार-सुख का अनुभव करती हो। जो व्यक्ति विपरीत रति में आसक्त होकर स्थिर-मन से तुम्हारा ध्यान करता है, वह सब शास्त्रों में पारदर्शी हो जाता है तथा समस्त सिद्धियाँ उसे हस्तगत हो जाती हैं।"

प्रसूते संसारं जननि जगतीं पालयति च
समस्तं क्षित्यादि प्रलयसमये संहरति च ।
अतस्त्वां धातापि त्रिभुवनपतिः श्रीपतिरपि
महेशोऽपि प्रायः सकलमपि किं स्तौमि भवतीम् ॥

भाषा टीका—'हे जगमाता ! समस्त पदार्थों की उत्पत्ति तुम्हीं से हुई है, अतः तुम्हीं सृष्टिकर्त्ता 'ब्रह्मा' हो। तुम्हीं समस्त जगत् का पालन करती हो, अतः तुम्हीं 'नारायण' हो। महाप्रलय के समय यह जगत्-संसार तुम में ही लय होता है, अतः तुम्हीं महेश्वरी हो। परन्तु स्पष्ट समझा जा सकता है कि तुम्हारे पति होने के कारण ही महेश्वर प्रलयकाल में भी लय को प्राप्त नहीं होते।"

अनेके सेवन्ते भवदधिकगीर्व्वाणनिवहाम्
विमूढास्ते मातः किमपि न हि जानन्ति परमम् ।
समाराध्यामाद्यां हरिहरविरञ्चिादिविबुधैः
प्रसक्तोऽस्मि स्वैरं रतिरस महानन्द निरताम् ॥

भाषा टीका—"हे जगदम्बे ! तुम निरन्तर विहार के आनन्द में निमग्न रहती हो। तुम्हीं सबको आदि स्वरूपिणी हो। अनेक मूढ़

बुद्धि मनुष्य अन्यान्य देवताओं की अराधना करते हैं, परन्तु उस अनिवचनीय परमतत्त्व के विषय को तनिक भी नहीं जानते। उनके उपास्य ब्रह्मा, विष्णु, शिव इत्यादि देवता भी तुम्हारी उपासना में निरन्तर निरत बने रहते हैं।

धारित्रीकीलालं शुचिरपि समीरोऽपि गगने
त्वमेका कल्पाणी गिरिशरमणी कालि सकलम्।
स्तुतिः का ते मातस्तव करुणया मामगतिकं
प्रसन्ना त्वं भूया भवमनु न भूयान्मम जनुः॥

भाषा टीका—"हे जननी! क्षिति, जल, तेज, वायु और आकाश ये पंचभूत भी तुम्हारे ही स्वरूप हैं। तुम्हीं भगवान् महेश्वर की हृदय-रंजिनी हो। तुम्हीं इस त्रिभुवन का मंगल विधान करती हो। हे जननी! इस अवस्था में मैं तुम्हारी क्या स्तुति करूँ? क्योंकि, किसी विलक्षण गुण का आरोप न करके, वर्णन करने को स्तुति कहा जाता है। तुम में कौन सा गुण नहीं है, जो उसका आरोप करके मैं तुम्हारा स्तवन करूँ? तुम स्वयं जगन्त्रयी हो। अस्तु, तुम्हारे सम्बन्ध में जो वर्णन हो, वह सब तुम्हारे स्वरूप वर्णन पर है। हे कृपामयी। तुम अपनी दया को प्रकट करके इस निराश्रय सेवक के प्रति सन्तुष्ट होओ तो इस सेवक को संसार भूमि में फिर से जन्म नहीं लेना पड़ेगा।"

"श्मशानस्थस्स्वस्थो गलितचिकुरो दिक्पटधरः
सहस्रन्त्वर्काणां निजगलितवीर्येण कुसुमम्॥
जपंस्त्वत्प्रत्येकममुमपि तव ध्यान निरतो
महाकालि स्वैरं स भवति धरित्रीपरिवृढः॥

भाषा टीका—"हे महाकालिके! जो मनुष्य श्मशान भूमि में वस्त्रहीन तथा केश खोल कर, यथाविहित आसन पर बैठकर, स्थिर मन से तुम्हारे स्वरूप का ध्यान करता हुआ तुम्हारे मन्त्र का जप

करता है। तथा अपनें निकले वीर्य-संयुक्त सहस्र, आक के फूलों को एक-एक करके तुम्हारे उद्देश्य से अर्पण करता है, वह सम्पूर्ण पृथ्वी का अधीश्वर होता है।"

गृहे सम्मार्ज्जन्या परिगलितवीर्य्यं हि चिकुरं
समूलं मध्याह्ने वितरति चितायां कुजदिने।
समुच्चार्य्यं प्रेम्णा जपमनु सुकृत् कालि सततं
गजारूढो याति क्षितिपरिवृढः सत्कविवरः॥

भाषा टीका—"हे देवी! जो व्यक्ति मंगलवार के दिन मध्याह्न काल के समय कंघी द्वारा शृंगार किये हुए गृहिणी के समूल केश को लेकर पूर्व कथित तुम्हारे जिस किसी एक मन्त्र का जप करता हुआ, तुम्हारे प्रति भक्ति पूर्वक चिताग्नि में अर्पित करना है, वह पृथ्वी का अधीश्वर होकर, निरन्तर हाथी पर चढ़कर विचरण करने में समर्थ होता है और वह व्यास आदि कवि-कुल की प्रधानता को प्राप्त करता है।"

सुपुष्पैराकीर्णं कुसुमधनुषो मन्दिरमहो
पुरोध्यायन् ध्यायन् यदि जपति भक्तस्स्तवममुम्॥
स गन्धर्व्वश्रेणीं पतिरिव कवित्वामृतनदी
न दीनः पर्य्यन्ते परमपदलीनः प्रभवति॥

भाषा टीका—"हे जगन्माता! यदि साधक स्वयं फलों से रंजित काम-गृह को अभिमुख करके मन्त्रार्थ सहित तुम्हारा ध्यान करते हुए पूर्वकथित तुम्हारे किसी एक मन्त्र का जप करता है, वह कवित्वरूपी नदी के सम्बन्ध में समुद्रस्वरूप होता है तथा महेन्द्र की समानता को प्राप्त करता है। वह शरीरान्त के समय तुम्हारे करण कमलों में लीन होकर स्वरूपयुक्ति को प्राप्त करता है। इसमें कोई विचित्रता नहीं है।"

बुद्धि मनुष्य अन्यान्य देवताओं की अराधना करते हैं, परन्तु उस अनिवचनीय परमतत्त्व के विषय को तनिक भी नहीं जानते। उनके उपास्य ब्रह्मा, विष्णु, शिव इत्यादि देवता भी तुम्हारी उपासना में निरन्तर निरत बने रहते हैं।

धारित्रीकीलालं शुचिरपि समीरोऽपि गगने
त्वमेका कल्याणी गिरिशरमणी कालि सकलम्।
स्तुतिः का ते मातस्तव करुणया मामगतिकं
प्रसन्ना त्वं भूया भवमनु न भूयान्मम जनुः॥

भाषा टीका—"हे जननी! क्षिति, जल, तेज, वायु और आकाश ये पंचभूत भी तुम्हारे ही स्वरूप हैं। तुम्हीं भगवान् महेश्वर की हृदय-रंजिनी हो। तुम्हीं इस त्रिभुवन का मंगल विधान करती हो। हे जननी! इस अवस्था में मैं तुम्हारी क्या स्तुति करूँ? क्योंकि, किसी विलक्षण गुण का आरोप न करके, वर्णन करने को स्तुति कहा जाता है। तुम में कौन सा गुण नहीं है, जो उसका आरोप करके मैं तुम्हारा स्तवन करूँ? तुम स्वयं जगन्त्रयी हो। अस्तु, तुम्हारे सम्बन्ध में जो वर्णन हो, वह सब तुम्हारे स्वरूप वर्णन पर है। हे कृपामयी। तुम अपनी दया को प्रकट करके इस निराश्रय सेवक के प्रति सन्तुष्ट होओ तो इस सेवक को संसार भूमि में फिर से जन्म नहीं लेना पड़ेगा।"

"श्मशानस्थस्स्वस्थो गलितचिकुरो दिक्पटधरः
सहस्रन्त्वर्काणां निजगलितवीर्येण कुसुमम्॥
जपंस्त्वत्प्रत्येकममुमपि तव ध्यान निरतो
महाकालि स्वैरं स भवति धरित्रीपरिवृढः॥

भाषा टीका—"हे महाकालिके! जो मनुष्य श्मशान भूमि में वस्त्रहीन तथा केश खोल कर, यथाविहित आसन पर बैठकर, स्थिर मन से तुम्हारे स्वरूप का ध्यान करता हुआ तुम्हारे मन्त्र का जप

करता है। तथा अपने निकले वीर्य-संयुक्त सहस्र, आक के फूलों को एक-एक करके तुम्हारे उद्देश्य से अर्पण करता है, वह सम्पूर्ण पृथ्वी का अधीश्वर होता है।"

गृहे सम्मार्ज्जन्या परिगलितवीर्य्यं हि चिकुरं
समूलं मध्याह्ने वितरति चितायां कुजदिने।
समुच्चार्य्य प्रेम्णा जपमनु सुकृत् कालि सततं
गजारूढो याति क्षितिपरिवृढः सत्कविवरः॥

भाषा टीका—"हे देवी! जो व्यक्ति मंगलवार के दिन मध्याह्न काल के समय कंघी द्वारा शृंगार किये हुए गृहिणी के समूल केश को लेकर पूर्व कथित तुम्हारे जिस किसी एक मन्त्र का जप करता हुआ, तुम्हारे प्रति भक्ति पूर्वक चिताग्नि में अर्पित करना है, वह पृथ्वी का अधीश्वर होकर, निरन्तर हाथी पर चढ़कर विचरण करने में समर्थ होता है और वह व्यास आदि कवि-कुल की प्रधानता को प्राप्त करता है।"

सुपुष्पैराकीर्णं कुसुमधनुषो मन्दिरमहो
पुरोध्यायन् ध्यायन् यदि जपति भक्तस्स्तवममुम्॥
स गन्धर्व्वश्रेणीं पतिरिव कवित्वामृतनदी
न दीनः पर्य्यन्ते परमपदलीनः प्रभवति॥

भाषा टीका—"हे जगन्माता! यदि साधक स्वयं फलों से रंजित काम-गृह को अभिमुख करके मन्त्रार्थ सहित तुम्हारा ध्यान करते हुए पूर्वकथित तुम्हारे किसी एक मन्त्र का जप करता है, वह कवित्वरूपी नदी के सम्बन्ध में समुद्रस्वरूप होता है तथा महेन्द्र की समानता को प्राप्त करता है। वह शरीरान्त के समय तुम्हारे करण कमलों में लीन होकर स्वरूपयुक्ति को प्राप्त करता है। इसमें कोई विचित्रता नहीं है।"

"त्रिपञ्चारे पीठे शवशिवहृदि स्मेरवदनां
महाकालेनोच्चैर्मदनरस लावण्य निरताम्.॥
महासक्तो नक्तं स्वयमपि रतानन्दनिरतो
जनो यो ध्यायेत्त्वामपि जननि स स्यात्स्मरहरः ॥

भाषा टीका—"हे जगन्माते ! तुम्हारे मुख मण्डल पर मृदुहास्य विराजमान है। तुम सदैव शिव के साथ विहार-सुख का अनुभव करती हो। जो साधक रात्रि में अपने विहार-सुख का अनुभव करते हुए शव-हृदय रूप आसन पर पाँच दशकोण युक्त तुम्हारे यन्त्र में तुम्हारा पूर्वोक्त प्रकार से चिन्तन करता है, वह शीघ्र ही शिवत्व को प्राप्त करता है।"

सलोमास्थि स्वैरं पललमपि मार्ज्जारमसिते
परञ्चौष्ट्रं मैषं नरमहिषयोश्छागमपि वा।
वलिन्ते पूजायामपि वितरतां मर्त्यवसतां
सतां सिद्धिः सर्व्वा प्रतिपदमपूर्व्वा प्रभवति ॥

भाषा टीका—"हे जननी ! पृथ्वीवासी साधकगण यदि तुम्हारी पूजा में बिल्ली का मांस, ऊँट का मांस, नर-मांस, महिष-मांस अथवा छाग-मांस को रोमयुक्त तथा अस्थियों सहित अर्पण करते हैं तो उनके चरणकमल में आश्चर्यजनक विषय सिद्ध होकर आ गिरते हैं।"

वशी लक्षं मन्त्रं प्रजपति हविष्याशनरतो
दिवा मातर्युष्मच्चरणयुगल ध्यान निपुणः।
परं नक्तं नग्नो निधुवनविनोदेन च मनुं
जनो लक्षं स स्यात्स्मरहरसमानः क्षितितले ॥

भाषा टीका—"हे जगन्मातः ! जो व्यक्ति इन्द्रियों को अपने वश में करके हविष्य भोजन पूर्वक प्रातःकाल से दिन के दूसरे प्रहर तक तुम्हारे दोनों चरणों में मन लगाकर जप करते हैं तथा पशुभावानुसार

एक लक्ष जपरूप पुरश्चरण करते है अथवा जो साधक रात्रिकाल में नग्न एवं विहार-परायण होकर वीर-साधन के अनुसार एक लक्ष जपरूप पुरश्चरण करते हैं—ये दोनों प्रकार के साधक पृथ्वीतल में स्मर-हर शिव की भाँति सुशोभित होते हैं।"

इदं स्तोत्रं मातस्तवमनु समुद्धारणजपः
स्वरूपाख्यं पादाम्बुजयुगलपूजाविधियुतम्।
निशार्द्धं वा पूजा समयमधि वा यस्तु पठति
प्रलापे तस्यापे प्रसरति कवित्वामृतरसः॥

भाषा टीका—"हे जननी! मेरे द्वारा किए हुए इस स्तव में तुम्हारे मन्त्र का उद्धार तथा तुम्हारे स्वरूप का वर्णन हुआ है। तूम्हारे चरण कमल की पूजा-विधि का भी इसमें उल्लेख किया गया है। जो साधक निशाद्विप्रहरकाल में अथवा पूजाकाल में इस स्तव का पाठ करता है, उसकी निरर्थक वाणी भी प्रवन्ध रूप में परिणत होकर कवित्वरूपी सुधारस को प्रवाहित करती है।"

कुरंगाक्षीवृन्दं तमनुसरति प्रेम तरलं
वशस्तस्य क्षोणीपतिरपि कुबेरप्रतिनिधि।
रिपुः कारागारं कलयति च तत्केलिकलया
चिरं जीवन्मुक्तः स भवति भक्तः प्रतिजनुः॥

भाषा टीका—"मृग के समान नैनोंवाली स्त्रियाँ इस स्तव के पढ़ने वाले साधक को प्रियतम जानकर उसकी अनुगामिनी होती हैं। कुबेर के समान राजा भी उसके वश में रहते हैं तथा उस साधक के शत्रुगण कारागार में बन्द होते हैं। वह साधक जन्म-जन्म में जगदम्बा का भक्त होता है तथा सभी कालों में महा आनन्द पूर्वक विहार करके शरीरान्त में मोक्ष को प्राप्त करता है।

काली कवच

अब कालीदेवी के कवच को मूल संस्कृत में नीचे दिया जा रहा है। बाद में उसका भाषा-अर्थ भी दे दिया गया है। साधक को चाहिए कि वह पाठ करते समय मूल संस्कृत का ही प्रयोग करे।

कवच इस प्रकार है—

भैरव्युवाच

कालीपूजा श्रुतानाथ भावाश्च विविधः प्रभो।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवचं पूर्व्वसूचितम् ॥
त्वमेव शरणं नाथ त्राहि मां दुःख संकटात्।
त्वमेव स्रष्टा पाता च संहर्ता च त्वमेव हि ॥

भाषा टीका—"भैरवी ने कहा—हे नाथ ! हे प्रभो ! मैंने काली की पूजा तथा उसके विविध भावों को सुना। अब मुझे पूर्वसूचित कवच सुनने की इच्छा है। उसका वणन करके मेरी दुःख-संकट से रक्षा कीजिए। हे नाथ ! आप ही स्रष्टा, पालनकर्त्ता तथा संहारकर्त्ता हैं। आप ही मेरे आश्रय हैं।"

भैरव उवाच

रहस्यं श्रृणु वक्ष्यामि भैरवि प्राणवल्लभे।
श्री जगन्मंगलं नाम कवचं मंत्रविग्रहम्।
पठित्वा धारयित्वा च त्रैलोक्यं मोहयेत् क्षणात् ॥

भाषा टीका—"भैरव ने कहा—हे प्राण वल्लभे मैं 'श्रीजगन्मंगल' नामक कवच को कहता हूँ, सुनो। इसका पाठ करने अथवा इसे धारण करने वाला मनुष्य तीनों लोकों को शीघ्र मोहित कर सकता है।"

नारायणोऽपि यद्धृत्वा नारी भूत्वा महेश्वरम्।
योगेशं क्षोभमनयद्यद्धृत्वा च रघूद्वहः।
वरदृप्तान् जघनानैव रावणादिनिशाचरान् ॥

भाषा टीका—नारायण ने इसी कवच को धारण करके नारीरूप से योगेश्वर शिव को मोहित किया था। श्रीरामचन्द्र ने इसी को धारण करके खर-दूषण रावणादि राक्षसों का संहार किया था।

यस्य प्रसादादीशोऽहं त्रैलोक्यविजयी प्रभुः ।।
धनाधिपः कुबेरोऽपि सुरेशोऽभूच्छचीपतिः ।
एवंहि सकला देवाः सर्व्वसिद्धिश्वराः प्रिये ।।

भाषा टीका—हे प्रिये ! इस कवच के प्रभाव से ही में त्रैलोक्य-विजयी हुआ हूँ। इसी के प्रसाद से कुबेर धनाधिप तथा शचीपति इन्द्र सुरेश्वर हुए हैं। इसी के प्रसाद से सब देवतागण सर्वसिद्धीश्वर हुए हैं।

श्रीजगन्मंगलस्यास्य कवचस्य ऋषिश्शिवः ।
छन्दोऽनुष्टुम् देवता च कालिका दक्षिणेरिता ।।
जगतां मोहने दुष्टनिग्रहे भुक्तिमुक्तिषु ।
योषिदाकर्षणे चैव विनियोगः प्रकीर्त्तितः ।

भाषा टीका—इस काव्य के ऋषि शिव हैं, छन्द अनुष्टुप, देवता दक्षिण कालिका हैं तथा मोहन, दुष्ट-निग्रह, भुक्ति-मुक्ति और योषिदाकर्षण में विनियोग है।

शिरो मे कालिका पातु क्रीङ्कारैकाक्षरी परा ।
क्रीं क्रीं क्रीं मे ललाटञ्च कालिका खड्गधारिणी ।।
हुं हुं पातु नेत्रयुग्मं ह्रीं ह्रीं पातु श्रुती मम ।
दक्षिणा कालिका पातु घ्राणयुग्मं महेश्वरी ।।
क्रीं क्रीं क्रीं रसनां पातु हुं हुं हुं पातु कपोलकम् ।
वदनं सकलं पातु ह्रीं ह्रीं स्वाहास्वरूपिणी ।।

भाषा टीका—कालिका और क्रीङ्कारा मेरे मस्तक की, क्रीं क्रीं क्रीं और खड्गधारिणी कालिका ललाट की, हुं हुं दोनों नेत्रों की, ह्रीं ह्रीं

कर्ण की, दक्षिणा कालिका दोनों घ्राण की, क्रीं क्रीं क्रीं रसना की, हुं हुं कपोल देश की और ह्रीं ह्रीं स्वाहास्वरूपिणी सम्पूर्ण वदन की रक्षा करें।

द्वाविंशत्यक्षरी स्कन्धौ महाविद्या सुखप्रदा।
खड्गमुण्डधरा काली सर्व्वांगमभितोऽवतु ॥
क्रीं हुँ ह्रीं त्र्यक्षरी पातु चामुण्डा हृदयं मम।
ऐं हुं ओं ऐं स्तनद्वन्द्वं ह्रीं फट् स्वाहा ककुत्स्थलम् ॥
अष्टाक्षरी महाविद्या भुजौ पातु सकर्त्तृका।
क्रीं क्रीं हुँ हुँ ह्रीं ह्रीं करौ पातु षड़क्षरी मम ॥"

भाषा टीका—बाईस अक्षर की विद्यारूप सुखदायिनी महाविद्या दोनों स्कन्धों की, 'खंगमुण्डधरा काली' सर्वांग की, 'क्रीं हुं ह्रीं चामुण्डा' हृदय की, 'ऐ हुँ ओं ऐ' दोनों स्तन की, 'ह्रीं फट् स्वाहा' कन्धों की, 'अष्टाक्षरी महाविद्या' दोनों भुजाओं की तथा 'क्रीं' इत्यादि षडक्षरी विद्या दोनों हाथों की रक्षा करे।

"क्रीं नाभिं मध्यदेशञ्च दक्षिणा कालिकाऽवतु।
क्रीं स्वाहा पातु पृष्ठन्तु कालिका सा दशाक्षरी ॥
ह्रीं क्रीं दक्षिणे कालिके हुँ ह्रीं पातु कटिद्वयम्।
काली दशाक्षरी विद्या स्वाहा पातु सयुग्मकम् ॥
ॐ ह्रां क्रीं में स्वाहा पातु कालिका जानुनी मम।
काली हृन्नामविद्येयं चतुर्वर्गफलप्रदा।"

भाषा टीका—क्रीं, नाभिदेश की, 'दक्षिणा कालिका' मध्य देश की, 'क्रीं स्वाहा' तथा 'दशाक्षर मन्त्र' पीठ की, 'ह्रीं क्रीं दक्षिणे कालिके ह ' ह्रीं, कटि की, 'दशाक्षरीविद्या' ऊपर की तथा 'ॐ ह्रीं क्रीं स्वाहा' जानुदेश की रक्षा करें। यह विद्या चतुर्वर्ग फलदायिनी है।

"क्रीं ह्लीं ह्लीं पातु गुल्फं दक्षिणे कालिकेऽवतु ।
क्रीं ह्लूं ह्लीं स्वाहा पदं पातु चतुर्दशाक्षरी मम ॥"

भाषा टीका—'क्रीं ह्लीं ह्लीं' गुल्फ की तथा 'क्रीं ह्लूं ह्लीं स्वाहा' और 'चतुर्दशाक्षरी विद्या' मेरे पाँवों की रक्षा करे ।

खंगमुण्डधरा काली वरदा भयवारिणी ।
विद्याभि सकलाभि सा सर्व्वांगमभितोऽवतु ॥

भाषा टीका—"खंग मुण्डधरा वरदा भयहारिणी काली" सब विद्याओं सहित मेरे सर्वांग की रक्षा करे ।"

"काली कपालिनी कुल्वा कुरुकुल्ला विरोधिनी ।
विप्रिचत्ता तथोग्रोग्रप्रभा दीपा घनत्विषः ॥
नीलाघना बालिका च माता मुद्रामि‍ता च माम् ।
एताः सर्व्वाः खंगधरा मुण्डमालाविभूषिताः ॥
रक्षन्तु मां दिक्षु देवी ब्राह्मी नारायणी तथा ।
माहेश्वरी च चामुण्डा कौमारी चापराजिता ॥
वाराही नारसिंही च सर्व्वाश्चामितभूषणाः ।
रक्षन्तु स्वायुधैर्दिक्षु मां विदिक्षु यथा तथा ॥"

भाषा टीका—"काली, कपालिनी, कुल्वा, कुरुकुल्ला, विरोधिनी, विप्रचित्ता, उग्रोग्रप्रभा, दीपा, घनत्विषा, नीलाघना, बालिका, माता तथा मुद्रापिता—ये सब खड्गधारिणी, मुण्डमालाधारिणी देवी मेरी दिशाओं की रक्षा करें । ब्राह्मी, नारायणी, माहेश्वरी, चामुण्डा, कौमारी, अपराजिता, वाराही तथा नारसिंही—ये सब असंख्य आभूषणों को धारण करने वाली देवियाँ अपने आयुधों सहित मेरी दिशा विदिशाओं की रक्षा करें ।"

"इत्येवं कथितं दिव्यं कवचं परमाद्भुतम् ।
श्री जगन्मगलं नाम महामन्त्रौघविग्रहम् ॥

त्रैलोक्याकर्षणं ब्राह्मकवचं मन्मुखोदितम् ।
गुरुपूजां विधायाथ गृह्णीयात् कवचंततः ।
कवचं त्रिःसकृद्वापि यावज्जीवञ्च वा पुनः ॥"

भाषा टीका—यह कवच जगन्मंगल नायक दिव्य और परम अद्भुत है। यह महामन्त्र स्वरूप है। इससे त्रिभुवन आकर्षित होता है। यह ब्रह्म कवच मेरे मुख द्वारा वर्णित है। गुरु की पूजा करने के उपरान्त इस कवच को ग्रहण करना चाहिए। इसका यावज्जीवन दिन में एक बार अथवा तीन बार पाठ करना चाहिए।

इस कवच की पचास आवृत्ति करने वाला मनुष्य त्रैलोक्य विजयी हो सकता है। इस कवच के प्रताप से त्रिभुवन क्षोभित होता है। इस कवच का पाठ करने वाला व्यक्ति एक मास के भीतर सभी सिद्धियों का स्वामी हो सकता है।

पूर्वोक्त मूल मन्त्र द्वारा कालिका को पुष्पांजलि देकर, केवल एक बार ही इस कवच का पाठ करने से शतसहस्र वार्षिकी पूजा का फल प्राप्त होता है।

इस कवच को भोजपत्र अथवा स्वर्णपत्र पर लिखकर, मस्तक, दक्षिण भुजा अथवा कण्ठ में धारण करने वाला साधक अपने क्रोध से त्रिभुवन को मोहित अथवा चूर्णीकृत करने में समर्थ होता है। जो स्त्री इस कवच को धारण करती है, वह बहुत सन्तानों वाली और जीववत्सा होती है—इसमें सन्देह नहीं है।

यह कवच अभक्त अथवा पर-शिष्य को नहीं देना चाहिए। भक्ति युक्त अपने शिष्य को ही देना चाहिए। इससे विपरीत करना, मृत्यु के मुख में गिरने की भाँति हैं। इस कवच के प्रसाद से कमला (लक्ष्मी) निश्चल रूप से साधक के घर में तथा वाग्देवी साधक के मुख में निवास करती है।

इस कवच को जाने बिना जो मनुष्य काली मन्त्र का जप करता

है, उसे लाख बार जप करने पर भी सिद्धि प्राप्त नहीं होती । ऐसा पुरुष शस्त्राघात से अपने प्राणों को शीघ्र ही त्याग देता है ।

तारा साधन

अब 'तारा' साधन के मन्त्र, ध्यान, यन्त्र, जप, होम, स्तव एवं कवच का वर्णन किया जाता है ।

तारा मन्त्र

(१) ह्रीं स्त्रीं हूं फट् ।

(२) ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं फट् ।

(३) श्रीं ह्रीं स्त्रीं हूँ फट् ।

तारा के साधन के लिए मन्त्र का स्वरूप उक्त तीन प्रकार का कहा गया है । इनमें से किसी भी एक मन्त्र के द्वारा 'तारा' की पूजा तथा जप आदि करना चाहिए ।

तारा ध्यान

तारा ध्यान की विधि मूल, संस्कृत में नीचे दी जा रही है । बाद में उसका भाषा अर्थ भी दे दिया गया है । साधक को चाहिए कि वह ध्यान करते समय मूल संस्कृत का ही प्रयोग करे ।

प्रत्यालीढपदां घोरां मुण्डमालाविभूषिताम् ।
खर्व्वां लम्बोदरीं भीमां व्याघ्रचर्म्मावृतां कहौ ।।
नवयौवनसम्पन्नां पञ्चमुद्राविभूषिताम् ।
चतुर्भुजां लोलजिह्वां महाभीमां वरप्रदाम् ।।
खंगकर्त्तृसमायुक्तसव्येतरभुजद्वयाम् ।
कपोलोत्पल संयुक्तसव्यपाणियुगान्विताम् ।
पिंगाग्रैकजटाँ ध्यायेन्मौलावक्षोभ्यभूषिताम् ।
बालार्कमण्डलाकारलोचनत्रयभूषिताम् ।।

ज्वलच्चितामध्यगतां घोरदंष्ट्राकरालिनीम् ।
स्वावेशस्मेरवदनां ह्यलंकारविभूषिताम् ॥
विश्वव्यापकतोयान्तः श्वेतपद्मोपारिस्थिताम् ॥

भाषा टीका—"तारादेवी एक पाँव आगे किए हुए वीर-पद से विराजमान हैं। वे घोर रूपिणी, मुण्डमाला विभषिता, सर्वालम्बोदरी, भीमा, व्याघ्रचर्मावृता, नवयौवन सम्पन्ना, पञ्चमुद्रा, विभूषिता, चतुर्भुजा, लोलजिह्वा, महाभीमा एवं वरदानी हैं। उनके दाईं ओर के हाथों में खड्ग और कैंची तथा बाईं ओर के दोनों हाथों में कपाल और उत्पल विद्यमान है। उनकी जटायें पिंगल वर्ण हैं। उनके मस्तक में क्षोभरहित, शोभित तीनों नेत्र तरुण अरुण के समान रक्तवर्ण वाले हैं। वे चलती हुई चिता में स्थित, घोर दंष्ट्रा, कराला, स्वीय आवेश में हास्यमुखी, सब प्रकार के अलंकारों से अलंकृत तथा विश्वव्यापी जल के भीतर श्वेतपद्म के ऊपर स्थित है।

इस विधि से तारादेवी का ध्यान करना चाहिए।

तारा-पूजन का मन्त्र

स्वर्णादिपीठो पर गोरोचन अथवा कुकुमादि से लेप करके "ॐ आः सुरेखे वज्ररेखे ओं फट् स्वाहा" इस मन्त्र से अधोमुख त्रिकोण में अष्टदल मन्त्र, उसके बाहर गोलवृत्त, चतुष्कोण तथा चतुर्द्वारसमन्वित यन्त्र को खींचे।

तारा के निमित्त जप-होम

हविष्याशी तथा जितेन्द्रिय होकर 'ॐ ऐं ह्रीं क्रीं हूँ फट्' इस मन्त्र को दो लाख जप कर, पलाश-पुष्प द्वारा उसका दशांश होम करना चाहिए।

तारा-स्तव

मूल संस्कृत में तारा-स्तव इस प्रकार है—

तारा च तारिणी देवी नागमुण्डविभूषिता ।
ललज्जिह्वा नीलवर्णा ब्रह्मरूपधरा तथा ॥

नागाञ्चितकटी देवी नीलाम्बरधरा परा ।
नामाष्टकमिदं स्तोत्रं यः पठेत् श्रणुयादपि ।
तस्य सर्व्वार्थसिद्धिः स्यात् सत्यं सत्यं महेश्वरि ।

भाषा टीका—(१) तारा, (२) तारिणी, (३) नागमुण्ड विभूषिता, (४) ललज्जिह्वा, (५) नीलवर्णा, (६) ब्रह्मरूपधरा, (७) नागाञ्चित कटी तथा (८) नीलाम्बरधरा—इस अष्टनामात्मक ताराष्टक स्तोत्र का पाठ अथवा श्रवण करने से सर्वार्थ सिद्धि होती है । भैरव कहते हैं—'हे महेश्वरी ! यह सत्य है, सत्य है ।'

तारा-कवच

अब कालीदेवी के कवच को मूल संस्कृत में नीचे दिया जा रहा है । बाद में उसका भाषा अर्थ भी दे दिया है । साधक को चाहिए कि वह पाठ करते समय मूल संस्कृत का ही प्रयोग करे ।

कवच इस प्रकार है—

भैरव उवाच ।

दिव्यं हि कवचं देविः तराया सर्व्वकामदम् ।
शृणुष्व परमं तत्तु तव स्नेहात् प्रकाशितम् ।।

भाषा टीका—भैरव ने कहा—हे देवि ! तारादेवी का दिव्य-कवच सर्व कामप्रद एवं परम श्रेष्ठ है । तुम्हारे प्रति स्नेह के कारण मैं उसे प्रकट करता हूं सुनो ।

अक्षोभ्य ऋषिरित्यस्य छन्दस्त्रिष्टुबुदाहृतम् ।
ताराभगवती देवी मन्त्रसिद्धौ प्रकीर्त्तितम् ।।

भाषा टीका—इस कवच के ऋषि अक्षोभ्य हैं, छन्द त्रिष्टुप है, देवता भगवती तारा हैं और मन्त्रसिद्धि में इसका विनियोग है ।

ओंकारो मे शिरः पातु ब्रह्मरूपा महेश्वरी ।
ह्रींकारः पातु ललाटे बीजरूपा महेश्वरी ।।

स्त्रींकार: पातु वदने लज्जारूपा महेश्वरी ।
हू ंकार: पातु हृदये तारिणीशक्तिरूपधृक ।।

भाषा टीका – "ॐ ब्रह्मरूपा महेश्वरी, मेरे मस्तक की, 'ह्रीं बीज-रूपा महेश्वरी, मेरे ललाट की, 'स्त्री' लज्जारूपा महेश्वरी मेरे मुख की तथा 'हूं शक्तिरूपा धारिणी तारिणी' मेरे हृदय की रक्षा करें ।

फट्कार: पातु सर्व्वांगे सर्वसिद्धि फलप्रदा ।
खर्वा मां पातु देवेशी गण्डयुग्मे भयापहा ।।
लम्बोदरी सदा स्कन्धयुग्मे पातु महेश्वरी ।
व्याघ्र चर्मावृता कटिं पातु देवी शिवप्रिया ।।

भाषा टीका—"फट् सर्वसिद्धि फलप्रदा सर्वांग की, 'भयनाशिनी खर्वा' दोनों कपोलों की, 'महेश्वरी लम्बोदरी' दोनों कन्धों की तथा 'व्याघ्रचर्म्मावृता शिवप्रिया' मेरी कटि (कमर) की रक्षा करें ।"

पीनोन्नतस्तनी पातु पार्श्वयुग्मे महेश्वरी ।
रक्तवर्त्तुलनेत्रा च कटिदेशे सदावतु ।।
ललज्जिह्वा सदा पातु नाभौ मां भुवनेश्वरी ।
करालास्या सदा पातु लिंगे देवी हरप्रिया ।।

भाषा टीका—'पीनोन्नतस्तनी महेश्वरी दोनों पार्श्वों की, 'रक्त गोल नेत्रों वाली' कटिदेश की, 'ललज्जिह्वा भुवनेश्वरी' नाभि की तथा 'करालवदना हरप्रिया' मेरे लिंग स्थान की सदैव रक्षा करें ।"

विवादे कलहे चैव अग्नौ च रणमध्यत:
सर्व्वदा पातु मां देवी झिण्टीरूपा वृकोदरी ।
सर्व्वदा पातु मां देवी स्वर्गे मर्त्त्ये रसातले ।।
सर्व्वास्त्रभूषिता देवी सर्व्वदेवप्रपूजिता ।
क्रीं क्रीं हुं हुं फट् फट् पाहि पाहि समन्तत: ।।

भापा टीका—'झिण्टी रूपा वृकोदरी' देवी विवाद में, कलह में, अग्निमध्य में तथा रण मध्य में मेरी सदैव रक्षा करें। 'सव देवताओं से पूजित समस्त अस्त्रों से विभूषित देवी' मेरी स्वर्ग, मर्त्य तथा रसातल में रक्षा करें। 'क्रीं क्रीं हुं हुं फट् फट्' यह क्रीं बीज मेरी सब ओर से रक्षा करे।

करालां घोरदशना भीमनेत्रा वृकोदरी।
अट्टहासा महाभागा विघूर्णितत्रिलोचना॥
लम्बोदरी जगद्धात्री डाकिनी योगिनीयुता।
लज्जारूपा योनिरूपा विकटा देवपूजिता॥
पातुमां चण्डी मातंगी ह्यु ग्रचण्डा महेश्वरी॥

भापा टीका—"महा कराल घोर दाँतों वाली भयंकर नेत्रों वाली तथा वृकोदरी, जोर से हंसने वाली, महाभागा, घूर्णित तीन नेत्रों वाली, लम्बायमान उदर वाली, जगन्माता, डाकिनी और योगिनियों से युक्त, लज्जारूपा, योनिरूपा, विकटा, देवताओं से पूजित, उग्रचण्डा महेश्वरी मातंगी मेरी रक्षा करें।"

जले स्थले चान्तरिक्षे तथा च शत्रुमध्यतः।
सर्व्वतः पातु मां देवी खड्गहस्ता जयप्रदा॥"

भाषा टीका—"खड्गधारिणी, विजयप्रदा देवी जल में, स्थल में, अन्तरिक्ष में, शत्रुओं के बीच तथा अन्यान्य सभी स्थानों में मेरी रक्षा करें।"

कवचं प्रपठेद्यस्तु धारयेच्छृणुयादपि।
न विद्यते भयं तस्य त्रिषु लोकेषु पार्व्वति॥

भाषा टीका—हे पार्वती! जो मनुष्य इस कवच को पढ़ते हैं, धारण करते हैं अथवा सुनते हैं, उन्हें तीनों लोकों में कहीं भी भय नहीं होता।

महाविद्या-साधन

अब 'महाविद्या' साधन के मन्त्र, ध्यान, यन्त्र, जप-होम स्तव एवं कवच का वर्णन किया जाता है।

महाविद्या-मन्त्र

हुं श्रीं ह्लीं वज्रवैरोचनीये हुँ हुँ फट् स्वाहा ऐं।

इस मन्त्र के द्वारा 'महाविद्या' की पूजा तथा जप आदि करना चाहिए।

महाविद्या ध्यान

महाविद्या के ध्यान की विधि मूल-संस्कृत में नीचे दी जा रही है। बाद में उसका भाषा अर्थ भी दे दिया गया है। साधक को चाहिए कि वह ध्यान करते समय मूल-संस्कृत का ही प्रयोग करे।

चतुर्भुजां महादेवीं नागयज्ञोपवीतिनीम्।
महाभीमां करालास्यां सिद्धविद्याधरैर्युताम्॥
मुण्डमालावलीकीर्णां मुक्तकेशीं स्मिताननाम्।
एवं ध्यायेन्महादेवीं सर्वकामार्थसिद्धये॥

भाषा टीका—'महाविद्या देवी चार भुजाओं वाली, सर्प का यज्ञोपवीत धारण करने वाली, महाभीमा, कराला, सिद्ध और विद्याधरों से युक्त, मुण्ड-माला से अलंकृत, बिखरे हुए केशों वाली तथा स्मित मुखी हैं।—सर्वकाम-अर्थ की सिद्धि के लिए महादेवी का ध्यान इसी प्रकार करना चाहिए।

उक्त विधि से महाविद्या देवी का ध्यान करे।

महाविद्या-पूजन का यन्त्र

महाविद्या पूजन का यन्त्र भुवनेश्वरी-पूजन के यन्त्र की भाँति ही है। भुवनेश्वरी पूजन के मन्त्र का वर्णन आगे भुवनेश्वरी साधन की विधि में किया गया है। साधकों को चाहिए कि वे उक्त स्थान पर यन्त्र को देख लें।

महाविद्या के निमित्त जप-होम

महाविद्या के निमित्त जप-होम की विधि भी भुवनेश्वरी के जप-होम की विधि की भाँति ही है अतः उसे आगे वर्णित भुवनेश्वरी-साधन में देख लेना चाहिए।

महाविद्या-स्तव

मूलसंस्कृत में महाविद्या-स्तव इस प्रकार है—

श्री शिव उवाच—

दुर्ल्लभं तारिणीमार्गं दुर्ल्लभं तारिणीपदम्।
मन्त्रार्थं मन्त्र चैतन्यं दुर्ल्लभं शवसाधनम्॥
श्मशानसाधनं योनिसाधनं ब्रह्मसाधनम्।
क्रियासाधनकं भक्तिसाधनं मुक्तिसाधनम्॥
तव प्रसादाद्देवेशि सर्व्वाः सिध्यन्ति सिद्धयः।

भाषा टीका—"श्री शिवजी ने कहा—"तारिणी की उपासना का मार्ग अत्यन्त दुर्लभ है, इसी प्रकार उनके पद की प्राप्ति भी दुर्लभ है। उनका मन्त्रार्थज्ञान, मन्त्र-चैतन्य, शव-साधन, श्मशान-साधन, योनि-साधन, ब्रह्म-साधन, क्रिया-साधन, भक्ति-साधन तथा मुक्ति-साधन ये सब भी दुर्लभ हैं। परन्तु हे देवेशि! तुम जिसके ऊपर प्रसन्न होती हो, उसे सब विषयों में सिद्धि प्राप्त हो जाती है।"

नमस्ते चण्डिके चण्डि चण्ड मुण्ड विनाशिनी।
नमस्ते कालिके काल महाभय विनाशिनी॥

भाषा टीका—"हे चण्डिके! तुम प्रचण्ड स्वरूपिणी हो। तुम्हीं ने चण्ड-मुण्ड का वध किया है। तुम काल के भय को नष्ट करने वाली हो। हे कालिके! तुम्हें नमस्कार है।"

शिवे रक्ष जगद्धात्रि प्रसीद हरवल्लभे।
प्रणमामि जगद्धात्रीं जगत्पालनकारिणीम्॥

जगत्क्षोभकरीं विद्यां जगत्सृष्टिविधायिनीम् ।
करालां विकटां घोरां मुण्डमालाविभूषिताम् ॥
हरार्च्चितां हराराध्यां नमामि हरवल्लभाम् ।
गौरीं गुरुप्रियां गौरवर्णालंकारभूषिताम् ॥
हरिप्रियां महामायां नमामि ब्रह्मपूजिताम् ॥

भाषा टीका—"हे शिवे ! हे जगद्धात्रि ! हे हरवल्लभे ! मेरी संसार के भय से रक्षा करो। तुम्हीं जगत् की माता और तुम्हीं अनन्त जगत् की रक्षा करती हो। तुम्हीं जगत् का संहार करने वाली और तुम्हीं उत्पन्न करने वाली हो। तुम्हारी मूर्ति महा भयंकर है। तुम मुण्डमाला से अलंकृत, कराला और विकटाकार हो। तुम्हीं हर से सेवित, हर से पूजित और हरप्रिया हो। तुम्हारा वर्ण गौर है। तुम्हीं गुरु-प्रिया और श्वेत अलंकारों से विभूषित हो। तुम्हीं विष्णु प्रिया और महामाया हो। ब्रह्मा तुम्हारी हीं पूजा करते हैं। तुम्हें नमस्कार करते हैं।"

सिद्धां सिद्धेश्वरीं सिद्धविद्याधरगणैर्युताम् ।
मन्त्रसिद्धिप्रदां योनिसिद्धिदां लिंगशोभिताम् ॥
प्रणमामि महामायां दुर्गां दुर्गतिनाशिनीम् ॥

भाषा टीका—"तुम्हीं सिद्धा और सिद्धेश्वरी हो। तुम्हीं सिद्ध और विद्याधरों से वेष्टित, मन्त्रसिद्ध-दायिनी, योनिसिद्धि-दायिनी लिंग-शोभिता, महामाया, दुर्गा और दुर्गतिनाशिनी हो। तुम्हें नमस्कार है।"

उग्रामुग्रमयीमुग्रतारामुग्रगणैर्युताम् ।
नीलां नीलघनश्यामां नमामि नीलसुन्दरीम् ॥
श्यामांगीं श्यामघटितां श्यामवर्णविभूषिताम् ।
प्रणमामि जगद्धात्रीं गौरीं सर्व्वार्थसाधिनीम् ॥

भाषा टीका—"तुम उग्रमूर्त्ति, उग्रगणों से युक्त, उग्रतारा, नील-मेघ के समान श्यामवर्ण तथा नील सुन्दरी हो। तुम्हें नमस्कार है। तुम्हीं श्यामलांगी, श्याम वर्ण से विभूषित, जगद्धात्री, सब कार्यों का साधन करने वाली तथा गौरी हो। तुम्हें नमस्कार है।

विश्वेश्वरीं महाघोरां विकटां घोरनादिनीम्।
आद्यामाद्यगुरोराद्यामाद्यनाथप्रपूजिताम् ॥
श्री दुर्गां धनदामन्नपूर्णां पद्मां सुरेश्वरीम्।
प्रणमामि जगद्धात्रीं चन्द्रशेखरवल्लभाम् ॥

भाषा टीका—"तुम विश्वेश्वरी, महाघोराकार, विकट मूर्ति तथा घोर शब्द करने वाली हो। तुम्हीं सबकी आद्या, आदि गुरु महेश्वर की भी आद्या हो। आद्यनाथ महादेव तुम्हारी निरन्तर पूजा करते हैं। तुम्हीं धन देने वाली, अन्नपूर्णा तथा पद्मा स्वरूपिणी हो। तुम्हीं देवताओं की स्वामिनी, जगत् की माता तथा हर-वल्लभा हो। तुम्हें नमस्कार है।"

त्रिपुरासुन्दरीं बालामबलागणभूषिताम्।
शिवदूतीं शिवाराध्यां शिवध्येयां सनातनीम् ॥
सुन्दरीं तारिणीं सर्व्वशिवागण विभूषिताम्।
नारायणीं विष्णुपूज्यां ब्रह्मविष्णुहरप्रियाम् ॥

भाषा टीका—"हे देवि! तुम त्रिपुरा सुन्दरी, बाला, अबलागणों से विभूषित, शिवदूती, शिव की आराध्या, शिव से ध्यान की हुई, सनातनी, सुन्दरी, तारिणी, समस्त शिवगणों से मण्डित, नारायणी, विष्णुपूज्या तथा ब्रह्मा, विष्णु और हर की प्रिया हो।"

सर्वसिद्धिप्रदां नित्यामनित्यगुणवर्जिताम्।
सगुणां निर्गुणां ध्येयामर्च्चितां सर्व्वसिद्धिदाम् ॥
दिव्यां सिद्धिप्रदां विद्यां महाविद्यां महेश्वरीम्।

महेशभक्तां माहेशीं महाकालप्रपूजिताम् ॥
प्रणमामि जगद्धात्रीं शुम्भासुरविमर्द्धिनीम् ॥

भाषा टीका—"तुम्हीं समस्त सिद्धियों की दाता, नित्या, अनित्य गुणों से रहित, सगुण, निर्गुण, ध्यान के योग्य, अर्चिता, सर्वसिद्धि प्रदाता, दिव्या, सिद्धिदाता, विद्या, महाविद्या, महेश्वरी, महेश की भक्तिवाली, माहेशी, महाकाल से पूजित, जगद्धात्री तथा शुंभासुर का मर्दन करने वाली हो। तुम्हें नमस्कार है।

रक्तप्रियां रक्तवर्णां रक्तबीज विमर्द्दिनीम्।
भैरवीं भुवनांदेवी लोलजिह्वां सुरेश्वरीम् ॥
चतुर्भुजां दशभुजामष्टादशभुजां शुभाम्।
त्रिपुरेशीं विश्वनाथ प्रियां विश्वेश्वरीं शिवाम् ॥
अट्टहासामट्टहासप्रियां धूम्रविनाशिनीम्।
कमलां छिन्नमालाञ्च मातंगीं सुरसुन्दरीम् ॥
षोडशीं विजयां भीमां धूम्राञ्च बगलामुखीम्।
सर्व्वसिद्धिप्रदां सर्व्वविद्यामन्त्रविशोधिनीम् ॥
प्रणमामि जगत्तारां साराञ्च मन्त्रसिद्धये ॥

भाषा टीका—तुम रक्त से प्रेम करने वाली, रक्त वर्णा, रक्त बीज का विनाश करने वाली, भैरवी, भुवनादेवी, लाल जिह्वा, सुरेश्वरी, चतुर्भुजा, कभी दशभुजा, कभी अष्टादश भुजा, त्रिपुरेशी, विश्वनाथ, प्रिया, विश्वेश्वरी, शिवा, अट्टहास से युक्त, उच्चहास्य से प्रीति करने वालो, धूम्रासुर, विनाशिनी, कमला, छिन्नमस्ता, मातंगी सुरसुन्दरी, षोडशी, विजया, भीमा, धूम्रा, बगलामुखी, सर्वसिद्धि-दायिनी, सर्व विद्या, सब मन्त्रों का शोधन करने वाली, सारभूत तथा जगत्तारिणी हो। मैं मन्त्र सिद्धि के लिए तुम्हें नमस्कार करता हूँ।

इत्येवञ्च वरारोहे स्तोत्रं सिद्धिकरं परम्।
पठित्वा मोक्षमाप्नोति सत्यं वै गिरिनन्दिनि ॥

भाषा टीका—हे वरारोहे ! हे गिरिनन्दिनी ! यह स्तोत्र परम सिद्धि को देने वाला है। इसके पाठ करने से अवश्य ही मोक्ष प्राप्त होती है।

मंगलवार की चतुर्दशी तिथि में, वृहस्पतिवार की अमावस्या तिथि में तथा शुक्रवार के रात्रिकाल में इस स्तुति को पढ़ने से मोक्ष प्राप्त होती है। इस स्तव का तीन पक्ष (पखवाड़े) तक पाठ करने से मन्त्र सिद्धि होती है। इसमें सन्देह नहीं।

चतुर्दशी की रात्रि में तथा शनिवार और मंगलवार की सन्ध्या के समय भी इस स्तव का पाठ करने से मन्त्र सिद्धि होती है।

जो पुरुष केवल इस स्तोत्र का ही पाठ करता है। वह अनुत्तमा मन्त्र सिद्धि को प्राप्त करता है। इस स्तव पाठ के फल से चण्डिका-कुल-कुण्डलिनी नाड़ी जाग्रत होती है।

महाविद्या कवच

अब महाविद्या के कवच को मूल-संस्कृत में नीचे दिया जा रहा है। बाद में उसका भाषा अर्थ भी दे दिया गया है। साधक को चाहिए कि वह पाठ करते समय मूल-संस्कृत का ही प्रयोग करे।

कवच इस प्रकार है—

भैरव उवाच।

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि कवचं सर्वसिद्धिदम्।
आद्याया महाविद्यायाः सर्व्वाभीष्टफलप्रदम्॥

भाषा टीका—भैरव ने कहा—हे देवि, सुनो ! मैं महाविद्या का कवच कहता हूँ। यह समस्त अभीष्ट फलों को देने वाला है।

कवचस्य ऋषिर्देवि सदाशिव इतीरितः।
छन्दोऽनुष्टुब् देवता च महाविद्या प्रकीर्तिता॥
धर्मार्थ काममोक्षाणां विनियोगश्च साधने।

भाषा टीका—हे देवि ! इस कवच के ऋषि सदाशिव हैं। छन्द अनुष्टुप है, देवता महाविद्या है तथा धर्म, अर्थ, काम और मोक्षरूप फल के साधन में इसका विनियोग है।

ऐंकारः पादशीर्षे मां कामबीजं तथा हृदि ।
रमा बीजं सदापातु नाभौ गुह्ये च पादयोः ॥

भाषा टीका—ऐं बीज मेरे मस्तक की, क्लीं बीज हृदय की एवं श्रीं बीज मेरी नाभि, गुह्य तथा चरण की रक्षा करे।

ललाटे सुन्दरी पातु उग्रा मां कण्ठदेशतः ।
भगमाला सर्व्वगात्रे लिंगे चैतन्यरूपिणी ॥

भाषा टीका—सुन्दरी मेरे मस्तक की, उग्रा कण्ठ की, भगमाला सम्पूर्ण शरीर की एव चैतन्य रूपिणी मेरे लिंग—स्थान की रक्षा करे।

पूर्वे मां पातु वाराही ब्रह्माणी दक्षिणे तथा ।
उत्तरे वैष्णवी पातु चेन्द्राणी पश्चिमेऽवतु ॥
माहेश्वरीं च आग्नेय्यां नैर्ऋते कमला तथा ।
वायव्यां पातु कौमारी चामुण्डा हीशकेऽवतु ॥

भाषा टीका—पूर्व दिशा में वाराही, दक्षिण में ब्रह्माणी, उत्तर में वैष्णवी, पश्चिम में इन्द्राणी, अग्नि कोण में माहेश्वरी, नैर्ऋत कोण में कमला, वायुकोण में कौमारी तथा ईशान कोण में चामुण्डा मेरी रक्षा करे।

इद कवचमज्ञात्वा महाविद्याञ्च यो जपेत् ।
न फलं जायते तस्य कल्प कोटि शतैरपि ॥

भाषा टीका—इस कवच को जाने बिना जो मनुष्य महाविद्या के मन्त्र का जप करता हैं, उसे सौ करोड़ कल्प में भी फल की प्राप्ति नहीं होती।

भुवनेश्वरी साधन

अब भुवनेश्वरी-साधन के मन्त्र, ध्यान, यन्त्र, जप-होम, स्तोत्र एवं कवच का वर्णन किया जाता है।

भुवनेश्वरी मन्त्र

(१) ह्रीं।

(२) ऐं ह्रीं।

(३) ऐं ह्रीं ऐं।

भुवनेश्वरी के साधन के लिए मन्त्र का स्वरूप उक्त तीन प्रकार का कहा गया है। इसमें से किसी भी एक मन्त्र के द्वारा भुवनेश्वरी की पूजा तथा जप आदि करना चाहिए।

भुवनेश्वरी ध्यान

भुवनेश्वरी के ध्यान की विधि मूल-संस्कृत में नीचे दी जा रही है। बाद में उसका भाषा-अर्थ भी दे दिया गया है। साधक को चाहिए कि वह ध्यान करते समय मूल-संस्कृत का ही प्रयोग करे।

उदद्यहद्युतिमिन्दु किरीटां
तुंगकुचां नयनत्रययुक्ताम्।
स्मेरमुखीं वरदां कुश पाशा
भीतिकरां प्रभजेद् भुवनेशीम् ॥

भाषा टीका—भुवनेश्वरी देवी के शरीर की कान्ति उदीयमान सूर्य की भाँति है। उनके ललाट में अर्द्ध चन्द्र और मस्तक पर मुकुट है। उनके दोनों स्तन उन्नत हैं। उनके तीन नेत्र हैं। उनका मुख स्मित-हास्य पूर्ण है और उनके चारों हाथों में वर-मुद्रा, अंकुश, पाश तथा अभयमुद्रा हैं। एसी भुवनेश्वरी देवी का मैं ध्यान करता हूँ।

इस विधि से भुवनेश्वरी देवी का ध्यान करना चाहिए।

भुवनेश्वरी-पूजन का यन्त्र

प्रथम षट्कोण अंकित करके उसके बाहर गोल वृत्त तथा अष्ट-दल पद्म लिखकर, उसके बाहर चतुर्द्वार एवं चतुरस्र अंकित करके यन्त्र का निर्माण करे। यन्त्र को अष्टगंध द्वारा भोजपत्र पर लिखना चाहिए।

भुवनेश्वरी के निमित्त जप-होम

बत्तीस लाख की संख्या में जप करने से मन्त्र का पुरश्चरण होता है। तीन लाख बत्तीस सहस्र की संख्या में होम करना चाहिए। पीपल, गूलर, पिलखन और बरगद की समिधा तथा तिल, श्वेत सरसों और खीर—इन आठ द्रव्यों में घृत, मधु और शर्करा मिला कर होम करना चाहिए।

भुवनेश्वरी-स्तव

मूल-संस्कृत में भुवनेश्वरी-स्तव इस प्रकार है—

अथानन्दमयीं साक्षाच्छब्द ब्रह्म स्वरूपिणीम्।
ईडे सकल सम्पत्त्यै जगत्कारणमम्बिकाम्॥

भाषा टीका—जो साक्षात् शब्द-ब्रह्म-स्वरूपिणी, जगत्कारण एवं जगत्राता है—समस्त सम्पत्तियों के लाभ के निमित्त मैं उन्हीं आनंद-मयी भुवनेश्वरी की स्तुति करता हूँ।

आद्यामशेष जननीमरविन्दयोने
र्विष्णोः शिवस्य च वपुः प्रतिपादयित्रीम्।
सृष्टि स्थिति क्षयकरीं जगतां त्रयाणां
स्तुत्वा गिरं विमलयाम्यहमम्बिके त्वाम्॥

भाषा टीका—हे माता! तुम जगत् की आद्या, ब्रह्माण्ड को उत्पन्न करने वाली, ब्रह्मा, विष्णु और शिव को उत्पन्न करने वाली तथा तीनों

जगत् की सृष्टि, स्थिति एवं लय करने वाली हो। मैं तुम्हारी स्तुति और करके अपनी वाणी को पवित्र करता हूँ।

पृथ्व्या जलेन शिखिना मरुताम्बरेण
होत्रेन्दुना दिनकरेण च मूर्तिभाजः।
देवस्य मन्मथरिपोरपि शक्तिमत्ता
हे तुस्त्वमेव खलु पर्वतराजपुत्रि ॥

भाषा टीका—हे पर्वतराज पुत्री ! जो पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, यजमान, सोम तथा सूर्य मूर्ति में विराजमान हैं, जिन्होंने कामदेव के शरीर को भस्म किया था, उन महादेव की भी त्रैलोक्य संहार-शक्ति तुम्हारे ही द्वारा सम्पन्न हुई है।

त्रिस्रोतसः सकल लोक समर्च्चिताया
वैशिष्टयकारणमवैमि तदेव मातः।
त्वत्पादपंकज पराग पवित्रितासु
शम्भोर्जटासु नियतं परिवर्तनं यत् ॥

भाषा टीका—हे माता ! तुम्हारे चरण कमलों की रेणु से पवित्र हुई, शिव के मस्तक के जटाजूट में तीन धाराओं वाली भागीरथी सदैव सुशोभित रहती है इसीलिए सब लोग उनकी पूजा करते हैं और इसी कारण वे सुन्दरी प्रधानता को प्राप्त हुई हैं।

आनन्दयेत्कुमुदिनीमधिपः कलानां
नान्यामिनः कमलिनीमथ नेत-रांवा।
एकस्य मोदनविधौ परमेकमीष्टे
त्वन्तु प्रपञ्चमभिनन्दयसि स्वदृष्टया ॥

भाषा टीका—हे जननी ! जिस तरह कलानाथ चन्द्रमा एकमात्र कुमुदिनी को ही आनन्दित करते हैं, अन्य किसी को नहीं तथा सूर्य भी एकमात्र कमलिनी को ही प्रफुल्लित करते हैं, अन्य किसी को नहीं—

इससे ज्ञात होता है कि जिस तरह एक-एक द्रव्य को आनन्दित करने के लिए एक-एक द्रव्य ही निर्दिष्ट हुआ है, उसी तरह इस सम्पूर्ण जगत् को एकमात्र तुम्हीं अपने दृष्टि-निक्षेप से आनन्द प्रदान करती हो।

आद्याप्यशेषजगतां नवयौवनासि
शैलाधिराजतनयाप्यतिकोमलासि ।
त्रय्याः प्रसूरपि तया न समीक्षितासि
ध्येयापि गौरि मनसो न पथि स्थितासि ॥

भाषा टीका—हे जननी ! तुम सब जगत् को आदिभूत होकर भी निरन्तर नवयुवती हो तथा पर्वतराज की पुत्री होकर भी अति कोमला हो। तुम्हीं वेद को प्रकट करने वाली हो। वेद तुम्हारे तत्त्व का निरूपण करने में असमर्थ हैं। हे गौरी ! यद्यपि तुम ध्यान-गम्य हो, परन्तु फिर भी मन में स्थित नहीं होती हो ।

आसाद्य जन्ममनुजेषु चिरा-द्दु-रापं
तत्रापि पाटवमवाप्य निजेन्द्रियाणाम् ।
नाभ्यर्च्चयन्ति जगतां जनयित्रि ये त्वां
निःश्रेणिकाग्रमधिरुह्य पुनः पतन्ति ॥

भाषा टीका—हे जगमाता ! जो प्राणी दुर्लभ मनुष्य-जन्म धारण कर, इन्द्रियों की सामर्थ्य को पाकर भी तुम्हारी पूजा नहीं करते, वे मुक्ति की सीढ़ी पर चढ़कर भी गिर जाते हैं ।

कर्पूरचूर्णहिमवीरिविलोडितेन
ये चन्दनेन कुसुमैश्च सुजातगन्धैः ।
आराधयन्ति हि भवानि समुत्सुकास्त्वां
ते खल्वशेषभुवनादिभुवं प्रथन्ते ॥

भाषा टीका—"हे भवानी ! जो प्राणी कर्पूर के चूर्ण संयुक्त शीतल जल में घिसे हुए चन्दन तथा सुगन्धित पुष्पों द्वारा, उत्कंठित

मन से तुम्हारी आराधना करते हैं, वे सब भुवनों के स्वामी होते हैं।"

आविश्य मध्यपदवीं प्रथमे सरोजे ।
सुप्ता हि राजसदृशी विरचय्य विश्वम् ।
विद्युल्लतावलयविभ्रममुद्वहन्ती ।
पद्मानि पञ्च विदलय्य समाश्नुवाना ॥

भाषा टीका—हे जननी ! तुम मूलाधार पत्र में सोये हुए सर्पराज की भाँति विराजित होकर विश्व की रचना करती हो तथा वहाँ से विद्युत् रेखा के समूह की भाँति क्रमानुसार ऊर्ध्व में स्थित पंचपद्म को भेद कर सहस्र दल की कर्णिका के मध्य में स्थित परमशिव के साथ संगत होती हो। यह विद्युत्-रेखा योग द्वारा जगती है।

तन्निर्गतामृतरसैरभिषिच्य गात्रं
मार्गेण तेन विलयं पुनरप्यवाप्ता
येषां हृदि स्फुरति जातु न ते भवेयु
र्म्मातर्महेश्वरकुटुम्बिनि गर्भभाजः

भाषा टीका—हे जननी ! हे गृहिणी ! तुम सहस्त्रदल कमल से निर्गतमान सुधारस से शरीर को अभिषिक्त करती हुई सुषुम्ना नाड़ी मार्ग में पुनः प्राप्त होकर लय हो जाती हो। जिस प्राणी के हृदय-कमल में तुम्हारा उदय नहीं होता, वह बारम्बार गर्भवास के दुःख को प्राप्त करता है।

आलम्बि कुन्तलभरामभिरामवक्त्रा-
मापीवरस्तनतटीं तनुवृत्तमध्याम् ।
चिन्ताक्षसूत्रकलशालिखिताढ्यहस्तां
मातर्नमामि मनसा तव गौरि मूर्तिम् ॥

भाषा टीका—"हे जननी ! तुम्हारे केश लम्बायमान हैं, तुम्हारा मुख अत्यन्त सुन्दर है। तुम्हारे स्तन उन्नत हैं तथा कटि प्रदेश पतला

है। तुम्हारी चारों भुजाओं में ज्ञान, मुद्रा, जपमाला, कलश और पुस्तक विद्यमान है। हे गौरी ! तुम्हारी ऐसी मूर्ति को मैं मन से नमस्कार करता हूँ।

अस्थाय योगमवजित्य च वैरिषट्क ।
मावध्य चेन्द्रियगणं मनसि प्रसन्ने ।
पाशांकुशाभयवराढ्यकरां सुवक्त्रा
मालोकयन्ति भुवनेश्वरि योगिनस्त्वाम् ॥

भाषा टीका—हे भुवनेश्वर ! योगीजन योगावलम्बन सहित काम-क्रोधादि शत्रुओं को जीतकर तथा इन्द्रियों को रोककर, प्रफुल्ल, मन से पाशांकुशाभय, वरयुक्त हाथ वाली तथा सुशोभनमुखी तुम्हारा दर्शन करते हैं।

उत्तप्तहाटकनिभां करिभिश्चतुर्भि-
रावर्तितामृतघटैरभिषिच्यमाना ।
हस्तद्वयेन नलिने रुचिरे वहन्ती
पद्मापि साभयकरा भवसि त्वमेव ॥

भाषा टीका—हे जननी ! जो तपे कंचन के समान वर्ण वाली, जलपूरितघट से चार हाथियों द्वारा अभिषिक्त, एक ओर के दो हाथों में अभय मुद्रा एवं वर मुद्रा को धारण करने वाली है, वह लक्ष्मीदेवी रूपा तुम्हीं हो।

अष्टाभिरुग्रविविधायुधवाहिनीभि-
र्दोर्वल्लरीभिरधिरुह्य मृगाधिराजम् ।
दूर्व्वादलद्युतिरमर्त्यविपक्षपक्षान्
न्यक्कुर्व्वंती त्वमसि देवि भवानि दुर्गे ॥

भाषा टीका—हे देवि भवानी ! जो सिंह पर आरूढ़ होकर अनेक प्रकार के अस्त्रों को धारण किये हुए अपने आठ हाथों से विराजमान

हैं। जो दूर्वादल के समान कान्ति वाली हैं जिन्होंने देवताओं को परास्त कर नीचे झुका दिया है, वह दुर्गास्वरूपिणी देवी तुम्हीं हो।

आविर्निदाघजलसीकरशोभिवक्त्रां
गुञ्जाफलेन परिकल्पितहारयष्टिम्।
रत्नांशुकामसितकान्तिमलं कृतान्त्वा
माद्या पुलन्दतरुणीमसकृत् स्मरामि ॥

भाषा टीका—जिनका मुख-मण्डल पसीने की बूँदों से सुशोभित है, जो घुंघची से निर्मित हारयष्टि को धारण किये हुए हैं, पत्रावली जिनके वस्त्र हैं, उन कृष्णकान्ति वाली, अनंग के वश में रहने वाली अथवा अनंग को वश में करने वाली आद्या पुलिन्द रमणी का मैं बारम्बार स्मरण करता हूँ।

हंसैर्गतिक्विणतनूपुरदूरकृष्टै
मूर्तैरिवाप्तवचनैरनुगम्यमानौ।
पद्माविवोर्ध्वमुखरूढसुजातनालौ
श्रीकण्ठपत्नि शिरसैव दधे तवांघ्री ॥

भाषा टीका—हे नीलकण्ठ की पत्नी! जिस तरह नूपुर के शब्द को सुनकर हंस दूर से खिंचे चले आते हैं, उसी तरह वेद भी तुम्हारे चरण कमलों का अनुगमन करते हैं। तुम्हारे चरण कमल श्रेष्ठ नीलकमल की भाँति सुखासीन हैं। मैं तुम्हारे उन्हीं दोनों चरणों को अपने मस्तक पर धारण करता हूँ।

द्वाभ्यां समीक्षितुमतृप्तिमितेन दृग्भ्या-
मुत्पाद्यता त्रिनयनं वृषकेतनेन।
सान्द्रानुरागभवनेन निरीक्ष्यमाणे
जंघे उभे अपि भवानि तवानतोऽस्मि ॥

भाषा टीका—हे भवानी! वृषभकेतन महादेव ने संभवतः अपने दोनों नेत्रों से तुम्हारे स्वरूप का दर्शन करके तृप्त न होने पर भी अपने

तीसरे नेत्र को उत्पन्न किया था तथा अत्यन्त प्रगाढ़ अनुराग सहित तुम्हारे जंघादेश का दर्शन किया था। अतः मैं तुम्हारी उन दोनों जंघाओं को नमस्कार करता हूँ।

ऊरू स्मरामि जितहस्तिकरावलेपौ
स्थौल्येन मार्द्दवतया परिभूतरम्भौ।
श्रोणी भवस्य सहनौ परिकल्प्य दत्तौ
स्तम्भाविवांगवयसा तव मध्यमेन।

भाषा टीका—हे जननी! तुम्हारी ऊरु हाथियों की सूंड़ का गर्व खर्व करने वाली हैं। उसने अपनी स्थूलता एवं कोमलता से केले के वृक्ष को परास्त किया है। तुम्हारे नितम्ब को देखने से ऐसा प्रतीत होता है, जैसे मध्य देश ने ही स्तम्भ स्वरूप में उनकी कल्पना की है—मैं उसका स्मरण करता हूँ।

श्रोण्यौ स्तनौ ज युग पत्प्रथयिष्यतोच्चै
र्बाल्यात्परेण वयसा परिकृष्टसारः।
रोमावलीविलसितेन विभाव्य मूर्त्ति
र्मध्यन्तव स्फुरति मे हृदयस्य मध्ये।,

भाषा टीका—हे देवि! तुम्हारे मध्य देश को देखने से ऐसा प्रतीत होता है, जैसे तुम्हारे नितम्ब और स्तन-मण्डल दोनों ने अपनी उच्चता विस्तार के हेतु मध्य देश के स र को आकर्षित कर लिया हो। इसलिए तुम्हारा मध्य देश अत्यन्त क्षीण हो गया। हे जननी! ऐसा तुम्हारा मध्यदेश मेरे हृदय में स्फुरित हो।

सख्यः स्मरस्य हरनेत्रहुताशभीरो
लावण्यवारि भरितं नवयौवनेन।
आपाद्य दत्तमिव पल्वलमप्रधृष्यं
नाभिं कदापि तव देवि न विस्मरेयम्॥

भाषा टीका—हे जननी ! शिव की नेत्राग्नि से भयभीत नवयुवती रति के लावण्य को जलपूर्ण करके क्षुद्र-सरोवर की भाँति तुम्हारी इस नाभि का कभी भी विस्मरण न हो ।

ईशोपगूहपिशुनं भसितं दधाने
काश्मीरकर्द्दममनु स्तनपंकजे ते ।
स्नानोत्थितस्य करिणः क्षणलक्षफेनौ
सिन्दूरितौ स्मरयतः समदस्य कुम्भौ ॥

भाषा टीका—हे जननी ! तुम्हारे कुच-कमलों से भस्म लगी हुई है । इससे प्रतीत होता है कि हर (शिव) ने तुम्हारा आलिंगन किया है । ये कुच-युगल पद्ममूल से अनुलिप्त होने के कारण स्नान से उठे हुए मदयुक्त हाथी के क्षणमात्र के लिए फेन से लक्षित गण्डस्थल का स्मरण कराते हैं ।

कण्ठातिरिक्तगलदुज्ज्वलकान्तिधारा
शोभौ भुजौ निजरिपोर्मकरध्वजेन ।
कण्ठग्रहाय रचितौ किल दीर्घपाशौ
मातर्म्मम स्मृतिपथं न विलंघयेताम् ॥

भाषा टीका—हे माता ! तुम्हारे दोनों हाथों को देखकर ऐसा प्रतीत होता है, जैसे कामदेव ने अपने शत्रु का कण्ठ ग्रहण करने के लिए दीर्घ पाश बनाया हो । मुझे तुम्हारे इन दोनों हाथों का भी विस्मरण न हो ।

नात्यायतं रचितकम्बुविलासचौर्य्यं
भूषाभरेण विविधेन विराजमानम् ।
कण्ठं मनोहरगुणं गिरिराजकन्ये
सञ्चिन्त्य तृप्तिमुपयामि कदापि नाहम् ॥

भाषा टीका—हे गिरिराज पुत्री ! जो आपात में अधिक दीर्घ

नहीं है, जो अनेक प्रकार के अलंकारों से अलंकृत है, जो मनोहर गुण वाला है, उस तुम्हारे कम्बु कण्ठ का चिन्तन करने से मुझे कभी भी तृप्ति न मिले।

अत्यायताक्षमभिजातललाटपट्टं
मन्दस्मितेन दरफुल्लकपोलरेखम्।
बिम्बाधरं वदनमुन्नतदीर्घनासं
यस्ते स्मरत्य सकृदम्ब स एव जातः॥

भाषा टीका—तुम्हारे मुखमण्डल में विशाल आकृति वाले नेत्र सुशोभित हैं। तुम्हार ललाट परम मनोहर दृष्टिगोचर होता है। तुम्हारे कपोल मृदुहास्य द्वारा प्रफुल्लित हैं तथा तुम्हारी नासिका दीर्घ एवं उन्नत है। जो प्राणी तुम्हारे ऐसे सुन्दर मुखमण्डल का स्मरण करते हैं, उन्हीं का जन्म सफल है।

आविस्तुपारकरलेखमनल्पगन्ध
पुष्पोपरि भ्रमदलिव्रजनिर्व्विशेषम्।
यश्चेतसा कलयते तव केशपाशं
तस्य स्वयं गलति देवि पुराश्रयाशः॥

भाषा टीका—हे देवी! तुम्हारा केशपाश भाल के चन्द्रमा की चाँदनी से प्रकाशित हैं। वे स्वल्पगन्धयुक्त पुष्प के ऊपर भ्रमण करने वाले भौंरे की समता कर रहे हैं। जो मनुष्य तुम्हारे इन केशपाशों का स्मरण करते हैं उनका सनातन संसार-पाश कट जाता है।

श्रुतिसुरचितयाकं धीमतां स्तोत्रमेतत्
पठयति य इह मर्त्यो नित्यमार्द्रान्तिरात्मा।
स भवति पदमुच्चैः संपदां पादनम्रः
क्षितिपमुकुटलक्ष्मी लक्षणानां चिराय॥

भाषा टीका—बुद्धिमानों के लिए श्रुति-सुखदायक इस स्तोत्र का जो मनुष्य प्रतिदिन आर्द्र चित्त से पाठ करते हैं, वे सम्पूर्ण सम्पत्तियों

के आधार होते हैं तथा उनके चरण कमलों में राजा लोग सदैव नत बने रहते हैं।

भुवनेश्वरी कवच

अब भुवनेश्वरी के कवच को मूल संस्कृत में नीचे दिया जा रहा है। बाद में उसका भाषा अर्थ भी दे दिया गया है। साधक को चाहिए कि यह पाठ करते समय केवल मूल-संस्कृत का ही प्रयोग करे।

कवच इस प्रकार है—

श्री शिव उवाच

पातकं दहनं नाम कवचं सर्व्वकामदम्।
श्रृणु पार्व्वति वक्ष्यामि तव स्नेहात्प्रकाशितम्॥

भाषा टीका—श्री शिव जी ने कहा—हे पार्वती! 'पातकदहन' नामक समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाले भुवनेश्वरी के कवच को मैं तुम्हारे स्नेह के कारण प्रकाशित करता हूँ। सुनो।

पातकं दहनस्यास्य सदाशिव ऋषिः स्मृतः।
छन्दोऽनुष्टुब् देवता च भुवनेशी प्रकीर्त्तिता॥
धर्मार्थकाममोक्षेषु विनियोग प्रकीर्त्तितः॥

भाषा टीका—इस कवच के ऋषि 'सदाशिव हैं', छन्द 'अनुष्टुप्' है, देवता 'भुवनेश्वरी' है और धर्मार्थ-काम-मोक्ष में इसका विनियोग है।

ऐं बीजं मे शिरः पातु ह्रीं बीजं वदनं मम।
श्रीं बीजं कटिदेशन्तु सर्वांगं भुवनेश्वरी।
दिक्षु चैव विदिक्ष्वीयं भुवनेशी सदावतु॥

भाषा टीका—'ऐं' बीज मेरे मस्तक की, 'ह्रीं' बीज मुख की, 'श्रीं' बीज कटि की तथा 'भुवनेश्वरी' सर्वांग की रक्षा करें। भुवनेशी 'देवी दिशा-विदिशाओं में सर्वत्र रक्षा करें।

अस्यापि पठनात्सद्यः कुबेरोऽपि धनेश्वरः ।
तस्मात्सदा प्रयत्नेन पठेयुर्म्मानवा भुवि ।।

भाषा टीका—इस कवच के पाठ के प्रसाद से कुबेर को तत्काल ही धनाधिप (देवताओं के कोषाध्यक्ष) पद की प्राप्ति हुई। अतः मनुष्य को चाहिए वह इस कवच का यत्नपूर्वक निरन्तर पाठ करता रहे।

भैरवी-साधन

अब 'भैरवी-साधन' के मन्त्र, ध्यान, यंत्र, जप-होम, स्तव एवं कवच का वर्णन किया जाता है।

भैरवी-मन्त्र

"हस्रैं हसकलरीं हसरौः"

इस मन्त्र के द्वारा 'भैरवी' की पूजा तथा जप आदि करना चाहिए।

भैरवी-ध्यान

'भैरवी' के ध्यान की विधि मूल-संस्कृत में नीचे दी जा रही है। बाद में उसका भाषा अर्थ भी दे दिया गया है। साधक को चाहिए कि वह ध्यान करते समय मूल-संस्कृत का ही प्रयोग करें।

उद्यद्भानुसहस्रकान्तिमरुणक्षौमां शिरोमालिकां ।
रक्तालिप्तपयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वरम् ।।
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्रक्तारविन्दश्रियं ।
देवीं बद्धहिमांशुरक्तमुकुटां वन्दे समन्दस्मिताम् ।।

भाषा टीका—"देवी के शरीर की कान्ति उदीयमान सूर्य की भाँति है। वे रक्तवर्ण-क्षौम वस्त्र धारण किए हुए हैं। उनके कण्ठ में मुण्डमाला है। उनके दोनों स्तन रक्त से लिप्त हैं। उनके चारों हाथों में जपमाला, पुस्तक, अभयमुद्रा एवं वरमुद्रा है। उनके ललाट पर

चन्द्रकला विराजित है। उनके तीनों नेत्र रक्त-कमल की भाँति हैं। वे मस्तक पर रत्न-मुकुट धारण किए हुए हैं तथा उनके मुख पर मृदु हास्य सुशोभित है।"

भैरवी-पूजन का यन्त्र

नवयोनिमय कर्णिका अंकित करके, उसके बाहर अष्टदल पद्म एवं उसके बाहर चतुर्द्वार तथा भूगृह अंकित करके यन्त्र का निर्माण करना चाहिए। मन्त्र को अष्टगंध से भोजपत्र पर लिखना चाहिए।

भैरवी के निमित्त जप-होम

दल लाख की संख्या में मन्त्र का जप करने से पुरश्चरण होता है तथा ढाक के फूलों से बारह सहस्र की संख्या में होम करना चाहिए।

भैरवी-स्तव

मूल संस्कृत में 'भैरवी-स्तव' इस प्रकार है—

स्तुत्याऽनया त्वां त्रिपुरे स्तोष्येऽभीष्टफलाप्तये।
यया व्रजन्ति तां लक्ष्मीं मनुजाः सुरपूजिताम्॥

भाषा टीका—"हे त्रिपुरे! मैं वांछित फल प्राप्त होने की इच्छा से तुम्हारा स्तवन करता हूँ। इस स्तव द्वारा मनुष्य गण देवताओं से पूजित लक्ष्मी को प्राप्त होते हैं।"

ब्रह्मादयः स्तुतिशतैरपि सूक्ष्मरूपां।
जानन्ति नैव जगदादिमनादिमूर्त्तिम्॥
तस्माद्वयं कुचनतां नवकुंकुमाभां।
स्थूलां स्तुमः सकलवाङ्मयमातृभूताम्॥

भाषा टीका—"हे जननी! तुम जगत् की आद्या हो। तुम्हारा आदि नहीं है, इसीलिए ब्रह्मादि देवतागण भी सैकड़ों स्तुति करके तुम सूक्ष्मरूपिणी को जानने में असमर्थ हैं। अर्थात् उनकी वाक्सम्पत्ति

ऐसी नहीं है, जो वे तुम्हारी स्तुति करने में समर्थ हो सकें। अतः हम नव-कुंकुम के समान कान्तिवाली वाक्य-रचना द्वारा तुम जननी स्वरूपिणी पुष्ट स्तनवाली की स्तुति करते हैं।"

सद्यः समुद्यतसहस्रदिवाकराभां ।
विद्याक्षसूत्रवरदाभयचिह्नहस्ताम् ॥
नेत्रोत्पलैस्त्रिभिरलंकृतवक्त्रपद्मां ।
त्वां हारभाररुचिरां त्रिपुरे भजामः ॥

भाषा टीका—"हे त्रिपुरे! तुम्हारे शरीर की कान्ति नवोदित सहस्र सूर्यों की भाँति समुज्ज्वल है। तुम अपने चारों हाथों में विद्या, अक्ष सूत्र, वर मुद्रा एवं अभय मुद्रा धारण किए हुए हो। तुम्हारे तीनों नेत्र कमलों से मुख कमल अलंकृत है। तुम्हारा कण्ठ हार के भार से सुशोभित है—ऐसे स्वरूप वाली तुम्हारा मैं भजन करता हूँ।"

सिन्दूरपूररुचिरं कुचभारनम्रं ।
जन्मान्तरेषु कृतपुण्यफलैकगम्यम् ॥
अन्योन्यभेद कलहाकुलमानसास्ते ।
जानन्ति किं जडधियस्तव रूपमम्ब ॥

भाषा टीका—"हे जननी! तुम्हारा रूप सिन्दूर की भाँति लाल वर्ण का है। तुम्हारा देहांश कुच-भार से झुका हुआ है। जिन लोगों ने जन्मान्तर में अत्यधिक पुण्य का संचय किया है, वे ही उस पुण्य के प्रभाव से तुम्हारे ऐसे रूप को देख पाने में समर्थ होते हैं। जो पुरुष निरन्तर पारस्परिक कलह से कुण्ठित चित्त वाले हैं, वे जड़मति पुरुष तुम्हारे ऐसे स्वरूप को किस प्रकार जान सकते हैं?"

स्थूलां वदन्ति मुनयः श्रुतयो गृणन्ति ।
सूक्ष्मां वदन्ति वचसामधिवासमन्ये ॥
त्वां मूलमाहुरपरे जगतां भवानि ।
मन्यामहे वयमपारकृपाम्बुराशिम् ॥

भाषा टीका—"हे भवानी ! मुनिगण तुम्हें 'स्थूल' कहकर वर्णन करते हैं। श्रुतियाँ तुम्हें स्थूल कहकर स्तुति करती हैं। कोई-कोई लोग तुम्हें वाक्य की अधिष्टात्री देवी कहते हैं तथा अपरापर अनेक विद्वान् पुरुष तुम्हें जगत् का मूल कारण बताते हैं। परन्तु मैं तो तुम्हें केवल मात्र दयासागरी ही समझता हूँ।"

चन्द्रावतंसकलितां शरदिन्दुशुभ्रां।
पञ्चाशदक्षरमयीं हृदि भावयन्ति॥
त्वां पुस्तकं जपवटीममृताढचकुम्भं।
व्याख्याञ्च हस्तकमलैर्द्धतीं त्रिनेत्राम्॥

भाषा टीका—"हे जननी ! तुम चन्द्राभूषण से विभूषित हो। तुम्हारे शरीर की कान्ति शरच्चन्द्र की भाँति समुज्ज्वल है। तुम्हीं पचास वर्णों वाली वर्णमाला हो। तुम्हारे चारो हाथों में पुस्तक, जपमाला, सुधापूर्ण कलश तथा व्याख्यानमुद्रा विद्यमान है। तुम्हीं त्रिनेत्रा हो। साधकगण इसी रूप से अपने हृदय-कमल में तुम्हारा ध्यान करते हैं।"

शम्भुस्त्वमद्रितनया कलितार्द्धभागो।
विष्णुस्त्वमन्य कमलापरिबद्धदेहः॥
पद्मोद्भवस्त्वमसि वागधिवासभूमिः।
येषां क्रियाश्च जगति त्रिपुरे त्वमेव॥

भाषा टीका—"हे जननी ! तुम्हीं अर्द्धनारीश्वर शम्भुरूप से सुशोभित हो। तुम्हीं कमलाश्लिष्टा विष्णुरूपिणी हो। तुम्हीं कमलयोनि ब्रह्मस्वरूपिणी हो। तुम्हीं वागधिष्ठात्री देवी हो और तुम्हीं ब्रह्मादिक की सृष्टि-क्रिया शक्ति भी हो।"

आकुञ्च्य वायुमवजित्य च वैरिषट्क-
मालोक्य निश्चलधियो निजनासिकाग्रम्॥

ध्यायन्ति मूर्ध्नि कलितेन्दुकलावतंसं ।
तद्रूपमम्ब कृतिनस्तरुणार्क मित्रम् ।।

भाषा टीका—"हे अम्ब ! विद्वान् पुरुष वायु-निरोधपूर्वक, काम-क्रोधादि छै शत्रुओं को जीतकर, अपनी नसिका के अग्रभाग को देखते हुए, चन्द्रभूषण तथा नवोदित सूर्य की भाँति तुम्हारे ही स्वरूप का सहस्रदल कमल में ध्यान धरते हैं ।"

त्वं प्राप्य मन्मथरिपोर्वपुरर्द्धभागं ।
सृष्टि करोषि जगतामिति वेदवादः ।।
सत्यं तदद्रितनये जगदेकमात ।
नोंचिदशेष जगतः स्थितिरेव न स्यात् ।।

भाषा टीका—"हे पर्वतराज पुत्री ! तुमने मदन-दहनकारी महादेव के शरीर के अर्द्धांश का अवलम्बन करके सम्पूर्ण जगत् को उत्पन्न किया है--वेदों में इस प्रकार का जो वर्णन है, वह सत्य ही प्रतीत होता है । हे विश्व जननी ! यदि एसा न होता तो इस जगत् की स्थिति कदापि सम्भव नहीं होती ।"

पूजां विधाय कुसुमैः सुरपादपानां ।
पीठे तवाम्ब कनका चलगह्वरेषु ।।
गायन्ति सिद्धवनिताः सह किन्नरीभि-
रास्वादितामृतरसारुणपद्मनेत्राः ।।

भाषा टीका—"हे जननी ! सिद्धों की पत्नियों ने किन्नरियों के साथ मिलकर आसव-रस पान किया था, इसलिए उनके नेत्र-कमलों ने लोहितवर्ण की कान्ति धारण की है—अब वे सब पारिजातादि सुरवृक्ष के पुष्पों से तुम्हारा पूजन करती हुई कैलाश पर्वत की कन्दराओं में तुम्हारे गुणों का गायन कर रही हैं ।"

विद्युद्विलासवपुषं श्रियमुद्वहन्तीं ।
यान्तीं स्ववासभवनाच्छिवराजधानीम् ।।

सौन्दर्य राशि कमलानि विकाशयन्तीं ।
देवीं भजे हृदि परामृतसिक्तगात्राम् ॥

भाषा टीका—"हे देवी ! जिसने विद्युत्-रेखा की भाँति दीप्तिमान् शरीर को धारण किया है, जो अत्यन्त शोभायुक्त है, जो अपने वासस्थान मूलाधार पद्म से सहस्रार कमल में जाते समय सुषुम्ना में स्थित पद्म समूह को विकसित करती है, जिसका शरीर परम अमृत से अभिषिप्त है, वह देवी तुम्हीं हो। मैं तुम्हारी आराधना करता हूँ।"

आनन्दजन्म भवनंभवनं श्रुतीनां ।
चैतन्यमात्रतनुमम्ब तवाश्रयामि ॥
ब्रह्मेशविष्णुभिरुपासितपादपद्मां ।
सौभाग्यजन्मवसतीं त्रिपुरे यथावत् ॥

भाषा टीका—"हे त्रिपुरे ! तुम्हारा शरीर आनन्द-भवन है। तुम्हरे शरीर से श्रुतियाँ उत्पन्न हुई हैं। यह शरीर चैतन्यमय है। ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव तुम्हारे चरण-कमलों की आराधना करते हैं। सौभाग्य भी तुम्हारे शरीर का आश्रय पाकर शोभित होता है। अतः मैं तुम्हारे ऐसे शरीर का आश्रय लेता हूँ।"

सर्व्वार्थिभावि भुवनं सृजतीन्दुरूपा ।
या तद्बिभर्त्ति पुनरर्कतनुः स्वशक्त्या ॥
ब्रह्मात्मिका हरति तत् सकलं युगान्ते ।
तां शारदां मनसि जातु न विस्मरामि ॥

भाषा टीका—"हे जननी ! जो चन्द्रमा रूप से भुवनों की सृष्टि सूर्य रूप से भुवनों का पालन तथा प्रलय काल में अग्नि रूप से भुवनों का विनाश करती हैं, उन शारदा देवी को मैं कभी न भूलूँ।"

नारायणीति नरकार्णवतारिणीति ।
गौरीति खेदशमनीति सरस्वतीति ॥
ज्ञानप्रदेति नयनत्रय भूषितेति ।
त्वामद्रिराजतनये विबुधा वदन्ति ॥

भाषा टीका—"हे पर्वतराज पुत्री ! साधक गण तुम्हारी नारायणी, नरकार्णवतारिणी, गौरी, खेद-शमनी, सरस्वती, ज्ञान-प्रदात्री तथा त्रिनयन-विभूषिता आदि अनेक रूपों में आराधना करते हैं।"

ये स्तुवन्ति जगन्मातः ।
श्लोकैर्द्वादशभिः क्रमात् ॥
त्वामनुप्राप्य वाक्सिद्धि ।
प्राप्नुयस्ते परां गतिम् ॥

भाषा टीका—"हे जगन्माता ! जो प्राणी इन बारह श्लोकों से तुम्हारी स्तुति करता है, वह तुम्हें प्राप्त करके वाक् सिद्धि पाता है तथा शरीरान्त के पश्चात् परमगति को प्राप्त करता है।"

भैरवी-कवच

अब भैरवी के कवच को मूल संस्कृत में नीचे दिया जा रहा है। बाद में उसका भाषा-अर्थ भी दे दिया गया है। साधक को चाहिए कि वह पाठ करते समय केवल मूल-संस्कृत का ही प्रयोग करे।

कवच इस प्रकार है—

भैरवी कवचस्यास्य सदाशिव ऋषिः स्मृतः ।
छन्दोऽनुष्टुब देवता च भैरवी भयनाशिनी ।
धर्मार्थ काम मोक्षेषु विनियोगः प्रकीर्त्तितः ॥

भाषा टीका—इस भैरवी कवच के ऋषि सदाशिव हैं, छन्द अनुष्टुप है, देवता भय-नाशिनी भैरवी है। धर्मार्थ काम मोक्ष की प्राप्ति के लिए इसका विनियोग कहा गया है।

हसरैं मे शिरः पातु भैरवी भयनाशिनी ।
हसकलरीं नेत्रञ्च हसरौश्च ललाटकम् ।
कुमारी सर्व्वगात्रे च वाराही उत्तरे तथा ।
पूर्व्वें च वैष्णवी देवी इन्द्राणी मम दक्षिणे ।
दिग्विदिक्षु सर्व्वत्रैवभैरवी सर्व्वदावतु ॥
इदं कवचमज्ञात्वा यो जपेद्भैरवीम् ।
कल्पकोटिशतेनापि सिद्धिस्तस्य न जायते ॥

भाषा टीका—हसरैं मेरे मस्तक की, हसकलरी नेत्रों की, हसरौः ललाट की तथा कुमारी सम्पूर्ण गात्र की रक्षा करें। वाराही उत्तर दिशा में, वैष्णवी पूर्व दिशा में, इन्द्राणी दक्षिण दिशा में तथा भैरवी दिशा-विदिशा में सर्वत्र सदैव रक्षा करें।

इस कवच को जाने बिना जो मनुष्य भैरवी मन्त्र का जप करता है, उसे करोड़ कल्प में भी सिद्धि प्राप्त नहीं हो पाती।

छिन्नमस्ता साधन

अब छिन्नमस्ता साधन के मन्त्र, ध्यान, यंत्र, जप-होम, स्तव एवं कवच का वर्णन किया जाता है।

छिन्नमस्ता मन्त्र

श्रीं ह्रीं क्लीं एं वज्रवैरोचनीये हुँ हुं फट् स्वाहा ।

इस मन्त्र से छिन्नमस्ता की पूजा तथा जप आदि करना चाहिए।

छिन्नमस्ता ध्यान

छिन्नमस्ता के ध्यान की विधि मूल-संस्कृत में नीचे दी जाती है। बाद में उसका भाषा अर्थ भी दे दिया गया है। परन्तु साधक को चाहिए कि वह ध्यान करते समय मूल संस्कृत का ही प्रयोग करे।

प्रत्यालीढपदां सदैव दधतीं छिन्नं शिरः कर्त्तृकां

दिग्वस्त्रां स्वकबन्ध शोणितसुधा धारां पिबन्तीं मुदा।
नागाबद्धशिरोमणिं त्रिनयनां हृद्युत्पलालंकृतां
रत्याँसक्तमनोभवोपरि दृढां ध्यायेज्जपासन्निभाम् ॥
दक्षे चातिसिता विमुक्तचिकुरा कर्तृस्तथा खर्परं
हस्ताभ्यां दधती रजोगुणभवा नाम्नापिसा वर्णिनी।
देव्याश्छिन्नकबन्धतः पतदसृग्धारां पिबन्तीं मुदा
नागाबद्धशिरोमणिर्म्मनुविदा ध्येया सदा सा सुरैः ॥
वामे कृष्णतनूस्तथैव दधती खंडग तथा खर्परं
प्रत्यालीढपदा कबन्धविगलद्रक्तं पिबन्ती मुदा।
सैषा या प्रलये समस्त भुवनं भोक्तुं क्षमा तामसी
शक्तिः सापि परात्परा भगवती नाम्ना परा डाकिनी ॥

भाषा टीका—छिन्नमस्ता देवी प्रत्यालीढ पदा हैं अर्थात वे युद्ध के हेतु सन्नद्ध चरण किये हुए—एक पाँव आगे और एक पीछे की ओर वीर-वेष से खड़ी हुई हैं। वे छिन्न मस्तक तथा खड़ग को धारण किये हुये है। वे देवी नग्न हैं तथा अपने छिन्न-मस्तक से निकली हुई शोणित धारा का पान कर रही हैं। वे मस्तक में सपर्बाद्ध मणि एवं तीन नेत्रों को धारण किये हैं। उनका वक्षस्थल कमलपुष्पों की माला से अलंकृत है। वे रति में आसक्त कामदेव के ऊपर दण्डायमान हैं। उनके शरीर की कान्ति जपा-पुष्प की भाँति रक्तवर्ण है। ऐसी देवी का मैं ध्यान करता हूँ।

देवी के दक्षिण भाग में श्वेत वर्ण वाली, खुले केशों वाली तथा कैंची और खर्पर धारिणी एक देवी हैं, उनका नाम वर्णिनी है। वे वर्णिनी देवी के छिन्न मस्तक से गिरती हुई रक्त-धारा का पान कर रही हैं तथा उनके मस्तक में नागबद्ध मणि है—देवतागण उनका सदव ध्यान करते रहते हैं।

देवी के वाम भाग में खड़ग, खर्पर धारिणी, कृष्णवर्णा एक अन्य

देवी हैं । इनका नाम डाकिनी है। ये भी देवी के छिन्न मस्तक से निकलती हुई रक्त-धारा का पान कर रही हैं। इनका दायां पाँव आगे की ओर तथा बायाँ पाँव पीछे की ओर स्थित है। ये प्रलय काल में सम्पूर्ण जगत् को भक्षण करने में समर्थ हैं। ये भी भगवती छिन्न-मस्ता की परात्परा शक्ति हैं।

छिन्नमस्ता ूजन का यन्त्र

छिन्नमस्ता पूजन का यन्त्र भैरवी पूजन के यन्त्र की भाँति ही है। अतः साधक को उसी का पूजन करना चाहिये।

छिन्नमस्ता के निमित जप होम

एक लाख की संख्या में मन्त्र का जप करने से पुरश्चरण होता हैं तथा उसका दशाँश होम करना चाहिए। होम की सामग्री भैरवी के होम की भाँति ही है।

छिन्नमस्ता स्तव

मूल-संस्कृत में छिन्नमस्ना स्तव इस प्रकार है—

नाभौ शुद्धसरोजरक्तविलसद्वन्धूकपुष्पारुणं
भास्वद्भास्करमण्डलंतदुदरे तद्योनिचक्रम्महत् ।
तन्मध्ये विपरीतमैथुनरतप्रद्युम्नतात् कामिनी
पृष्ठस्थां तरुणार्ककोटिविलसत्तेजःस्वरूपां शिवाम् ॥

भाषा टीका—नाभि में शुद्ध खिला हुआ कमल है, जिसके मध्य में बन्धूक पुष्प की भाँति रक्तवर्ण प्रदीप्त सूर्य-मण्डल है। उस सूर्य-मण्डल के मध्य बड़ा योनि चक्र है। उसके मध्य में विपरीत रति-क्रीड़ा में आसक्त कामदेव तथा रति विराजमान हैं। उन कामदेव तथा रति की पीठ पर प्रचण्ड चण्डिका (छिन्नमस्ता) स्थित हैं। वे करोड़ सूर्यों की भाँति तेजस्विनी एवं मंगलमयी हैं।

वामे छिन्नशिरोधरां तदितरे पाणौ महत्कर्तृकां
प्रत्यालीढपदाँ दिगन्तवसनामुन्मुक्तकेशव्रजाम् ।

छिन्नात्मीयशिर: समुल्लसदसृगधारां पिबन्ती परां
बालादित्यसमप्रकाशविलसन्नेत्रत्रयोद्भासिनीम् ।।

भाषा टीका—देवी के बायें हाथ में छिन्नमुण्ड है तथा दाये हाथ में भीषण कृपाण शोभित है। देवी अपने एक पाँव को आगे तथा दूसरे को पीछे की ओर किये हुये वीर वेष में स्थित हैं। वे दिशा रूपी वस्त्रों को धारण किये हुये हैं। उनके केश खुले हुये हैं। वे अपने ही मस्तक को काटकर उससे बहने वाली रक्त धारा का पान कर रही हैं। उनके तीनों नेत्र बाल सूर्य की भाँति प्रकाशित है।

वामादन्यत्र नालं बहु बहुलगलद्रक्तधाराभिरुच्चै:
पायन्तीमस्थिभूषां करकमल सत् कर्तृका मुग्ररूपाम् ।
रक्तामारक्तकेशीमपगतवसनाँ वर्णिनीमात्मशक्तिं
प्रत्यालीढोरुपादामरुणितनयनाँ योगिनीं योगनिद्राम् ।।

भाषा टीका—देवी के दक्षिण तथा वाम पार्श्व में निज शक्ति रूपा दो योगिनी विराज है। उनके दक्षिण भाग में स्थित योगिनी के हाथ में बड़ी कैंची है। उन योगिनी की मूर्ति उग्र है। उनके शरीर का वर्ण लाल है। केश भी रक्त वर्ण है। वे नग्न वेप तथा प्रत्यालीढ पद से स्थित हैं। उनके नेत्र लाल-लाल है। छिन्नमस्ता देवी उन्हें अपने शरीर से निकलती हुई रक्त-धारा का पान करा रही हैं।

दिग्वस्त्रां मुक्तकेशीं प्रलयघनघटाघोररूपां प्रचण्डां
दंष्ट्रादुष्प्रेक्ष्यवक्त्रोदरविवरलसल्लोलजिह्वाग्रभागाम् ।
विद्युल्लोलाक्षियुग्मां हृदयतट लसद्भोगिभीमां सुमूर्तिं
सद्यश्छिन्नात्मकण्ठप्रगलितरुधिरै डाकिनी वर्द्धयन्तीम् ।।

भाषा टीका—जो योगिनी देवी के वाम भाग में स्थित हैं, वे नग्न तथा खुले केश वाला हैं। उनकी मूर्ति प्रलयकालीन मेघ की भाँति भयानक है। वे प्रचण्ड स्वरूपा हैं। उनका मुखमण्डल दाँतों के कारण दुर्निरीक्ष्य हो रहा है। ऐसे मुख में उनकी चलायमान जीभ शोभित

हो रही है। उनके तीनों नेत्र बिजली की भाँति चंचल हैं। उनके हृदय पर सर्प विराजमान हैं। उनका स्वरूप अत्यन्त भयंकर है। छिन्नमस्ता देवी उन डाकिनी को भी अपने छिन्न-कण्ठ के रक्त से वर्द्धित कर रही हैं।

ब्रह्मेशानाच्युताद्यैः शिरसि विनिहिता मंदपादारविन्दा
मात्मज्ञै र्योगिमुख्यैः सुनिपुणमनिशं छिन्तिता चिन्त्यरूपाम्
संसारे सारभूतां त्रिभुवन जननी छिन्नमस्तां प्रशस्ता
मिष्टां तामिष्टदात्रीं कलिकलुषहरां चेतसा चिन्तयामि ।

भाषा टीका—ब्रह्मा, शिव तथा विष्णु आदि आत्मज्ञ योगीन्द्र गण उन छिन्नमस्ता देवी के पदारविन्दों को अपने मस्तक पर धारण करते हैं तथा प्रतिदिन उनके अचिन्त्यरूप का निरन्तर चिन्तवन करते रहते हैं। वे ही संसार में सारभुत वस्तु है। वे देवी तीनों लोकों को उत्पन्न करने वाली तथा मनोरथों को सिद्ध करने वाली हैं। इस कलिकाल में कलि के पापों को हरने वाली उन छिन्नमस्ता देवी का मैं अपने मन में स्मरण करता हूँ।

उत्पत्तिस्थिति संहृतीर्घटयितुं धत्ते त्रिरूपां तनु
त्रैगुण्याज्जगतो मदीय विकृति ब्रह्माच्युतः शूलभृत् ।
तामाद्यां प्रकृतिं स्मरामि मनसा सर्व्वार्थ संसिद्धये
यस्याः स्मेरपदारविन्द युगले लाभं भजन्तेऽमराः ॥

भाषा टीका—वे देवी संसार की उत्पत्ति। स्थिति एवं विनाश के निमित्त ब्रह्मा, विष्णु तथा रुद्र—इन तीन स्वरूपों को धारण करती है। देवतागण उनके प्रस्फुटित कमल की भाँति दोनों चरणों का निरन्तर भजन करते रहते हैं। मैं सम्पूर्ण अर्थों की सिद्धि के हेतु उन आद्या प्रकृति छिन्नमस्ता देवी का अपने मन में चिन्तन करता हूँ।

अपि पिशितपरस्त्री योगपूजा परोऽहं
बहुविधजडभावारम्भ सम्भावितोऽहम् ।

पशुजनविरतोऽहं भैरवी संस्थितोऽहं
गुरुचरणपरोऽहं भैरवोऽहं शिवोऽहम् ॥

"मैं सदैव मद्य-मांस एवं पर-स्त्री में आसक्त तथा योग-परायण हूँ। मैं जगदम्बा के चरण कमलों में संलिप्त होकर बाह्य जगत् में रहता हुआ जड़भावापन्न हूँ। मैं पशुभावापन्न साधक के अंग से भिन्न हूँ। मैं सदा भैरवीगणों के मध्य में स्थित हूँ। मैं भैरव स्वरूप हूँ तथा मैं ही शिव-स्वरूप हूँ।"

इदं स्तोत्रं महापुण्यं ब्रह्मणा भाषितं पुरा।
सर्व्वसिद्धिप्रदं साक्षान्महापातकनाशनम् ॥

भाषा टीका—"इस महापुण्यदायक स्तोत्र को पहले ब्रह्माजी ने कहा है। यह स्तोत्र सम्पूर्ण सिद्धियों को देने वाला है तथा बड़े-बड़े पातक एवं उप-पातकों का नाश करता है।"

यः पठेत् प्रातरुत्थाय देव्याः सन्निहितोऽपि वा।
तस्य सिद्धिर्भवेद् देवि वाञ्छितार्थ प्रदायिनी ॥

भाषा टीका—"हे देवि! जो मनुष्य प्रातःकाल के समय शय्या से उठकर अथवा छिन्नमस्ता देवी के पूजा-काल में इस स्तोत्र का पाठ करता है, उसके सभी मनोरथ अति शीघ्र पूरे होते हैं।"

धनं धान्यं सुतां जायां हयं हस्तिनमेव च।
वसुन्धरां महाविद्यानष्टसिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥

भाषा टीका—"इस स्तोत्र का पाठ करने वाला मनुष्य धन, धान्य, पुत्र, कलत्र, अश्व, हस्ती तथा पृथ्वी को प्राप्त करता है। वह अष्ट सिद्धि एवं निधियों को भी अवश्य पा लेता है।"

वैयाघ्राजिनरञ्जितस्वजघने रम्ये प्रलम्बदरे।
खर्व्वेऽनिर्वचनीयपर्व्वसुभगे मुण्डावलीमण्डिते ॥
कर्त्रीं कुन्दरुचिं विचित्ररचनां ज्ञानं दधाने पदे।
मातर्भक्तजनानुकम्पितमहामायेऽस्तु तुभ्यं नमः ॥

भाषा टीका—"हे माता ! तुमने व्याघ्रचर्म द्वारा अपनी जंघाओं को रंजित किया है। तुम अत्यन्त मनोहर स्वरूपा हो। तुम्हारा उदर अधिक लम्बायमान है। तुम छोटी आकृति वाली हो। तुम्हारा शरीर अनिर्वचनीय त्रिवली से शोभित है। तुम मुक्तावली से विभूषित हो तथा तुमने अपने हाथ में कुन्दवत् श्वेतवर्ण वाली विचित्र कर्तरी धारण की हुई है। तुम अपने भक्तों पर सदैव दया दिखाती हो। हे महामाये ! मैं तुम्हें बारम्बार नमस्कार करता हूँ।"

छिन्नामस्ता-कवच

अब 'छिन्नमस्ता' के कवच को मूल संस्कृत में नीचे दिया जा रहा है। बाद में उसका भषा अर्थ भी दे दिया गया है। साधक को चाहिए कि वह पाठ करते समय केवल मूल-संस्कृत का ही प्रयोग करे।

कवच इस प्रकार है—

हुं बीजालिका देवी मुण्डकर्त्तृ धरापरा ।
हृदयं पातु सा देवी वर्णिनीडाकिनीयुता ॥

भाषा टीका—"वर्णिनी तथा डाकिनी से युक्त मुण्डकर्त्तृ को धारण करने वाली 'हुं' बीज युक्त महादेवी मेरे हृदय की रक्षा करें।

श्रीं ह्रीं हुं ऐं चैव देवी पूर्व्वस्यां पातु सर्वदा ।
सर्व्वांग में सदा पातु छिन्नमस्ता महाबला ॥

भाषा टीका "श्रीं, ह्रीं, हुं, ऐं, बीजात्मिका देवी मेरी पूर्व दिशा में तथा महाबला छिन्नमस्ता मेरे सर्वांग की सदैव रक्षा करें।"

वज्रवैरोचनीये हुं फट् बीज समन्विता ।
उत्तरस्यां तथाग्नौ च वारुणे नैर्ऋते ऽवतु ॥

भाषा टीका—"वज्रवैरोचनीये हुं फट्' इस बीज से युक्त देवी उत्तर, अग्निकोण, वारुण तथा नैर्ऋत्य दिशा में मेरी रक्षा करें।"

इन्द्राक्षी भैरवी चैवासितांगी च संहारिणी।
सर्व्वदा पातु मां देवी चान्यान्यासु हि दिक्षु वै ॥

भापा टीका—"इन्द्राक्षी, भैरवी, असितांगी तथा संहारिणीदेवी मेरी अन्यान्य सब दिशाओं में सर्वदा रक्षा करें।

इदं कवचमज्ञात्वा यो जवेच्छिन्नमस्तकाम् ।
न तस्य फलसिद्धिः स्यात्कल्पकोटिशतैरपि ॥

भाषा टीका—इस कवच को जाने बिना जो मनुष्य छिन्नमस्ता देवी के मन्त्र का जप करता है, उसे सौ करोड़ कल्प में भी मन्त्र जाप का फल प्राप्त नहीं होता।

धूमावती-साधन

अब 'धूमावती-साधन' के मन्त्र ध्यान, मन्त्र, जप, होम, स्तव एवं कवच का वर्णन किया जाता है।

धूमावती-मन्त्र

"धूँ धूँ धूमावती स्वाहा"

इस मन्त्र के द्वारा 'धूमावती' की पूजा तथा जप आदि करना चाहिए।

धूमावती-ध्यान

'धूमावती' के ध्यान की विधि मूल-संस्कृत में नीचे दी जा रही है। वाद में उसका भाषा-अर्थ भी दे दिया गया है। साधक को चाहिए कि वह ध्यान करते समय मूल-संस्कृत का ही प्रयोग करे।

विवर्णा चञ्चला रुष्टा दीर्घा च मलिनाम्बरा ।
विवर्णकुन्तला रूक्षा विधवा विरलद्विजा ॥
सूर्यहस्तातिरूक्षाक्षी धृतहस्ता वरान्विता ॥
प्रवृद्धघोषा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा ।
क्षुत् पियासार्दिता नित्यं भयदा कलहप्रिया ॥

भापा टीका—"धूमावती देवी विवर्णा, चंचला, रुष्टा, दीर्घांगी तथा मलिन वस्त्र धारण करने वाली हैं। उनके केश विवर्ण तथा रूखे हैं। वे विधवा रूपधारिणी, बिखरे हुए दाँतों वाली, काकध्वजा वाले रथ में विराजमान तथा लम्बे (लटके हुए) स्तनों वाली हैं। देवी के दोनों नेत्र रूखे हैं। उनके एक हाथ में सूर्य तथा दूसरे हाथ में वर मुद्रा है। उनकी नासिका बड़ी है। शरीर तथा नेत्र कुटिल (टेढ़े) हैं। वे भूख-प्यास से व्याकुल, निरन्तर भय देने वाली तथा कलह-प्रिया हैं।

धूमावती-पूजन का यन्त्र

धूमावती के पूजन के यन्त्र की कोई व्यवस्था नहीं कही गई है। इनके लिए काली-पूजन के यन्त्र का प्रयोग कर लेना चाहिए।

धूमावती के निमित्त जप-होम

एक लाख की संख्या में मन्त्र का जप करने से पुरश्चरण होता है तथा गिलोय की समिधाओं से उसका दशांश होम करना चाहिए।

धूमावती-स्तव

मूल-संस्कृत में 'धूमावती-स्तव' इस प्रकार है—

भद्रकाली महाकाली डमरूवाद्य कारिणी।
स्फारितनयना चैव टकटंकित हासिनी॥
धूमावती जगत्कर्त्री शूर्पहस्ता तथैव च।
अष्टनामात्मकं स्तोत्रं यः पठेद्भक्तिसंयुतः॥
तस्य सर्व्वार्थसिद्धिः स्यात्सत्यं सत्यंहि पार्वति॥

भाषा टीका—"(१) भद्रकाली, (२) महाकाली, (३) डमरूवाद्य कारिणी, (४) स्फारितनयना, (५) टकटंकितहासिनी, (६) धूमावती, (७) जगत्कर्त्री तथा (८) शूर्पहस्ता—इस अष्टनामात्मक स्तोत्र को जो व्यक्ति भक्ति युक्त होकर पढ़ता है, हे पार्वती! उसे सर्वार्थ की सिद्धि होती है। यह सत्य है, सत्य है।"

धूमावती-कवच

अब 'धूमावती' के कवच को मूल संस्कृत में नीचे दिया जा रहा है। बाद में उसका भाषा-अर्थ भी दे दिया गया है। साधक को चाहिए कि वह पाठ करते समय केवल मूल-संस्कृत का ही प्रयोग करे।

कवच इस प्रकार है—

धूमावतीमुखं पातु धुं धूं स्वाहास्वरूपिणी ।
ललाटे विजया पातु मालिनी नित्य सुन्दरी ॥

भाषा टीका—"धूं धूं स्वाहास्वरूपिणी धूमावती मेरे मुख की तथा नित्य सुन्दरी मालिनी एवं विजया मेरे ललाट की रक्षा करें।"

कल्याणी हृदगं पातु हसरीं नाभिदेशके ।
सर्व्वांग पातु देवेसी निष्कला भगमालिनी ॥

भाषा टीका—"'कल्याणी' हृदय की, 'हसरीं' नाभि की तथा 'निष्कला भगमालिनी देवी' मेरे सर्वांग की रक्षा करें।"

सुपुण्यं कवचं दिव्यं यः पठेद्भक्तिसंयुतः ।
सौभाग्यमतुलं प्राप्य चांते देवीपुरं ययौ ॥

भाषा टीका—"इस पवित्र दिव्य कवच का भक्तिपूर्वक पाठ करने वाला व्यक्ति इस लोक में विपुल सौभाग्य प्राप्त कर अन्त में देवी के पुर में जाता है।"

बगला-साधन

अब 'बगला-साधन' के मन्त्र, ध्यान, यन्त्र, जप-होम स्तव एवं कवच का वर्णन किया जाता है।

बगला-मन्त्र

ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्व्वदुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धि नाशय ह्लीं ॐ स्वाहा।"

इस मन्त्र के द्वारा 'बंगलामुखी' की पूजा तथा जप आदि करना चाहिए।

बगला-मुखी-ध्यान

'बगलामुखी' के ध्यान की विधि मूल-संस्कृत में नीचे दी जा रही है। बाद में उसका भाषा-अर्थ भी दे दिया गया है। साधक को चाहिए कि वह ध्यान करते समय मूल-संस्कृत का ही प्रयोग करे।

मध्येसुधाब्धिमणिमण्डपरत्नवेदी
सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम् ।
पीताम्बराभरणमाल्यविभूपितांगीं
देवीं स्मरामि धृतमुद्गरवैरिजिह्वाम् ।।
जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं
वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम् ।
गदाभिघातेन च दक्षिणेन
पीताम्बराढ्यां द्विभुजां नमामि ।।

भाषा टीका—सुधा-सागर के मणिमय मण्डल में रत्ननिर्मित वेदी के ऊपर जो सिंहासन है, बगलामुखी देवी उस पर विराजित हैं। वे पीतवर्णा हैं तथा पीतवस्त्र, पीतवर्ण के आभूपण तथा पीतवर्ण की ही माला को धारण किए हुए हैं। उनके एक हाथ में मुंगर तथा दूसरे हाथ में शत्रु की जिह्वा है। वे अपने बाये हाथ में शत्रु की जिह्वा के अग्रभाग को धारण करके दायें हाथ के गदाघात से शत्रु को पीड़ित कर रही हैं। वे बगलामुखी देवी पीतवस्त्रों से विभूपित तथा दो भुजा वाली है।

बगलामुखी-पूजन का यन्त्र

पहले त्रिकोण बनाकर, उसके बाहर षट्कोण अंकित करके वृत्त तथा अष्टदल पद्म को अंकित करे। उसके बहिर्भाग में भूपुर अंकित करके यन्त्र को प्रस्तुत करना चाहिए यन्त्र को अष्टगन्ध द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखना चाहिए।

बगलामुखी के निमित्त जप-होम

पीत वस्त्र धारण कर, हल्दी की गाँठ से निर्मित अर्थात् जिसमें हल्दी की गाँठें लगी हुई हों, एसी माला से प्रतिदिन एक लाख की संख्या में मन्त्र का जप करे तथा पीत वर्ण के पुष्पों से उसका दशांश होम करना चाहिए।

बगलामुखी-स्तव

मूल संस्कृत में 'बगलामुखी-स्तव' इस प्रकार हैं—

बगला सिद्धविद्या च दुष्टनिग्रहकारिणी।
स्तम्भिन्याकर्षिणी चैव तथोच्चाटनकारिणी॥
भैरवी भीमनयनां महेशगृहिणी शुभा।
दशनामात्मकं स्तोत्रं पठेद्वा पाठयेद्यदि।
स भवेत् मंत्रसिद्धश्च देवीपुत्र इव क्षितौ।

भाषा टीका— (१) बगला, (२) सिद्ध विद्या, (३) दुष्ट निग्रह कारिणी, (४) स्तम्भिनी, (५) आकर्षिणी, (६) उच्चाटन कारिणी, (७) भैरवी, (८) भीमनयना, (९) महेश गृहिणी तथा (१०) शुभा-दशनामात्मक देवी-स्तोत्र का जो मनुष्य पाठ करता है अथवा दूसरे से पाठ करवाता है, वह मन्त्र सिद्ध होकर देवी-पुत्र की भाँति पृथ्वी पर विचारण करता है।

बगलामुखी कवच

अब 'बगलामुखी' के कवच को मूल-संस्कृत में नीचे दिया जा रहा है। बाद में उसका भाषा-अर्थ भी दे दिया गया है। साधक को चाहिए कि वह पाठ करते समय केवल मूल संस्कृत का ही प्रयोग करे।

कवच इस प्रकार है—

ॐ ह्रीं मे हृदयं पातु पादौ श्री बगलामुखी।
ललाटे सततं पातु दुष्टग्रहनिवारिणी॥

भाषा टीका—'ॐ ह्लीं' यह बीज मेरे हृदय की रक्षा करो, श्री बगलामुखी दोनों पाँवों की रक्षा करें तथा दुष्टग्रहनिवारिणी मेरे ललाट की सदैव रक्षा करें।

रसनां पातु कौमारी भैरवी चक्षुषोर्म्मम ।
कटौ पृष्ठे महेशानी कर्णौ शंकरभामिनी ॥

भाषा टीका—कौमारी, मेरी जीभ की, भैरवी नेत्रों की, महेशानी, कमर तथा पीठ की एवं शंकर-भामिनी, मेरे कानों की रक्षा करें ।

वर्ज्जितानि तु स्थानानि यानि च कवचेन हि ।
तानि सर्व्वाणि मे देवी सततं पातु स्तम्भिनी ॥

भाषा टीका—जिन स्थानों का कवच में वर्णन नहीं किया गया है, स्तम्भिनी देवी उन सब स्थानों की रक्षा करें।

अज्ञातं कवचं देवि यो भजेद्बगलामुखीम् ।
शस्त्राघातमवाप्नोति सत्यं सत्यं न संशय ॥

भाषा टीका—हे देवी ! इस कवच को जाने बिना जो मनुष्य बगलामुखी की उपासना करता है, उसकी शस्त्राघात से मृत्यु हो जाती हैं, इसमें सन्देह नहीं है। यह सत्य है, सत्य है ।

मातंगी साधन

अब मातंगी साधन के मन्त्र, ध्यान, यन्त्र, जप-होप, स्तव एवं कवच का वर्णन किया जाता है ।

मातंगी-मन्त्र

ॐ ह्रीं क्लीं हूँ मातंग्यै फट् स्वाहा ।

इस मन्त्र के द्वारा मातंगी की पूजा तथा जप आदि करना चाहिए।

मातंगी-ध्यान

मातंगी के ध्यान को विधि मूल-संस्कृत में नीचे दी जा रही हैं ।

बाद में उसका भाषा अर्थ भी दे दिया गया है। साधक को चाहिए कि वह ध्यान करते समय मूल-संस्कृत का ही प्रयोग करे।

श्यामांगीं शशिशेखरां त्रिनयनां रत्नसिंहासनस्थिताम्
वेदैर्बाहुदण्डैरसिखेटकपाशांकुशावराम्।

भाषा टीका—मातंगीदेवी श्यामवर्ण वाली, अर्द्धचन्द्रधारिणी तथा तीन नेत्रों वाली हैं। वे अपने चारों अस्त्रों को धारण किए हुए रत्न-निर्मित सिंहासन पर विराजमान हैं।

मातंगी-पूजन का यन्त्र

पहले षट्कोण अंकित करके उसके बाहर अष्टदल पद्म अंकित करे। फिर षट्कोण में देवी का मूल मन्त्र लिखकर यन्त्र को पूर्ण करे। यह मन्त्र भोजपत्र के ऊपर अष्टगन्ध द्वारा लिखना चाहिए।

मातंगी के निमित्त जप होम

छै सहस्र की संख्या में जप करने से इस मन्त्र का पुरश्चरण होता है तथा जप का दशांश घृत, शर्करा एवं मधुमिश्रित वृक्ष की सविधा से होम करना चाहिए।

मातंगी स्तव

आराध्य मातश्चरणाम्बुजे ते ब्रह्मादयो विश्रुत कीर्तिमायुः।
अन्ये परं वा विभवं मुनीन्द्राः परां श्रियं भक्तिभरेण चान्ये॥

मूल संस्कृत में 'मातंगी स्तव इस प्रकार है—

भाषाटी —हे माता, ब्रह्मादि देवताओं ने तुम्हारेचरण कमलों की आराधना के द्वारा विश्रुतकीर्ति प्राप्त की है तथा अन्य मुनीन्द्रगण भी परम विभव को प्राप्त हुए हैं। दूसरे अनेक लोगों ने भी तुम्हारे चरणकमलों की भक्तिपूर्वक आराधना करके अत्यधिक श्री प्राप्त की है।"

नमामिदेवी नवचन्द्रमौलि मांतगिनीं चन्द्रकलावतंसाम् ।
आम्नायकृत्यप्रतिपादितार्थं प्रबोधयन्तीं हृदि सादरेण ॥

भाषा टीका—जिनके मस्तक पर चन्द्रमा की कला सुशोभित है, जो वेद द्वारा प्रतिपादित को सदैव ही आदरपूर्वक हृदय में प्रबोधित करती हैं, उन मातंगिनी देवी को नमस्कार है ।

विनम्रदेवासुरमौलिरत्नैर्विराजितं ते चरणारविन्दम् ।
अकृत्रिमाणां वचसां विगुल्फं पादात्पदं सिञ्जितनूपुराभ्याम् ॥
कृतार्थयन्तीं पदवीं पदाभ्यामास्फालयन्तीं कुचवल्लकीं ताम् ।
मातंगिनी मद्हृयेधिनोमि लीनांकृनां शुद्धनितम्बबिम्बाम् ॥

भाषा टीका—हे देवी ! तुम्हारे चरणकमल अपना मस्तक झुकाये हुए देवासुरों के मस्तक-रत्नों द्वारा सुशोभित हैं । तुम अकृत्रिम वाक्य के अनुकूल हो । तुम्हीं अपने शब्दायमान नूपुर युक्त दोनों चरणों से इस पृथ्वी मण्डल को कृतार्थ करती हो । तुम सदैव वीणा बजाती रहती हो । तुम्हारे नितम्ब बिम्ब अत्यन्त शुद्ध हैं । मैं अपने हृदय में तुम्हारा चिन्तन करता हूँ ।

तालीदलेनार्पितकर्णभूषां माध्वीमदाघूर्णितनेत्रपद्माम् ।
घनस्तनीं शम्भुवधुं नमामि तडिल्लताकान्तवलक्षभूषाम् ॥

भाषा टीका—तुमने तालीदल (ताड़)का अपने कानों में आभूषण धारण किया हुआ है । माध्वीक मद्य का पान करने से तुम्हारे दृग-कमल विघूर्णित हो रहे हैं । तुम्हारे स्तन अत्यन्त कठिन हैं । तुम्हारी कान्ति विद्युल्लता की भांति मनोहर है । हे शिव-वधु ! मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ ।

चिरेण लक्षं प्रददातु राज्यं स्मरामि भक्त्या जगतामधीशे ।
वलित्रयांग तव मध्यमम्ब नीलोत्पलं सुश्रियमावहन्तीम् ॥

भाषा टीका—हे माता ! मैं तुम्हारा भक्तिपूर्वक स्मरण करता हूँ। तुम चिरकाल से नष्ट हुए राज्य को देने वाली हो। तुम्हारे शरीर का मध्य भाग तीन वलियों से अंकित है। तुम नीलोत्पल के समान शोभा को धारण किए हुए हो।

कान्त्या कटाक्षैर्जगतां त्रयाणां विमोहयंतीं सकलान सुरेशि ।
कदम्बमालाञ्चितकेशपाशं मातंगकन्यां हृदि भावयामि ।।

भाषा टीका—हे सुरेश्वरी ! तुम अपने शरीर की कान्ति तथा कटाक्ष द्वारा त्रिभुवनवासी सब प्राणियों को मोहित करती हो। तुम्हारे केशपाश कदम्बमाला से बँधे हुए हैं। हे मातंग कन्या ! मैं अपने हृदय में तुम्हारा चिन्तन करता हूँ।

ध्यायेयमारक्त कपोलबिम्बं बिम्बाधरन्यस्तललामवश्यम् ।
अलोललीलाकमलायताक्षं मन्दस्मितं ते वदनं महेशि ।।

भाषा टीका—हे देवी ! तुम्हारे जिस मुख-कपोल तट पर रक्त-वर्ण बिम्बाधर परम सुन्दरता से परिपूर्ण हैं, जिसमें चंचल अलका-वली विराजित हैं, जिस पर बड़े-बड़े नेत्र हैं तथा जिस मुख पर मन्द-हास्य सुशोभित है, मैं तुम्हारे उसी मुख-कमल का ध्यान करता हूँ।

स्तुत्याऽनया शंकरधर्मपत्नी मातंगिनीं वागधिदेवतां ताम् ।
स्तुन्वन्ति ये भक्ति युता मनुष्याः परांश्रियं नित्यमुपाश्रयन्ति ।।

भाषा टीका—जो व्यक्ति भक्तियुक्त होकर शंकर की धर्मपत्नी तथा वाणी की अधिष्ठात्री देवी मातंगी की इस स्तव द्वारा स्तुति करता है, वह सदैव परम श्री को प्राप्त करता है।

मातंगी कवच

अब मातंगी अथवा मातंगिनी देवी के कवच को मूल संस्कृत में नीचे दिया जा रहा है। बाद में उसका भाषा अर्थ भी दे दिया गया है। साधक को चाहिए कि वह पाठ करते समय केवल मूल संस्कृत का ही प्रयोग करे।

कवच इस प्रकार है—

शिरो मातंगिनो पातु भुवनेशी तु चक्षुषी ।

तोतला कर्णयुगलं त्रिपुरा वदनं मम ।।

भाषा टीका—मातंगिनी देवी मेरे मस्तक की, भुवनेशी नेत्रों की, तोतला कानों की तथा त्रिपुरा मेरे मुख की रक्षा करे।

पातु कण्ठे महामाया हृदि माहेश्वरी तथा ।

त्रिपुरा पार्श्वयोः पातु गुह्ये कामेश्वरी मम ।।

भाषा टीका—महामाया कण्ठ की, माहेश्वरी हृदय की, त्रिपुरा पार्श्व की तथा कामेश्वरी मेरे गुह्य भाग की रक्षा करें।

उरूद्वये तथा चण्डी जंघायाञ्च रतिप्रिया ।

महामाया पदे पायात्सर्व्वांगेषु कुलेश्वरी ।।

भाषा टीका—चण्डी दोनों ऊरूओं, रतिप्रिया जांघ की, महामाया पाँवों की तथा कुलेश्वरी सर्वांग की रक्षा करें।

य इदं धारयेन्नित्यं जायते सर्व्वदानवित् ।

परमैश्वर्यमतुलं प्राप्नोति नात्र संशयः ।।

भाषा टीका—जो मनुष्य इस कवच को धारण करते हैं, वे सर्व-दानज्ञ होते हैं तथा विपुल ऐश्वर्य को प्राप्त करते हैं। इसमें संदेह नहीं है।

कमला (लक्ष्मी) साधन

अब कमला (लक्ष्मी) साधन के मन्त्र, ध्यान, यन्त्र, जप, होम, स्तव एवं कवच का वर्णन किया जाता है।

कमला मन्त्र

श्रीं

इस एकाक्षर मन्त्र के द्वारा ही कमला (लक्ष्मी) की पूजा तथा जप आदि करना चाहिये।

कमला-ध्यान

कमला के ध्यान की विधि मूल संस्कृत में नीचे दी जा रही है। बाद में उसका भाषा अर्थ भी दे दिया गया है। साधक को चाहिये कि वह ध्यान करते समय मूल-संस्कृत का ही प्रयोग करे।

कान्त्या काञ्चन सन्निभां हिमगिरि प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजै

र्हस्तोत्क्षिप्त हिरण्मयामृत घटैरासिच्यमानां श्रियम्।

बिभ्राणां वरमब्जयुग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलां

क्षौमाबद्ध नितम्ब बिम्ब ललितां वन्देऽरविन्दस्थिताम्॥

भाषा टीका—कमला देवी का शरीर स्वर्ण के समान कान्तिमान् है। हिमगिरि के समान विशाल आकार वाले चार हाथी अपनी सूंडों में सुधा से परिपूर्ण घटों को उठाकर. उनके द्वारा कमला का अभिषेक करते हैं। कमला देवी के चार हाथों में वरमुद्रा, अभयमुद्रा तथा दो कमल हैं। उनके मस्तक पर रतन मुकुट सुशोभित है। वे पट्ट (रेशमी) वस्त्र धारण किये हुये हैं तथा पद्म (कमल) पर स्थित हैं।

कमला पूजन का यन्त्र

कमला के पूजन के निमित्त यन्त्र का कोई विधान नहीं कहा गया है। एकाक्षर मन्त्र को ही अष्ट गंध द्वारा भोजपत्र पर लिखकर यन्त्र बना लेना चाहिए।

कमला के निमित्त जप होम

बारह लाख की संख्या में जप करने से मन्त्र का पुरश्चरण होता है तथा मधु-शर्करा युक्त बारह सहस्र पद्म (कमल) अन्यथा तिलों द्वारा होम करना चाहिये।

कमला स्तव

मूल संस्कृत में कमला स्तव इस प्रकार है—

श्री शंकर उवाच ।

अथातः संप्रवक्ष्यामि लक्ष्मीस्तोत्रमनुत्तमम् ।
पठनात् श्रवणाद्यस्य नरो मोक्षमवाप्नुयात् ॥
गुह्याद् गुह्यतरं पुण्यं सर्व्वदेवनमस्कृतम् ।
सर्व्वमंत्रमयं साक्षाच्छृणु पर्व्वत नन्दिनि ॥

भाषा टीका—श्री शिवजी ने कहा—हे पर्वतनन्दिनी, सुनो ! अब मैं अत्युत्तम लक्ष्मी स्तोत्र को कहता हूँ जिसके पाठ एवं श्रवण से मनुष्यों को मोक्ष प्राप्त होता है। यह पवित्र स्तोत्र गुह्यातिगुह्यतर, समस्त देवताओं से नमस्कृत तथा सर्व मन्त्रमय है।

अनन्तरूपिणी लक्ष्मीरपार गुणसागरी ।
अणिमादिसिद्धि दात्री शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

भाषा टीका—हे लक्ष्मी ! तुम अनन्त रूपिणी तथा अपार गुणों की समुद्र हो। तुम अणिमादिक सिद्धियों को प्रदान करने वाली हो। मैं तुम्हें मस्तक झुका कर प्रणाम करता हूँ।

आपदुद्धारिणी त्वंहि आद्या शक्तिः शुभा परा ।
आद्या आनन्ददात्री च शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

भाषा टीका—तुम आपत्तियों से उद्धार करने वाली हो, तुम्हीं आद्या शक्ति हो, तुम्ही शुभा और परा हो। तुम्हीं सबकी आदि और आनन्द दायिनी हो। मैं तुम्हें मस्तक झुका कर प्रणाम करता हूँ।

इन्दुमुखी इष्टदात्री इष्ट मंत्र स्वरूपिणी ।
इच्छामयी जगन्मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

भाषा टीका—तुम चन्द्रमा के समान मुख वाली तथा इष्ट-मन्त्र स्वरूपिणी हो। तुम इच्छामयी और जगत् की माता हो। मैं तुम्हें मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।

उमा उमापतेस्त्वन्तु ह्यु त्कण्ठाकुल नाशिनी ।
उर्व्वीश्वरी जगन्मातर्लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ॥

भाषा टीका—हे लक्ष्मी देवी ! तुम्हीं उमापति की उमा हो, तुम उत्कण्ठाओं के कुल का नाश करने वाली हो। तुम्हीं पृथ्वी की स्वामिनी हो। हे जग माता ! मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ।

ऐरावतपति पूज्या ऐश्वर्याणां प्रदायिनी ।
औदार्य्यगुण सम्पन्ना लक्ष्मि देवि नमोऽस्तुते ।

भाषा टीका—हे लक्ष्मी देवी ! तुम ऐरावतपति इन्द्र द्वारा पूजिता हो। तुम ऐश्वर्यों को देने वाली हो। तुम्हीं उदारता के गुणों से सम्पन्न हो। मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ।

कृष्णपक्षः स्थिता देवि कलिकल्मषनाशिनी ।
कृष्णचित्तहरा कर्त्री शिरसा प्रणमाम्यहम् ।

भाषा टीका—हे देवी ! तुम श्रीकृष्ण के वक्षस्थल में विराजमान हो। तुम कलि-कल्मष का विनाश करने वाली हो। तुम श्रीकृष्ण के चित्त का हरण करने वाली हो। मैं तुम्हें मस्तक झुका कर प्रणाम करता हूँ।

कन्दर्पदमना देवि कल्याणी कमलानना ।
करुणोदधि सम्पूर्ण शिरसा प्रणमाम्यहम् ।

भाषा टीका—हे देवी ! तुमने कामदेव के दर्प का दमन किया है। तुम कल्याणी और कमल के समान मुख वाली हो। तुम करुणा के समुद्र से परिपूर्ण हो। मैं तुम्हें मस्तक झुका कर प्रणाम करता हूँ।

खञ्जनाक्षी खञ्जनासा देवि खेद विनाशिनी ।
खञ्जरीटगतिश्चैव शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

भाषा टीका—हे देवी ! तुम खंजन पक्षी के नेत्रों के समान सुन्दर नेत्रों वाली तथा गरुड़ के समान नासिका वाली हो। तुम खेद को

नष्ट करने वाली हो। तुम्हारी गति (चाल) खंजरीट के समान है, मैं तुम्हें मस्तक झुका कर प्रणाम करता हूँ।

गोविन्दवल्लभा देवी गन्धर्व्वकुलपावनी।
गोलोकवासिनीमातः शिरसाप्रणमाम्यहम्॥

भाषा टीका—"हे माता! तुम गोविन्द की प्रियतमा, गन्धर्व कुल को पवित्र करने वाली तथा गोलोक में निवास करने वाली हो। मैं तुम्हें मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।"

ज्ञानदा गुणदा देवि गुणाध्यक्षा गुणाकरी।
गन्धपुष्पधरा मातः शिरसा प्रणमाम्यहम्॥

भाषा टीका—"हे देवि! तुम ज्ञानदायिनी, गुणदायिनी, गुणों की अध्यक्षा तथा गुणों की खान हो। हे माता! तुम गन्ध-पुष्प से सुशोभित हो। मैं तुम्हें मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।"

घनश्यामप्रिया देवि घोर संसार तारिणीं।
घोरपापहरा चैव शिरसा प्रणमाम्यहम्॥

भाषा टीका—हे देवि! तुम घनश्याम की प्रियतमा तथा घोर-संसार से तारने वाली हो। तुम घोर पापों का हरण करने वाली हो। मैं तुम्हें मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।"

चतुर्व्वेदमयी चिन्त्या चित्तचैतन्यदामिनी।
चतुराननपूज्या च शिरसा प्रणमाम्यहम्॥

भाषा टीका—"हे देवि! तुम चतुर्वेदमयी, चिन्तनीय चित्त को चैतन्यता देने वाली तथा चतुरानन ब्रह्मा द्वारा पूज्य हो। मैं तुम्हें मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।"

चैतन्यरूपिणी देवि चन्द्रकोटि समप्रभा।
चन्द्रार्कन्नवखज्योतिर्लक्ष्मि देवि नमाम्यहम्॥

भाषा टीका—"हे देवि ! तुम चैतन्यरूपिणी हो। तुम्हारे शरीर की कान्ति करोड़ों चन्द्रमाओं के समान है। तुम्हारे चरणों के नखों की ज्योति चन्द्र-सूर्य के समान है। हे लक्ष्मी ! मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ।"

चपला चतुराध्यक्षी चरमे गतिरायिनी।
चराचरेश्वरी लक्ष्मि शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

भाषा टीका—"हे देवी लक्ष्मी ! तुम चपला, चतुराध्यक्षी, चरम गतिदायिनी तथा चराचर की स्वामिनी हो। मैं तुम्हें मस्तक झुका कर प्रणाम करता हूँ।"

छत्रचामरयुक्ता च छलचातुर्य्यनाशिनी।
छिद्रौघहारिणी मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

भाषा टीका—"हे माता ! तुम छत्र और चामर से युक्त, छल तथा चातुर्य को नष्ट करने वाली एवं पाप समूहों को नष्ट करने वाली हो। मैं तुम्हें मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।"

जगन्माता जगत्कर्त्री जगदाधार रूपिणी।
जयप्रदा जानकी च शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

भाषा टीका—"हे जननी ! तुम संसार की माता, संसार की आधार स्वरूपा, जय देने वाली एवं जानकी रूपा हो। मैं तुम्हें मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।"

जानकीशप्रिया त्वं हि जनकोत्सवदायिनी।
जीवात्मनां च त्वं मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

भाषा टीका—"हे माता ! तुम्हीं जानकीपति रामचन्द्र की प्रियतमा हो। तुम्हीं राजा जनक को आनन्द देने वाली हो। तुम्हीं सब प्राणियों की जीवात्मा हो। मैं तुम्हें मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।"

झिञ्जीरवस्वनादेवि झंझावातनिवारिणी ।
झर्झरप्रिय वाद्या च शिरसा प्रणमाम्यहम् ।।

भाषा टीका—"हे देवि ! तुम्हारे कण्ठ का स्वर झिझी-रव की भाँति मधुर है। तुम झंझावात का निवारण करने वाली तथा झर्झर वाद्य में अनुरक्त हो । मैं तुम्हें मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।"

अर्थप्रदायिनी त्वंहि त्वं ठकारस्वरूपिणी ।
ढक्कादिवाद्यप्रणया डम्फवाद्यविनोदिनी ।।
डमरूप्रणया मातः शिरसाप्रणमाम्यहम् ।।

भाषा टीका—"हे मात ! तुम्हीं अर्थ को देने वाली हो। तुम्हीं ठकार (चन्द्र मण्डल) रूपिणी हो। तुम्हें डमरू तथा डम्फ वाद्य से अत्यन्त प्रसन्नता प्राप्त होती है तथा ढक्कादि वाद्य तुम्हें प्रिय है। मैं तुम्हें मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।"

तप्तकांचनवर्णाभा त्रैलोक्यलोकतारिणीम् ।
त्रिलोकजननी लक्ष्मि शिरसा प्रणमाम्यहम् ।।

भाषा टीका—"हे लक्ष्मी ! तुम्हारे शरीर का वर्ण तप्त स्वर्ण की भाँति है। तुम तीनों लोकों को तारने वाली हो। तुम तीनों लोकों की जननी हो। मैं तुम्हें मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।"

त्रैलोक्यसुन्दरी त्वं हि तापत्रय निवारिणी ।
त्रिगुणांधारिणीं मातः शिरसा प्रणमाम्यहम् ।।

भाषा टीका—"हे जननी ! तुम त्रैलोक्य सुन्दरी हो। तुम्हीं तीनों प्रकार के तापों का निवारण करने वाली हो और तुम्हीं तीनों गुणों को धारण करने वाली हो। मैं तुम्हें मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।"

"त्रैलोक्य मंगला त्वं हि तीर्थमूलपदद्वया
त्रिकालज्ञा त्राणकर्त्री शिरसा प्रणमाम्यहम्"

भाषा टीका—"तुम्हीं तीनों लोकों का मंगल करने वाली हो। तुम्हारे ही दोनों चरण समस्त तीर्थों के मूल रूप हैं। तुम त्रिकाल को जानने वाली हो और तुम्हीं रक्षा करने वाली हो। मैं तुम्हें मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।"

'दुर्गतिनाशिनी त्वंहि दारिद्रयापद्विनाशिनी
द्वारकावासिनीमातः शिरसाप्रणमाम्यहम्'

भाषा टीका—"हे माता ! तुम्हीं दुर्गतिनाशिनी, दारिद्रय और आपत्तियों का विनाश करने वाली तथा द्वारकापुरी में निवास करने वाली हो। मैं तुम्हें मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।"

"देवतानां दुराराध्या दुःख शोक विनाशिनी
दिव्याभरणभूपांगी शिरसा प्रणमाम्यहम्"

भाषा टीका—"हे देवी ! तुम देवताओं से भी दुराराध्या हो अर्थात् वे भी तुम्हारा आराधन कष्ट से कर पाते हैं। तुम्हीं दुःख-शोकों को नष्ट करने वाला तथा दिव्य वस्त्रालंकारों को धारण करने वाली हो। मैं तुम्हें मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।"

"दामोदरप्रिया त्वंहि दिव्ययोगप्रदर्शिनी
दयामयी दयाध्यक्षी शिरसा प्रणमाम्यहम्"

भाषा टीका—"हे मातः तुम्हीं दामोदर प्रियतमा एवं दिव्य योगों को प्रदर्शित करने वाली हो। तुम्हीं दयामयी एवं दया की अधिष्ठात्री हो। मैं तुम्हें मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।

"ध्यानातीताधराध्यक्षा धनधान्य प्रदायिनी
धर्म्मदा धैर्यदा मातः शिरसा प्रणमाम्यहम्"

भाषा टीका—"हे माता ! तुम ध्यान से परे। पृथ्वी की स्वामिनी धन-धान्य प्रदायिनी, धर्म दात्री तथा धैर्य देने वाली हो। मैं तुम्हें मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।"

"नवगोरोचना गौरी नन्दनन्दनगेहिनी
नवयौवनचार्वंगी शिरसा प्रणमाम्यहम्"

भाषा टीका—"हे देवी, तुम नवीन गोरोचन के समान गौर वर्ण, गोरी तथा नन्दनन्दन की प्रियतमा हो। तुम नवयौवन के कारण कान्तिमान हो। मैं तुम्हें मस्तक भुकाकर प्रणाम करता हूँ।"

"नानारत्नादि भूषाढ्या नानारत्नप्रदायिनी
नितम्बिनी नालिनाक्षी लक्ष्मिदेवि नमोऽस्तुते"

भाषा टीका—"हे लक्ष्मीदेवी ! तुम अनेक रत्नादि से विभूपित एवं अनेक रत्नों को देने वाली हो। तुम नितम्बिनी और नलिनाक्षी हो। मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ।"

"निधुवन प्रेमानन्दा निराश्रयगतिप्रदा
निर्व्विकारा नित्यरूपा लक्ष्मिदेवि नमोऽस्तुते"

भाषा टीका—हे लक्ष्मी देवी ! तुम विकार रहित तथा नित्यरूपा हो। निधुवन में विहार करके तुम्हें प्रेमानन्द की प्राप्ति होती है। तुम आश्रयहीनों को गति देने वाली हो। मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ।"

"पूर्णानन्दमयी त्वं हि पूर्णब्रह्म सनातनी
पराशक्तिः पराभक्तिर्लक्ष्मीदेवि नमोऽस्तुते"

भाषा टीका—"हे लक्ष्मीदेवी ! तुम पूर्णानन्दमयी हो और तुम्हीं पूर्ण ब्रह्म सनातनी हो। तुम पराशक्ति और पराभक्ति हो। मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ।"

"पूर्णचन्द्रमुखीत्वंहि परानन्दप्रदायिनी
परमार्थप्रदा लक्ष्मि शिरसाप्रणमाम्यहम्"

भाषा टीका—"हे लक्ष्मी ! तुम पूर्ण चन्द्र के समान मुख वाली

तथा तुम्हीं परमानन्द देने वाली हो। तुम्हीं परमार्थ की भी दाता हो। मैं तुम्हें मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।"

"पुण्डरीकाक्षिणी त्वंहि पुण्डरीकाक्षगेहिनी
पद्मरागधरा त्वंहि शिरसा प्रणमाम्यहम्"

भाषा टीका—"तुम्ही पुण्डरीकाक्षिणी अर्थात् कमल के समान विस्तृत नेत्रों वाली तथा तुम्हीं पुण्डरीकाक्ष विष्णु की गेहिनी (गृह-स्वामिनी) हो। तुम्हीं पद्मराग को धारण करने वाली हो। मैं तुम्हें मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।"

"पद्मा पद्मासना त्वंहि पद्ममालाविधारिणी
प्रणवरूपिणी मातः शिरसा प्रणमाम्यहम्"

भाषा टीका—"हे माता! तुम्हीं पद्मा और पद्मासना हो। तुम्हीं पद्ममाला को धारण करने वाली हो। तुम्हीं प्रणव रूपिणी हो। मैं तुम्हें मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।"

"फुल्लेन्दुवदना त्वंहि फणिवेणि विमोहिनी
फणिशायिप्रिया मातः शिरसा प्रणमाम्यहम्"

भाषा टीका—"हे माता! तुम पूर्णचन्द्र के समान मुखमण्डल वाली हो। तुम्हारे मस्तक की वेणी सर्प के समान लम्बी तथा मोहित करने वाली है। तुम शेषशायी विष्णु की प्रियतमा हो। मैं तुम्हें मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।"

विश्वकर्त्री विश्वाभर्त्री विश्वत्रात्री विश्वेश्वरी।
विश्वाराध्या विश्ववाह्या लक्ष्मिदेवि नमोऽस्तुते"

भाषा टीका—"हे लक्ष्मी! तुम विश्व का निर्माण करने वाली विश्व का भारण करने वाली, विश्व का त्राण करने वाली, विश्वेश्वरी विश्व की आराध्या तथा विश्व से परे हो। मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ।"

"विष्णुप्रिया विष्णुशक्तिर्बीजमन्त्रस्वरूपिणी
वरदा वाक्यसिद्धा च शिरसाप्रणमाम्यहम्"

भाषा टीका—"तुम विष्णु की प्रिया, विष्णु की शक्ति बीज मन्त्र स्वरूपा, वरदा और वाक्य सिद्धा हो। मैं तुम्हें मस्तक झुकाकर प्रणाम करता हूँ।"

"वेणवाद्यप्रिया त्वं हि वंशीवाद्यविनोदिनी
विद्युद्गौरी महादेवि लक्ष्मी देवि नमोऽस्तुते"

भाषा टीका—"हे महादेवी ! हे लक्ष्मी देवी ! तुम्हें वेणवाद्य प्रिय है। तुम्हें वंशी-वाद्य से विनोद प्राप्त होता है। तुम्हारे शरीर का वर्ण विद्युत के समान गौर है। मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ।"

"भुक्तिमुक्तिप्रदात्वंहि भक्तानुग्रहकारिणीं
भवार्णवत्राणकर्त्री लक्ष्मि देवि नमोऽस्तुते"

भाषा टीका—"हे लक्ष्मी देवी ! तुम भुक्ति-मुक्ति प्रदायिनी, भक्तों पर अनुग्रह करने वाली तथा संसार रूपी समुद्र से पार करने वाली हो। मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ।"

भक्तप्रिया भगीरथी भक्तमंगलदायिनी ।
भयदाऽभयदात्री च लक्ष्मि देवि नमोस्तुते ॥

भाषा टीका—"हे लक्ष्मी देवी ! तुम भक्तों को प्रिय, भक्तों का कल्याण करने वाली, दुष्टों को भय देने वाली दुष्टों को भय देने तथा शरणगतों को अभय देने वाली हो। मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ।"

मनोऽभीष्टप्रदा त्वं हि महामोहविनाशिनी ।
मोक्षदा मानदात्री च लक्ष्मि देवि नमोऽस्तुते ॥

भाषा टीका—"हे लक्ष्मी देवी ! तुम मनोरथ को पूर्ण करने वाली हो। तुम्हीं महामोह का नाश करने वाली, मोक्षदात्री तथा सम्मान प्रदात्री हो। मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ।"

महाधन्या महामान्या माधवस्यात्ममोहिनी ।
मुखराप्राणहन्त्री च लक्ष्मिदेवि नमोऽस्तु ते ।।

भाषा टीका—"हे लक्ष्मी देवी ! तुम परमधन्या, परम माननीया, माधव के मन को मोहित करने वाली तथा मुखर स्त्रियों के प्राणों का हरण करने वाली हो । मै तुम्हें नमस्कार करता हूँ ।

यौवनपूर्णसौन्दर्य्या योगमाया तथेश्वरी ।
युग्म श्रीफलवृक्षा च लक्ष्मिदेवि नमोऽस्तु ते ।।

भाषा टीका—"हे लक्ष्मी देवी ! तुम यौवनपूर्ण सौन्दर्यशालिनी, योगमाया, तथा ईश्वरी हो । तुम्हारे हृदय पर नारियल के समान उन्नत दो स्तन हैं । मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ ।"

युग्मांगदविभूषाढया युवतीनां शिरोमणिः ।
यशोदासुतपत्नी च लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ।।

भाषा टीका—"हे लक्ष्मी देवी ! तुम अपने दोनों बाहुओं में अंगर (बाजूबन्द) धारण किये हुए हो । तुम युवतियों में शिरोमणि तथा यशोदापुत्र कृष्ण की पत्नी हो । मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ ।"

रूप यौवन सम्पन्ना रत्नालंकारधारिणी ।
राकेन्दुकोटिसौन्दर्य्या लक्ष्मि देवि नमोऽस्तुते ।।

भाषा टीका—"हे लक्ष्मी देवी ! तुम रूप यौवन से सम्पन्न, रत्नालंकार धारिणी तथा करोड़ों चन्द्रमाओं के समान सौन्दर्यपूर्ण हो । मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ ।"

रमा रामा रामपत्नी राजराजेश्वरी तथा
राज्यदा राज्यहन्त्री च लक्ष्मि देवि नमोऽस्तुते ।।

भाषा टीका—"हे लक्ष्मी देवी ! तुम्हीं रमा, रामा, राम-पत्नी, राजराजेश्वरी, राज्य प्रदान करने वाली तथा क्रुद्ध होने पर राज्य का हरण करने वाली हो मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ ।"

लीलालावण्यसम्पन्ना लोकानुग्रहकारिणी ।
ललना प्रीतिदात्री च लक्ष्मि देवि नमोऽस्तुते ।।

भाषा टीका—"हे लक्ष्मी देवी ! तुम लीला के लावण्य मे सम्पन्न, लोकों पर अनुग्रह करने वाली तथा ललनाओं को प्रीति प्रदान करने वाली हो। मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ।"

विद्याधरी तथा विद्या वसुदा त्वन्तु वन्दिता ।
विन्ध्याचलवासिनी च लक्ष्मि देवि नमोऽस्तु ते ।।

भापा टीका—"हे लक्ष्मी देवी ! तुम्हीं विद्या, तुम्हीं वसुदा (धनदात्री) और तुम्हीं वन्दनीया हो। तुम्हीं विन्ध्याचल पर निवास करती हो। मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ।"

शुभ काञ्चन गौरांगी शंखकंकणधारिणी ।
शुभदा शीलसम्पन्ना लक्ष्मि देवी नमोऽस्तुते।।

भाषा टीका—"हे लक्ष्मि देवी ! तुम निर्मल काञ्चन के समान गौरपूर्ण वाली, शंख और कंकण को धारण करने वाली, शुभदायक तथा शील सम्पन्ना हो। मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ।"

षट्चक्र भेदिनी त्वं हि षडैश्वर्य्यंप्रदायिनी ।
षोडशी वयसा त्वन्तु लक्ष्मि देवि नमोऽस्तुते ।।

भाषा टीका—"हे लक्ष्मी देवी ! तुम्हीं षट्चक्र का भेदन करने वाली तथा छै प्रकार के ऐश्वर्यों को देने वाली हो। तुम सोलह वर्ष की आयु वाली नवयुवती ही। मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ।"

सदानन्दमयी त्वं हि सर्व्वसम्पत्तिदायिनी ।
संसारतारिणी देवि शिरशा प्रणमाम्यहम् ।।

भाषा टीका—"हे देवि ! तुम्हीं सदानन्दमयी और तुम्हीं समस्त सम्पत्तियों को देने वाली हो। संसार से पार करने वाली भी तुम्हीं हो। मैं तुम्हें मस्तक झुका कर प्रणाम करता हूँ।"

सुकेशी सुखदा देवि सुन्दरी सुमनोरमा ।
सुरेश्वरी सिद्धिदात्री शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

भाषा टीका—"हे देवि ! तुम सुन्दर केशों वाली, सुखदाता, सुन्दरी, सुमनोरमा, सुरेश्वरी और सिद्धिदात्री हो। मैं तुम्हें मस्तक झुका कर प्रणाम करता हूँ।"

सर्व्वसंकटहन्त्री त्वं सत्यसत्त्वगुणान्विता ।
सीतापतिप्रिया देवि शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

भाषा टीका—"हे देवि ! तुम सब संकटों को दूर करने वाली, सत्य और सत्त्वगुणशालिनी तथा सीतापति रामचन्द्र की प्रियतमा हो। मैं तुम्हें मस्तक झुका कर प्रणाम करता हूँ।"

हेमांगिनी हास्यमुखी हरिचिन्तविमोहिनी ।
हरिपादप्रिया देवि शिरसा प्रणमाम्यहम् ॥

भाषा टीका—"हे देवि ! तुम्हारे अंगों का वर्ण स्वर्ण की प्रभा के समान है। तुम हास्यमुखी, श्रीहरि (नारायण) के चित्त को मोहित करने वाली हो। मैं तुम्हें मस्तक झुका कर प्रणाम करता हूँ।"

"क्षेमंकारी क्षमादात्री क्षौमवासोविधारिणी
क्षीणमध्या च क्षेमांगी लक्ष्मिदेवि नमोऽस्तुते"

भाषा टीका—हे लक्ष्मी देवी ! तुम कल्याण करने वाली, क्षमादात्री तथा क्षौम वस्त्रों को धारण करने वाली हो। तुम्हारी कटि क्षीण है। तुम क्षेमांगी हो। अर्थात् तुम्हारे अंगों में सम्पूर्ण तीर्थ एवं क्षेत्र विद्यमान हैं। मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ।"

लक्ष्मी-स्तव का माहात्म्य

श्री शिवजी ने कहा—"हे पार्वती ! तुम्हारे पूछने पर मैंने लक्ष्मी-माहात्म्य तथा अकारादि से क्षकारान्त वर्णमय 'लक्ष्मी-स्तव' का वर्णन किया है। इस कल्याण कारक स्तोत्र का प्रतिदिन तीनों सन्ध्याओं में प्रयत्नपूर्वक पाठ करना चाहिए।

जो लक्ष्मी देवी अभिलाषित प्रदान करने में कल्पलतिकारूपा हैं तथा जो भुक्ति-मुक्ति प्रदायिनी हैं, उन करुणामयी कमला का यत्न सहित पूजन करना चाहिए ।

जो मनुष्य इस स्तोत्र का पाठ करते हैं अथवा सुनते-सुनाते हैं, हे पार्वती ! उनके सम्पूर्ण मनोरथ पूरे होते है । इसमें सन्देह नहीं है ।

हे गौरी ! जो पुरुष भक्तिपूर्वक इस पवित्र स्तोत्र का पाठ करते हैं, उनके दर्शनमात्र से ही वादी मूकता को प्राप्त होता है इसमें सन्देह नहीं है ।

हे गिरिनन्दिनि ! जो लोग इस स्तोत्र को सुनते हैं अथवा दूसरों को सुनाते हैं अथवा पढ़ते-पढ़ाते हैं, उनके दर्शनमात्र से ही राजा लोग वशीभूत हो जाते हैं ।

जो मनुष्य इस लक्ष्मी स्तोत्र का कीर्त्तन करते हैं उनके दर्शनमात्र से ही दुष्ट गण दसों दिशाओं में भाग जाते हैं तथा भूत, प्रेत, ग्रह, यक्ष, राक्षस, सर्प आदि सभी भयभीत होकर चले जाते हैं—इसमें सन्देह नहीं है ।

जो मनुष्य इस स्तोत्र का पाठ करते हैं, उनके दर्शन करके देवता, दानव, गन्धर्व, किन्नर आदि सभी उन्हें भक्तिपूर्वक प्रणाम करते हैं ।

इस स्तवराज का कीर्त्तन करने से धनाभिलाषी को धन, पुत्राभिलाषी को पुत्र एवं राज्याभिलाषी को राज्य प्राप्त होता है ।

इस स्तव के कीर्त्तन से ब्रह्म हत्या, सुरापान, चोरी, गुरु-स्त्री-गमन के पातक, महापाप तथा अन्य प्रकार के उप-पातकों से मुक्ति मिल जाती है ।

इस लक्ष्मी स्तोत्र का कीर्त्तन करने वाले मुख से गद्य-पद्यमयी वाणी स्वयं प्रादुर्भूत हो उठती है तथा अष्ट-सिद्धियों की प्राप्ति होती है ।

हे गिरिनन्दिनि ! इस स्तोत्र का पाठ और स्मरण करने से बन्ध्या स्त्री को पुत्र की प्राप्ति होती है तथा गर्भिणी स्त्री सुखपूर्वक प्रसव करती है। यह मेरा कथन सत्य है।

जिन मनुष्यों को लक्ष्मीं-प्राप्ति (धन प्राप्ति) की कामना हो, उन्हें चाहिए कि वे इस स्तव को रोचना तथा कुंकुम के द्वारा भोज-पत्र पर लिखकर, गंध-पुष्पादि से भक्तिपूर्वक अर्चना कर, अपनी भुजा में धारण करें। पुरुषों को दाईं भुजा में तथा स्त्रियों को बाईं भुजा में धारण करना चाहिए। इस स्तवराज को धारण करने वाले मनुष्य को विपुल धन की प्राप्ति होती है तथा ऐसे स्त्री-पुरुष सदैव सुखी बने रहते हैं।

इस स्तवराज की कृपा से विष में निर्विषता, अग्नि में शीतलता एवं शत्रु में मित्रता प्रकट होती है।

हे सुरेश्वरी ! अधिक क्या कहा जाय, इस स्तव के प्रसाद से, स्तव के स्मरण-चिन्तन-ध्यान अथवा धारण करने वाले मनुष्य को अन्त समय वैकुण्ठधाम में नित्य निवास मिलता है, इसमें सन्देह नहीं है।"

कमला-कवच

अब 'कमला' के कवच को मूल-संस्कृत में नीचे दिया जा रहा है। बाद में उसका भाषा-अर्थ भी दे दिया गया है। साधक को चाहिए कि वह पाठ करते समय मूल-संस्कृत का ही प्रयोग करे।

कवच इस प्रकार है—

"लक्ष्मीर्मे चाग्रतः पातु कमला पातु पृष्ठतः
नारायणी शीर्षदेशे सर्व्वांगश्रीस्वरूपिणी,
रामपत्नी प्रत्यंगे तु सदावतु रमेश्वरी
विशालाक्षी योगमाया कौमारी चक्रिणी तथा,

जयदात्री धनदात्री पाशाक्षमालिनी शुभा
हरिप्रिया हरिरामा जयंकरी महोदरी,
कृष्णपरायणा देवी श्रीकृष्णमनोमोहिनी
जयंकरी महारौद्री सिद्धिदात्री शुभंकरी,
सुखदा मोक्षदा देवी चित्रकूटनिवासिनी
भयं हरेत्सदा पायाद् भवबन्धाद्विमोचयेत्''

भाषा टीका—लक्ष्मी मेरे अग्रभाग की रक्षा करें, कमला मेरे पीठ की रक्षा करें। नारायणी मेरे मस्तक की रक्षा करें तथा श्रीस्वरूपिणी देवी मेरे सर्वांग की रक्षा करें। जो देवी रामपत्नी और रमेश्वरी हैं, वे विशालनेत्रा योगमाया लक्ष्मी मेरे सम्पूर्ण अंगों की रक्षा करें। वे ही देवी कौमारी, चक्रिणी, जयदात्री, धनदात्री, पाश-अक्ष-मालिनी, शुभा, हरिप्रिया, हरि रामा, जयंकरीं, महोदरी, कृष्णपरायणा, श्रीकृष्ण मनोमोहिनी, जयंकारी, महारौद्री, सिद्धिदात्री, शुभंकरी, सुखदा, मोक्षदा तथा चित्रकूटवासिनी आदि नामों से प्रसिद्ध है। वे मेरे भय को सदैव दूर करें, सदैव मेरी रक्षा करें तथा मेरे भव-पाश का छेदन करें।''

कवच का माहात्म्य

जो व्यक्ति भक्तियुक्त होकर इस परमपवित्र कवच का प्रतिदिन तीनों सन्ध्याओं में पाठ करता है, वह सब संकटों से छूट जाता है।

इस कवच का पाठ करने से पुत्र और धन की वृद्धि होती है तथा भय दूर होता है। इसका माहात्म्य तीनों भुवनों में प्रसिद्ध है।

इस कवच को भोजपत्र के ऊपर रोचना और कुंकुम से लिखकर कण्ठ में धारण करने से समस्त कामनायें पूरी होती हैं।

इस कवच की कृपा से अपुत्री को पुत्र, धनाभिलाषी को धन एवं मोक्षार्थी को मोक्ष की प्राप्ति होती है।

जो स्त्रियाँ इस कवच को अपने कण्ठ में बाईं भुजा में धारण करती हैं उन्हें सब सुखों की प्राप्ति होती है। गर्भिणी स्त्री पुत्र प्राप्त करती है तथा बन्ध्या स्त्री गर्भ धारण करती है।

जो व्यक्ति इस कवच का प्रतिदिन भक्तिपूर्वक पाठ करते हैं, वे विष्णु की समानता प्राप्त करते हैं और उन्हें पृथ्वी पर मृत्यु-व्याधि आदि का भय नहीं रहता।

जो मनुष्य इस कवच को पढ़ते अथवा पढ़ाते हैं अथवा सुनते-सुनाते हैं, वे सब पापों से छूटकर परम गति को प्राप्त करते हैं।

इस कवच के पाठ अथवा धारण करने से विपत्ति में, घोर संकट में, गहन वन में, राजद्वार में, नौका में तथा रणभूमि में निश्चित रूप से विजय प्राप्त होती है।

अपुत्रा अथवा बन्ध्या-स्त्री यदि तीन पक्ष तक इस कवच को सुनती है तो उसे दीर्घायु एवं महायशस्वी सुपुत्र की प्राप्ति होती है।

जो मनुष्य शुद्ध बुद्धि से दो मास तक किसी ब्राह्मण के मुख से इस कवच को सुनता है, उसकी समस्त कामनाएँ पूरी होती हैं तथा समस्त बन्धन छूट जाते हैं।

मृतवत्सा स्त्री यदि तीन मास तक इस कवच को सुनती है तो वह जीववत्सा अर्थात् दीर्घायु सन्तान को जन्म देने वाली होती है। एक मास तक इस कवच का पाठ करने से रोगी मनुष्य रोग से छुटकारा प्राप्त कर लेता है।

इस कवच को भोजपत्र अथवा ताड़ पत्र पर लिखकर घर में स्थापित करने से अग्नि और चोर का भय दूर हो जाता है।

जो पुरुष इस कवच को प्रतिदिन सुनता है अथवा धारण करता है अथवा पढ़ता है अथवा दूसरे को पढ़ाता है, उसके ऊपर सम्पूर्ण देवता प्रसन्न बने रहते हैं।

अधिक क्या कहा जाय, जो मनुष्य इस कवच का पाठ करते हैं अथवा इसे धारण करते हैं, उसके ऊपर प्रसन्न होकर सब जीवों की स्वामिनी, आद्या शक्ति, भक्तों पर अनुग्रह करने वाली लक्ष्मी निश्चल रूप से उनके घर में सदैव निवास करती है। इसमें सन्देह नहीं है।

अष्ट योगिनी साधन

अब भूत डामर तन्त्र में वर्णित योगिनी-साधन की प्रणाली का वर्णन किया जाता है। यह महाविद्या अत्यन्त गोपनीय एवं देवताओं को भी दुर्लभ है। इन सब योगिनियों की पूजा करके ही कुबेर ने धनाधिप का पद प्राप्त किया है। साधक को चाहिए कि वह किसी भी योगिनी का विधिपूर्वक साधन करके अपने मनोरथ को प्राप्त करे।

यहाँ पर अष्ट योगनियों की साधन विधि कही जाती है। वे अष्ट योगिनियाँ इस प्रकार हैं—

(१) सुरसुन्दरी, (२) मनोहरा, (३) कनकवती, (४) कामेश्वरी (५) रतिसुन्दरी, (६) पद्मिनी, (७) नटिनी और (८) मधुमती।

सुरसुन्दरी योगिनी साधन

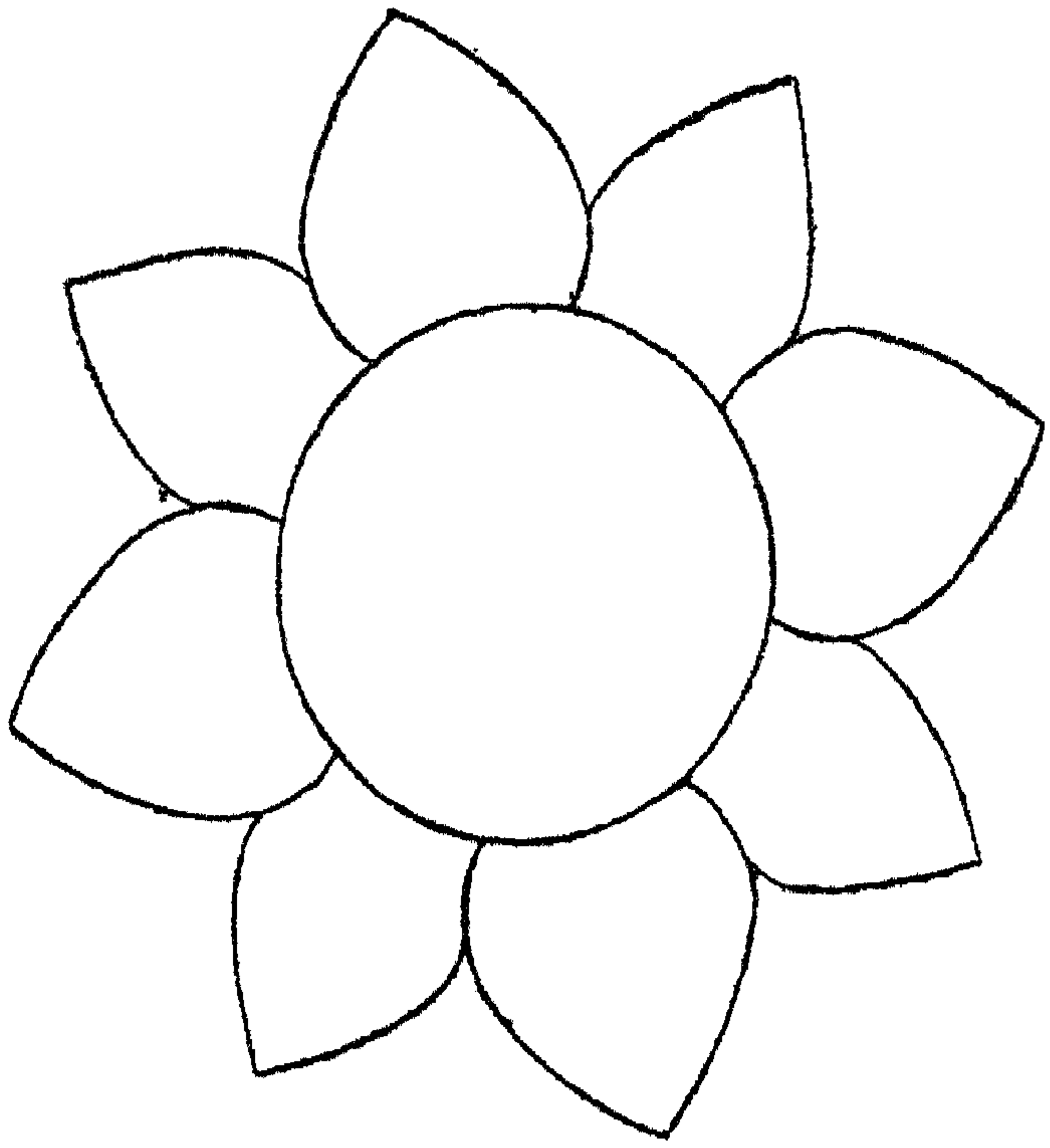
प्रातःकाल शैया से उठकर स्नान एवं सन्ध्या-वन्दन आदि नित्य कर्मों से निवृत्त हो ह्रौं इस मन्त्र से आचमन करके ॐ हुँ फट् इस मंत्र से दिग्बन्धन कर मूल मन्त्र से प्राणायाम करे।

मूल मन्त्र यह है—

ॐ ह्रीं आगच्छ सुरसुन्दरि स्वाहा।

फिर ह्रां अंगुष्ठाभ्याँ नमः इत्यादि क्रम से कराङ्गन्यास एवं ह्रीं मन्त्र से षडङ्गन्यास करे। तदुपरान्त भोजपत्र के ऊपर कुंकुम से एक अष्टदल कमल अंकित करके उस पद्म में देवी की प्राण प्रतिष्ठा कर,

पीठ देवता का आवाहन कर, सुरसुन्दरी योगिनी का ध्यान करे। अष्टदल कमल का स्वरूप नीचे की ओर प्रदर्शित किया गया है। ध्यान के समय सुरसुन्दरी योगिनी के चिन्तन का स्वरूप निम्नानुसार हो—



सुरसुन्दरी योगिनी जगत्प्रिया हैं। उनका मुँह चन्द्रमा के समान सुन्दर और शरीर गौरवर्ण है। वे विचित्र वस्त्रालंकारों से सुसज्जित हैं। उनके दोनों स्तन उन्नत तथा स्थूल हैं। वे सबको अभय प्रदान करती हैं।

चिन्तन के इस स्वरूप का निम्नलिखित श्लोकों में वर्णन किया गया है—

पीठे देवीः समावाह्य ध्यायेद्देवीं जगत्प्रियाम्।
पूर्ण चन्द्र निभां गौरीं विचित्राम्बर धारिणीम्।
पीनोत्तुंग कुचां वामां सर्वेषामभयप्रदाम्।

इस भाँति ध्यान करते हुये मूल मन्त्र से देवी का पूजन करे तथा मूलमन्त्र का उच्चारण करते हुये पाद्यादि प्रदान पूर्वक धूप, दीप, नैवेद्य, गन्ध, चन्दन और ताम्बूल निवेदन करे।

साधक को चाहिए कि वह प्रतिदिन तीनों सन्ध्याओं में ध्यान करके उक्त मन्त्र का एक-एक सहस्र की संख्या में जप करे।

उपर्युक्त प्रकार से एक मास तक जप करके महीने के अन्तिम दिन में बलि आदि विविध उपहारों के द्वारा देवी का पूजन करे। पूजा की समाप्ति में पूर्वोक्त मन्त्र का जप करता रहे।

इस प्रकार जप करने पर, अर्द्धरात्रि के समय सुरसुन्दरी योगिनी साधक को दृढ़-प्रतिज्ञ जानकर उसके घर पहुँचती है। उस समय साधक को चाहिए कि वह योगिनी को अपने सामने सुप्रसन्न एवं हास्य-मुख देखकर पुनर्वार पाद्यादि द्वारा पूजन करे तथा उत्तम चंदन और सुशोभित पुष्प प्रदान कर, उनसे अपने अभिलाषित वर की प्रार्थना करे।

उस समय साधक को चाहिए कि वह योगिनी को माता, बहन अथवा पत्नी—जो इच्छा हो—कहकर सम्बोधित करे।

यदि साधक मातृभाव से सुरसुन्दरी का भजन करता है तो वे साधक को विविध प्रकार के मनोहर द्रव्य प्रदान करती हैं तथा राज्य प्राप्ति की अभिलाषा प्रकट करने पर उसे भी दे देती हैं। वे प्रतिदिन साधक के निकट पहुँचकर उसका पुत्र की भाँति लालन-पालन करती हैं।

यदि साधक बहन के भाव से सुरसुन्दरी का भजन करता है तो वे अनेक प्रकार के पदार्थ तथा वस्त्र प्रदान करती हैं और साधक की इच्छापूर्ति के लिये दिव्य-कन्या एवं नाग-कन्या ला देती हैं। वे साधक को भूत, भविष्य और वर्तमान की सब घटनाओं को बता देती हैं तथा साधक जिस समय जिस वस्तु की अभिलाषा करता है, उसे वह वस्तु तत्काल ही प्रदान करती हैं। वे साधक का भाई की तरह पालन करती हैं और उसकी सब इच्छाओं को पूरा करती हैं।

यदि साधक पत्नीभाव से सुरसुन्दरी का भजन करता है तो वह साधक संसार के सब राजाओं में प्रधान होता है तथा स्वर्ग, मर्त्य

एवं पाताल लोक में बिना किसी रोक-टोक के विचरण कर सकता है। सुरसुन्दरी देवी साधक को जो पदार्थ अर्पण करती हैं, उनका वर्णन नहीं किया जा सकता। पत्नी रूप में साधक उनके साथ सुख-सम्भोग करता हुआ समय व्यतीत करता है। जब सुरसुन्दरी योगिनी पत्नी रूप में सिद्ध हो जायँ, तब साधक को चाहिये कि वह अपनी पत्नी अथवा अन्य किसी स्त्री के साथ सहवास न करे और उसकी आसक्ति को त्याग दे। अन्यथा देवी क्रुद्ध होकर साधक का नाश कर देती हैं।

मनोहरा योगिनी साधन

साधक को चाहिये कि वह नदी-तट पर जाकर स्नानादि नित्य-क्रियाओं को समाप्त कर पूर्वोक्त साधन के अनुसार न्यास आदि सब कार्यों को करे। फिर चन्दन द्वारा मण्डल अंकित करके उस मण्डल में देवी का मन्त्र लिखे। मन्त्र यह है—

ॐ ह्रीं मनोहरे आगच्छ स्वाहा।

मन्त्र लेखनोपरान्त मनोहरा योगिनी का ध्यान करे। ध्यान के समय चिन्तन का स्वरूप निम्नानुसार हो—

देवी के नेत्र हिरण के नेत्रों के समान सुन्दर, मुख शरद् चन्द्रमा के समान सुशोभित, ओठ बिम्बाफल के समान अरुण वर्ण, सर्वांग, सुगन्धित तथा चन्दन से अनुलिप्त, श्रेष्ठ आभूषण, वस्त्रादि धारण किये हुये। अत्यन्त स्थूल स्तन तथा शरीर का वर्ण श्याम है। वे विचित्र वर्ण वाली योगिनी कामधेनु के समान साधक को समस्त मनोभिलाषाओं को पूर्ण करती हैं।

चिन्तन के इस स्वरूप का निम्नलिखित श्लोकों में वर्णन किया गया है—

कुरंगनेत्रां शरदिन्दुवक्त्रां बिम्बाधरां चन्दन गन्धलिप्ताम्,
चीनांशुकां पीनकुचां मनोज्ञां श्यामां सदा कामदुघां विचित्राम्,

इस प्रकार योगिनी देवी का ध्यान करके, विधिपूर्वक पूजन कर, मन्त्र का जप करना चाहिये। अगर, धूप, दीप, गंध, पुष्प, मधु और ताम्बूल आदि से मूल मन्त्र द्वारा पूजन करे। तदुपरान्त मूल मन्त्र का प्रतिदिन दस सहस्र की संख्या में जप करे।

इस भाँति एक मास तक निरन्तर जप करता रहे। मास के अंतिम दिन में प्रातःकाल से मन्त्र जपना आरंभ करके दिन भर जप करता रहे। अर्द्ध रात्रि तक जप करते रहने पर मनोहरा योगिनी साधक को दृढ़प्रतिज्ञ जानकर, प्रसन्नतापूर्वक उसके पास आती है तथा साधक से कहती हैं—तुम्हारे मन में जो अभिलाषा हो, वह वर माँग लो। उस समय साधक पुनर्वार देवी का ध्यान करके पाद्यादि उपचार से उनका पूजन करे।

इस योगिनी की पूजा में ह्रीं मन्त्र से प्राणायाम तथा ह्रां अंगुष्ठाभ्या नमः इत्यादि प्रकार से करान्यास करना चाहिये।

तत्पश्चात् साधक सावधान होकर सद्योमाँस द्वारा बलि प्रदान पूर्वक चन्दन के जल एवं अनेक प्रकार के पुष्पों से मनोहरा देवी का पूजन करे तथा अपने मन की अभिलाषा योगिनी के समक्ष प्रकट करे। इस प्रकार साधन करने से योगिनी प्रसन्न होकर साधक के मन की सब अभिलाषाओं को पूरा करती है तथा उसे प्रतिदिन सौ स्वर्ण मुद्रा प्रदान करती है। साधक को चाहिये कि उसे योगिनी द्वारा जो धन प्राप्त हो, सब को व्यय कर दे, बचाकर न रक्खे। क्योंकि कुछ भी बचा लेने पर देवी क्रुद्ध होकर साधक को फिर कुछ नहीं देतीं।

इस योगिनी का साधन करने वाला व्यक्ति अन्य स्त्री के सहवास को त्याग दे। इस साधन के प्रभाव से साधक अव्याहतगति होकर सर्वत्र विचरण कर सकता है। यह योगिनी साधन सुरासुरगणों के पक्ष में भी अत्यन्त गोपनीय है।

कनकवती योगिनी साधन

साधक को चाहिये कि वह वट वृक्ष के नीचे बैठकर कनकवती

योगिनी का पूजन करे। ह्रीं मन्त्र से प्राणायाम तथा ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः इत्यादि प्रकार से करान्यास करे। संयत होकर सद्योमांस द्वारा बलि प्रदान पूर्वक पूजा करे। उच्छिष्ट रक्त द्वारा अर्घ्य प्रदान करके प्रतिदिन पूजा करनी चाहिये।

इस योगिनी के ध्यान का स्वरूप निम्नानुसार है—

यह देवी प्रचण्ड वदना है, अधर पके हुए बिम्बाफल के समान रक्त वर्ण हैं तथा इनके वस्त्रादि भी लालवर्ण के हैं। यह बालिका रूपिणी तथा साधक को सम्पूर्ण कामनायें देने वाली है।

चिन्तन के इस स्वरूप का निम्नलिखित श्लोक में वर्णन किया गया है—

प्रचण्डवदनां देवी पक्व बिम्बाधरां प्रिये।
रक्ताम्बरधरां बालां सर्वकामप्रदां शुभाम्।

योगिनी के उक्त स्वरूप का ध्यान करते हुए प्रतिदिन दस सहस्र की संख्या में मन्त्र जप करना चाहिये।

मन्त्र यह है—

ॐ ह्रीं हुं रक्षकर्मणि आगच्छ कलकवति स्वाहा।

इस मन्त्र का सात दिन तक पूजन और जप करते हुये आठवें दिन यथाविधि पूजन करे तथा मनोहर बलि प्रदान पूर्वक आधी रात तक मन्त्र का जप करे। उस समय देवी साधक को दृढ़ प्रतिज्ञ जानकर उसके घर आती है। तब साधक को अर्ध्यादि द्वारा देवी का पूजन करना चाहिये। इस साधन से योगिनी अपनी सेविकाओं सहित साधक की भार्या होकर उसे त्रिविध प्रकार की अभिलाषित भोज्य वस्तुयें प्रदान करती हैं तथा अपने भूषण-वस्त्रादि का परित्याग कर, अपने घर को चली जाती हैं और फिर प्रतिदिन आती रहती हैं।

विद्वान् साधक को चाहिये कि इस प्रकार सिद्धि करके अपनी भार्या (पत्नी) का परित्याग कर, कनकावती योगिनी का भजन करे।

कामेश्वरी योगिनी साधन

साधक को चाहिये कि वह पूर्वोक्त विधि से पूजादि कर शोभायमान भोजपत्र के ऊपर गोरोचन द्वारा सर्वालंकारों से अलंकृत देवी की प्रतिमूर्ति का निर्माण करे, फिर शैया पर बैठकर एकाग्रचित्त से मूल मन्त्र का जप करे। मन्त्र यह है—

ॐ ह्रीं आगच्छ कामेश्वरि स्वाहा।

इस मन्त्र का एक मास तक प्रतिदिन एक सहस्र संख्या में जप करना चाहिये। इस योगिनी की पूजा और मन्त्र जप के समय घृत एवं मधु द्वारा दीपक जलाना उचित है। देवी के स्वरूप का निम्न प्रकार से ध्यान करना चाहिये—

कामेश्वरी देवी चन्द्रमा के समान मुखवाली हैं, उनकी आँखें खंजन की भाँति चञ्चल हैं और वे सदैव चंचल गति से विचरण करती रहती हैं। उनके हाथों में पुष्पवाण है।

चिन्तन के इस स्वरूप का निम्नलिखित श्लोक में वर्णन किया गया है—

कामेश्वरीं शशांकास्यां चलत्खञ्जनलोचनाम्,
सदा लोलगतिं कान्तां कुसुमास्त्रशिलीमुखम्।

इस विधि से ध्यान, पूजन और मन्त्र का जप करने से कामेश्वरी योगिनी प्रसन्न होकर साधक के पास आती है और साधक से कहती हैं कि मैं तुम्हारी किस आज्ञा का पालन करूँ? उस समय साधक को चाहिए कि वह पत्नी भाव से योगिनी का पाद्यादि द्वारा पूजन करे। ऐसा होने पर देवी अत्यन्त प्रसन्न होकर साधक को परितुष्ट करती है तथा अन्नादि अनेक भोज्य पदार्थों द्वारा उसका पति के समान पालन करती हैं। वे साधक के समीप रात्रि बिताकर ऐश्वर्यादि सुखयोग की सामग्री, विपुल धन तथा अनेक प्रकार के वस्त्रालंकार देकर प्रातःकाल चली जाती हैं। इस तरह प्रत्येक रात्रि में वे साधक के पास आती हैं और उसकी इच्छानुसार सिद्धि प्रदान करती हैं।

रतिसुन्दरी योगिनी साधन

साधक को चाहिए कि वह सर्वप्रथम पट्ट (रेशमी) वस्त्र में योगिनी की प्रतिपूर्ति अंकित करे। ध्यान में देवी का जो स्वरूप कहा गया है, उसी के अनुसार प्रतिमूर्ति बनानी चाहिए।

ध्यान का स्वरूप इस प्रकार है—

रतिसुन्दरी योगिनी स्वर्ण के समान वर्ण वाली गौरांगी तथा वायजेब, बाजूबन्द, हार आदि सब प्रकार के अलंकारों से अलंकृत हैं। उनके दोनों नेत्र खिले हुए कमल के समान सुन्दर हैं।

ध्यान के इस स्वरूप का निम्न श्लोक में वर्णन किया गया है—

सुवर्णवर्णा गौरांगी सर्वालंकारभूषिताम्।
नूपुरांगदहाराढ्यां रम्यां च पुष्करेक्षणाम्॥

इस प्रकार देवी के स्वरूप का चिन्तन कर पाद्य, चन्दन एवं चमेली आदि के पुष्पों से पूजन कर, मूल मन्त्र का जप करना चाहिए। मूल मन्त्र यह है—

ॐ ह्रीं आगच्छ रतिसुन्दरि स्वाहा।

इस मन्त्र का प्रतिदिन आठ सहस्र की संख्या में जप करना चाहिए। तदुपरान्त मूलमन्त्र से गूगल, धूप और दीप प्रदान करना चाहिए। एक मास तक इस प्रकार जप करके महीने के अन्तिम दिन में फिर पूजन करना चाहिए और घी का दीपक, गन्ध, पुष्प, ताम्बूल निवेदित करके 'रति सुन्दरी योगिनी' के आगमन की प्रतीक्षा करनी चाहिए। जब तक देवी न आये, तब तक जप करता रहे। इस प्रकार साधक को दृढ़ प्रतिज्ञा जानकर योगिनी देवी रात्रिकाल में आती हैं। उस समय साधक को चाहिए कि वह चमेली के फूलों से रचित माला द्वारा भक्तिपूर्वक योगिनी का पूजन करे। उस स्थिति में देवी साधक से संतुष्ट होकर, उसे रति एवं भोज्य पदार्थ प्रदान कर सन्तुष्ट करती हैं तथा उसकी भार्या (पत्नी) होकर अभिलाषित वर देती हैं। देवी साधक

के समीप रात्रि व्यतीत कर प्रातःकाल के समय अपने वस्त्राभूषण त्याग कर चली जाती हैं, फिर साधक की आज्ञानुसार प्रतिदिन आती-जाती बनी रहती हैं।

पद्मिनी योगिनी साधन

साधक को चाहिए कि वह अपने घर के किसी एकान्त स्थान में अथवा शिव मन्दिर के समीप पूर्वोक्त विधि से पूजादि कर चन्दन द्वारा मण्डल अंकित करे और उस मण्डल में 'पद्मिनी योगिनी के मूल मन्त्र को लिखे। मूल मन्त्र यह है—

ॐ ह्रीं आगच्छ पद्मिनि स्वाहा।

निम्नलिखित अनुसार देवी के स्वरूप का चिन्तन करना चाहिए—

पद्मिनी योगिनी का मुख कमल के समान सुन्दर है। उनका शरीर अत्यन्त कोमल तथा श्याम वर्ण है। उनके दोनों स्तन उन्नत तथा स्थूल है। उनके ओठों पर सदैव मुस्कान विराजती रहती है। उनके नेत्र लाल कमल जैसे हैं।

निम्नलिखित श्लोक में देवी के ध्यान के स्वरूप का वर्णन किया गया है—

पद्माननां श्यामवर्णां पीनोत्तुंग पयोधराम्।
कोमलांगीं स्मेरमुखीं रक्तोत्पलदलेक्षणाम्॥

उक्त विधि से ध्यान करते हुए प्रतिदिन एक सहस्र की संख्या में मूलमन्त्र का जप करना चाहिए। इस प्रकार एक मास तक जप करके मास के अन्तिम दिन की पूर्णिमातिथि को यथाविधि पूजन करके अर्द्ध-रात्रि तक योगिनी के मन्त्र का जप करता रहे। तब पद्मिनी योगिनी साधक को दृढ़ प्रतिज्ञा जान कर उसके समीप आती है तथा उसका सब प्रकार से मंगल बढ़ाती हुई घर में उपस्थित होती है। तदुपरान्त वे साधक की पत्नी बनकर उसे विविध प्रकार के भोग, भोज्य पदार्थ, आभूषण आदि देकर सन्तुष्ट करती हैं। वे पति के समान साधक का

पालन करती हैं। साधक को चाहिए कि वह पद्मिनी योगिनी के सिद्ध हो जाने पर अन्य स्त्री का परित्याग करके पद्मिनी का ही चिन्तन करे।

नटिनी योगिनी साधन

साधक को चाहिए कि वह अशोक वृक्ष के नीचे जाकर पूर्वोक्त विधि से स्नानादि कर मूल मन्त्र से 'नटिनी योगिनी का पूजन करे। मूल मन्त्र यह है—

ॐ ह्रीं नटिनि स्वाहा।

पूजन के समय देवी के निम्नलिखित स्वरूप का ध्यान करना चाहिए—

नटिनी योगिनी अपने रूप लावण्य से तीनों भुवनों को मोहित कर रही हैं। वे गौरवर्ण वाली, विचित्र वस्त्रधारिणी, विचित्र अलंकारों से सुसज्जित एवं नर्त्तकी रूप धारिणी है।

निम्नलिखित श्लोक में नटिनी योगिनी के ध्यान के स्वरूप का वर्णन किया गया है—

त्रैलोक्यमोहिनी गौरी विचित्राम्बरधारिणीम्।
विचित्रालंकृतां रम्यां नर्त्तकीवेषधारिणीम्।

उक्त विधि से ध्यान करके प्रतिदिन एक सहस्र की संख्या में मूल मंत्र का जप करे तथा मांसोपहार से देवी की पूजा कर, धूप निवेदित कर, गंध, पुष्प, ताम्बूल आदि प्रदान करे। इस प्रकार एक मास तक पूजन और मंत्र का जप करता रहे। महीने के अन्तिम दिन महा पूजा करे। उस दिन अर्द्धरात्रि के समय नटिनी योगिनी आकर साधक को भय दिखाती हैं, परन्तु साधक को चाहिए कि वह भयभीत हुए बिना मन्त्र का जप करता रहे। तब देवी साधक को दृढ़ प्रतिज्ञ जानकर उसके घर गमन करती हैं और सम्पूर्ण विद्याओं की ज्ञात वे

देवी मुस्कराती हुई साधक से कहती हैं—तुम अपना अभिलाषित वर माँगो। देवी का वचन सुनकर, साधक अपने मन में स्थिर करके उन्हें अपनी माता, बहन अथवा पत्नी के रूप में सम्बोधित करके तदनुसार आचरण करे तथा अपनी भक्ति द्वारा देवी को सन्तुष्ट करे। उस समय देवी सन्तुष्ट होकर साधक के मनोरथ को पूर्ण करती हैं।

यदि साधक देवी का मातृभाव में भजन करता है तो वे उसका पुत्र के समान पालन करती हैं और प्रतिदिन सौ स्वर्णमुद्रा तथा अभिलाषित पदार्थ प्रदान करती हैं।

यदि साधक देवी का बहन भाव में भजन करता है तो वे उसके लिए प्रतिदिन नाग-कन्या एवं राज-कन्या लाकर देती है और उसे भूत, भविष्यत, वर्त्तमान तीनों काल की घटनाओं का ज्ञान कराती रहती है।

यदि साधक देवी का पत्नीभाव में भजन करता है तो वे उसे प्रतिदिन विपुल धन प्रदान करती हैं तथा अन्नादि नाना प्रकार के उपचारों द्वारा यथेप्सित भोजन तथा सौ स्वर्ण मुद्रा प्रदान करती है।

मधुमती योगिनी साधन

साधक को चाहिए कि यह भोजपत्र पर कुंकुम द्वारा स्त्री की प्रतिमूर्ति बनाकर उसके बाह्य भाग में अष्टदल कमल अंकित करके न्यासादि करे और उसमें प्राणप्रतिष्ठा करके प्रसन्नचित्त से देवी का ध्यान करे।

देवी के ध्यान का स्वरूप इस प्रकार बताया गया है—

मधुमती योगिनी देवी विशुद्ध स्फटिक के समान शुभ्र वर्ण वाली हैं। अनेक प्रकार के आभूषणों से सुशोभित तथा पायजेब, हार, केयूर एवं रत्न जटिल कुण्डलों से सुसज्जित है।

निम्नलिखित श्लोक में मधुमती योगिनी के ध्यान के स्वरूप का वर्णन किया गया है—

शुद्धस्फटिकसंकाशां नानालंकारभूषिताम् ।
मञ्जीरहारकेयूररत्नकुण्डलमण्डिताम् ॥

इस प्रकार देवी का ध्यान करते हुए प्रतिदिन एक सहस्र की संख्या में मूल मन्त्र का जप करना चाहिए। मूल मन्त्र इस प्रकार है—

ॐ ह्रीं आगच्छ अनुरागिणि मैथुनप्रिये स्वाहा ।

प्रतिपदा तिथि से साधन आरम्भ करके पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि उपहारों सहित तीनों सन्ध्याओं में देवी का पूजन करे। इस प्रकार एक मास तक पूजन और मन्त्र जाप करके पूर्णिमा के दिन गन्धादि उपचारों से देवी का पूजन करे तथा घृत का दीपक जला कर और धूप देकर दिन-रात मन्त्र का जप करे।

इस तरह पूजन और जप करने पर प्रभात के समय देवी साधक के समीप आती हैं और प्रसन्न होकर उसे रति एवं भोज्य पदार्थों द्वारा सन्तुष्ट करती हैं। तदुपरान्त वे साधक को प्रतिदिन देवकन्या, दानव-कन्या, नाग-कन्या, यक्ष-कन्या, गन्धर्व-कन्या, विद्याधर-कन्या तथा विविध प्रकार के रत्न, आभूषण, चर्व्य, चोष्य-लेह्य भोज्यादि पदार्थ प्रदान करती हैं। स्वर्ग, मर्त्य तथा पाताल में जो भी वस्तुयें विद्यमान हैं, उन सबको साधक की इच्छानुसार लाकर उसे समर्पित करती हैं तथा प्रतिदिन सौ स्वर्ण-मुद्रा भी प्रदान करती हैं।

वे प्रतिदिन साधक को अभिलाषित वर देकर अपने स्थान को प्रस्थान कर जाती हैं। देवी के प्रसाद से साधक निरामय शरीर (स्वस्थ) होकर चिरकाल तक जीवित रहता है। देवी के वर से साधक सर्वज्ञ, सुन्दर कलेवर वाला तथा श्रीमान होता है। उसे सर्वत्र आने-जाने की सामर्थ्य प्राप्त हो जाती है। वह प्रतिदिन योगिनी देवी के साथ क्रीडा कौतुकादि का सुख प्राप्त करता है। यह मन्त्र सब कार्यों में सिद्धि प्रदान करने वाला है। समस्त सिद्धियों को देने वाली मधुमती देवी अत्यन्त गुह्य हैं।

योगिनी साधन के लिए विशेष निर्देश

बुद्धिमान साधक को चाहिए कि यह हविष्याशी तथा जितेन्द्रिय होकर वसन्त काल में योगिनी का साधन करे सदैव योगिनी का ध्यान करके उनके दर्शनों के लिए उत्सुक रहे। उज्जट नथवा प्रान्तर स्थान में इस साधन को करे। विशेप कर कामरूप देश में यह सिद्धि कार्य विशेष फल को देने वाला है। पूर्वोक्त सभी स्थानों में से किसी एक में एकाग्रचित्त से साधन करना चाहिए। इस प्रकार विधिपूर्वक साधन करने से साधक को देवी का दर्शन, समीप्य एवं अभिलाषित बर की प्राप्ति होती है। जो लोग देवी के सेवक हैं, वे ही इस साधन को करने के अधिकारी हैं। जो व्यक्ति ब्रह्मवेत्ता अर्थात् ब्रह्म को जानने वाले हैं, उन्हें यह साधन करने का अधिकार नहीं है।

अष्टनायिका साधन

अब आठ प्रकार की नायिकाओं की साधन-विधि एवं उनके मन्त्रों का वर्णन किया जाता है।

अष्ट नायिकाओं के नाम इस प्रकार हैं—

१. जया, २. विजया, ३. रतिप्रिया, ४. काञ्चन-कुण्डली, ५. स्वर्णमाला, ६. जयावती, ७. सुरंगिणी और ८. विद्राविणी।

'जया' साधन

मन्त्र—

"ॐ ह्लीं ह्लीं नमो नमः जये हुँ फट्"

साधन विधि—एक अमावस्या से आरम्भ करके दूसरी अमावस्या तक इस मन्त्र का प्रतिदिन पाँच हजार की संख्या में जप करना चाहिए। जप की क्रिया किसी एकान्त स्थान में अथवा समीपस्थ शून्य शिव-मन्दिर में बैठकर करनी चाहिए।

जप समाप्त होने पर अर्द्धरात्रि के समय 'जया' नामक नायिका साधक के समक्ष प्रकट होकर उसे अभिलाषित वर प्रदान करती है।

'विजया' साधन

मन्त्र—

"ॐ हिलि हिलि कुटी कुटी तुहु तुहु मे वशं वशमानय विजये अः अः स्वाहा"

साधन विधि—नद तटवर्ती श्मशान में जो भी वृक्ष हो, उसके ऊपर चढ़कर रात्रि के समय में, उक्त मन्त्र का जप करना चाहिए। तीन लाख मन्त्र का जप पूरा हो जाने पर 'विजया' नामक नायिका प्रसन्न होकर साधक के वशीभूत होती है] और उसे अभिलाषित वर प्रदान करती है।

रतिप्रिया साधन

"हुँ रतिप्रिये साधय-साधय जल-जल धीर-धीर आज्ञापय स्वाहा"

पाठ-भेद के अनुसार इस मन्त्र का दूसरा स्वरूप इस प्रकार है—

"हुँ रतिप्रिये साधे साधे जल जल धीर धीर आज्ञापय स्वाहा"

साधन विधि—रात्रिकाल में नग्न होकर, नाभि के बराबर जल में बैठकर अथवा खड़े होकर इस मन्त्र का जप करना चाहिए। छै महीने तक हविष्याषी होकर रातभर जप करना चाहिए। इस प्रकार जप समाप्त होने पर 'रतिप्रिया' नामक नायिका वशीभूत होकर साधक को इच्छित वर प्रदान करती है।

काञ्चनकुण्डली साधन

मन्त्र—

"ॐ लोलजिह्वे अट्टाट्टहासिनि सुमुखिः काञ्चनकुण्डलिनी खे छ च क्षे हुं"

साधन विधि—गोबर की एक पुतली बनाकर एक वर्ष तक पाद्यादि द्वारा कांचनकुण्डली नामक नायिका का पूजन और उक्त मन्त्र का जप करने से सिद्धि प्राप्त होती है। तिराहे पर स्थित बरगद वृक्ष की जड़ में बैठकर, रात्रि के समय गुप्त भाव से इस मन्त्र का जप करना चाहिए। जप समाप्त हो जाने पर 'काञ्चन कुण्डली' नामक नायिका साधक के वशीभूत होकर, उसे इच्छित वर प्रदान करती है।

स्वर्णमाला साधन

मन्त्र—

"ॐ जय जय सर्वदेवासुर पूजिते स्वर्णमाले हुँ हुँ ठः ठः स्वाहा"

साधन विधि—ग्रीष्म काल के चैत्र, वैशाख और ज्येष्ठ—इन तीन महीनों में मरुभूमि में बैठकर, पंचाग्नि में अर्थात् अपने चारों ओर चार अग्निकुण्ड जलाकर और मस्तक के ऊपर तपते हुए सूर्य की धूप में बैठकर इस मन्त्र का जप करने से 'स्वर्णमाला' नामक नायिका सिद्ध होती है और वह साधक के वशीभूत होकर उसे अभिलाषित वर प्रदान करती है।

जयावती साधन

मन्त्र—

"ॐ ह्रीं क्लीं स्त्रीं हुँ द्रुँ ब्लुँ जयावती यमनिकृन्तनि क्लीं क्लीं ठः"

साधन विधि—आषाढ़, श्रावण और भाद्रपद—इन तीन महीनों में निर्जन वन के मध्यस्थ सरोवर के जल में रात्रि के समय बैठकर अथवा खड़े होकर उक्त मन्त्र का जप करने से 'जयावती' नामक नायिका सिद्ध होकर साधक के वशीभूत होती है और उसे इच्छित वर प्रदान करती है।

सुरंगिणी साधन

मन्त्र—

"ॐ ॐ ॐ हुँ सिशि घ्रा हुँ हुँ प्रयच्छ सुर सुरंगिणी महामाये साधकप्रिये ह्रीं ह्रीं स्वाहा"

साधन विधि—प्रतिदिन रात्रिकाल में शय्या पर बैठकर उक्त मन्त्र का पाँच हजार जप करने से छै वर्षों में सिद्धि प्राप्त होती है। सिद्ध हो जाने पर 'सुरंगिणी' नामक नायिका साधक के वशीभूत होकर उसे अभिलाषित वर प्रदान करती है।

विद्राविणी साधन

मन्त्र—

"हँ यँ वँ लँ वँ देवि रुद्रप्रिये विद्राविणि ज्वल ज्वल साधय साधय कुलेश्वरि स्वाहा"

साधन विधि—जिस व्यक्ति की युद्ध में मृत्यु हुई हो, उसकी अस्थि (हड्डी) को अपने गले में धारण कर, रात्रि के समय किसी एकान्त स्थान में बैठकर उक्त मन्त्र का प्रतिदिन जप करना चाहिए। जिस दिन बारह लाख मन्त्र का जप समाप्त होगा, उस दिन 'विद्राविणी' नामक नायिका साधक के वशीभूत होकर, उसे इच्छित वर प्रदान करेगी।

षट्किन्नरी साधन

अब क्रोधराज महेश्वर द्वारा गुह्यकाधिपति कुबेर के निकट जो किन्नरी साधन प्रकाशित किया था, उसका वर्णन किया जाता है। इस साधन के प्रसाद से मनुष्य देवताओं का भी नाश कर सकता है। यह साधन साधक को त्रिभुवन पर आधिपत्य प्रदान करता है तथा सब मनोरथों को पूर्ण करता है।

किन्नरी छः हैं—

(१) मनोहारिणी, (२) सुभगा, (३) विशाल नेत्रा, (४) सुरत प्रिया, (५) सुमुखी और (६) दिवाकरमुखी।

इन किन्नरियों के साधन-मन्त्र और साधन विधि निम्नानुसार हैं।

मनोहारिणी किन्नरी साधन

मन्त्र—

"ॐ मनोहारिणी ह्रौं"

साधन विधि—साधक को चाहिए कि वह किसी पर्वत के शिखर पर बैठकर उक्त मन्त्र का आठ सहस्र की संख्या में जप करे। जप समाप्त हो जाने पर नीलगाय के मांस से पूजन कर गूगल की धूप देकर पुन: जप करना चाहिए। इस विधि से साधन करने पर अर्द्ध रात्रि के समय 'मनोहारिणी किन्नरी' साधक के समीप आती है। साधक को चाहिए कि वह उसे देखकर भयभीत न हो। जब किन्नरी आकर कहे—"तुम मुझे क्या आज्ञा देते हो?" उस समय साधक

उत्तर दे—"तुम मेरी पत्नी हो जाओ। यह सुनकर किन्नरी साधक की भार्या होना स्वीकार कर लेती है तथा साधक को अपनी पीठ पर चढ़ाकर स्वर्ग का दर्शन कराती है और उसे भोजन तथा अन्यान्य अभिलषित वस्तुएँ प्रदान करती है।

सुभगा किन्नरी साधन

मन्त्र—

"ॐ सुभगे स्वाहा"

साधन विधि—साधक को चाहिए कि वह व्रत रखकर पर्वत, वन अथवा देव मन्दिर में बैठकर उक्त मन्त्र का दस सहस्र जप करे। इसके फलस्वरूप 'सुभगा किन्नरी' साधक के समीप आकर अपने हाथों से उसकी सेवा करती है तथा उसकी पत्नी बनकर, उसे प्रतिदिन आठ स्वर्ण-मुद्रा प्रदान करती है।

विशालनेत्रा किन्नरी साधन

मन्त्र—

"ॐ विशाल नेत्रे स्वाहा"

साधन विधि—रात्रि काल में नदी के तट पर जाकर उक्त मन्त्र का दस सहस्र की संख्या में जप करे तथा किन्नरी का विधिवत् पूजन कर उक्त मन्त्र का पुनर्वार जप करे तो रात्रि के अन्त में 'विशालनेत्रा किन्नरी' साधक के समीप आकर, उसकी पत्नी होकर, प्रतिदिन प्रसन्न हृदय से आठ स्वर्ण मुद्रा प्रदान करती है तथा उसकी सब इच्छाओं को पूरा करती है।

सुरतप्रिया किन्नरी साधन

मन्त्र—

"ॐ सुरतप्रिये स्वाहा"

साधन विधि—रात्रि के समय किसी नदी के संगम-स्थल पर

जाकर उक्त मन्त्र का आठ सहस्र की संख्या में जप करे। जप के अन्त में पहले दिन ही 'सुरतप्रिया किन्नरी' शीघ्रता पूर्वक साधक के समीप आकर अपनी दिव्य मूर्ति प्रदर्शित करती है। दूसरे दिन इसी प्रकार जप के अन्त में उपस्थित होकर, साधक के सामने बैठकर बातें करती है और तीसरे दिन इसी प्रकार जप के अन्त में आकर साधक की पत्नी होना स्वीकर करती है तथा उसे प्रतिदिन दिव्य वस्त्र एवं आठ स्वर्ण-मुद्रा प्रदान करती है। साथ ही साधक की समस्त मनोभिलाषाओं को भी पूर्ण करती है।

सुमुखी किन्नरी साधन

मन्त्र—

"ॐ सुमुखि स्वाहा"

साधन विधि—साधक को चाहिए कि वह प्रतिदिन पर्वत के शिखर पर चढ़कर मांसाहार प्रदान पूर्वक उक्त मन्त्र का दस सहस्र की संख्या में जप करे। जप के अन्त में 'सुमुखी किन्नरी' साधक के समीप आकर मौनभाव से उसका चुम्बन और आलिंगन करती है। तदुपरान्त प्रसन्न होकर उसकी पत्नी बन जाती है और साधक को प्रतिदिन उत्तम भोज्य पदार्थ तथा आठ स्वर्ण-मुद्रा प्रदान करती है।

दिवाकरमुखी किन्नरी साधन

मन्त्र—

"ॐ दिवाकरमुखी स्वाहा"

साधन विधि—साधक को चाहिए कि वह रात्रि के समय पर्वत के शिखर पर बैठकर उक्त मन्त्र का दस सहस्र संख्या में जप करे। तदुपरान्त 'दिवाकर मुखी' किन्नरी का विधिपूर्वक पूजनकर, पुनर्वार आठ सहस्र की संख्या में मन्त्र का जप करे तो 'दिवाकरमुखी किन्नरी' प्रसन्न होकर साधक के समीप आती है और उसकी पत्नी बन जाती है। तत्पश्चात् वह प्रतिदिन कोई न कोई अभिलषित वस्तु, आठ स्वर्ण-मुद्रा और अनेक रसयुक्त भोज्य पदार्थ आदि साधक को प्रदान करती है।

अष्ट नागिनी साधन

अब आठ प्रकार की नागिनियों को सिद्ध करने के मन्त्र और उनकी साधन विधि का वर्णन किया जाता है। तन्त्र शास्त्रों में लिखा है कि किसी भी नागिनी का साधन करते समय उसकी माता, बहन अथवा पत्नी के रूप में चिन्तन करना चाहिये। साधक द्वारा जिस नागिनी का जिस रूप में भी चिन्तन किया जायगा, वह उसी रूप में उसकी मनोभिलाषा को पूर्ण करती है।

नीचे सबसे पहले नागिनी साधन के विभिन्न मन्त्र दिये गये हैं, तदुपरान्त उनकी साधन विधियों का वर्णन किया गया है। जिस प्रकार से साधन किया जाय, उसकी साधन विधि में नागिनी के माता बहन अथवा पत्नी में से जिस स्वरूप का वर्णन किया गया है—उस साधन विधि में नागिनी के उसी स्वरूप का चिन्तन करना चाहिये।

नागिनियों की संख्या आठ कही गई है। उनके नाम इस प्रकार हैं—

१. अनन्त मुखी, २. कर्कोटमुखी, ३. पद्मिनी मुखी, ४. तक्षक मुखी, ५. महापद्म मुखी, ६. वासुकी मुखी, ७. कुलीर मुखी और ८. शंखनी।

अनन्त मुखी नागिनी मन्त्र

ॐ पूः अनन्तमुखी स्वाहा।

इस मन्त्र से अनन्त मुखी नागिनी की उपासना करनी चाहिये।

कर्कोटमुखी नागिनी मन्त्र

ॐ पू: कर्कोटमुखी स्वाहा।

इस मन्त्र से कर्कोटमुखी नागिनी की उपासना करनी चाहिये।

पद्मिनी मुखी नागिनी मन्त्र

ॐ पू: पद्मिनी मुखी स्वाहा।

इस मन्त्र से पद्मिनीमुखी नागिनी की उपासना करनी चाहिये।

तक्षकमुखी नागिनी मन्त्र

ॐ कालजिह्वा पू: स्वाहा।

इस मन्त्र से तक्षकमुखी नागिनी की उपासना करनी चाहिये।

महापद्ममुखी नागिनी मन्त्र

ॐ महापद्मिनी पू: स्वाहा।

इस मन्त्र से महापद्ममुखी नागिनी की उपासना करनी चाहिये।

वासुकीमुखी नागिनी मन्त्र

ॐ वासुकीमुखी स्वाहा।

इस मन्त्र से वासुकी मुखी नागिनी की उपासना करनी चाहिये।

कुलीरमुखी नागिनी मन्त्र

ॐ हूँ हूँ पूर्वभूप मुखी स्वाहा।

इस मन्त्र से कुलीर मुखी नागिनी की उपासना करनी चाहिये।

शंखिनी नागिनी मन्त्र

ॐ शंखनी वायुमुखी हुं हुं।

इस मन्त्र से शंखनी नागिनी की उपासना करनी चाहिये।

नागिनी मन्त्र साधन विधि

निम्नलिखित विधियों में से किसी भी एक विधि के अनुसार किसी भी नागिनी मन्त्र का साधन करने से वह नागिनी प्रसन्न होकर साधक

को साधन विधि में उल्लिखित सामग्री प्रदान करती है। जिस साधन विधि में नागिनी को जिस रूप में स्मरण करने का विधान कहा गया है, उसमें उसी रूप से नागिनी का ध्यान करना चाहिये। किसी भी मन्त्र को किसी भी साधन विधि के अनुसार सिद्ध किया जा सकता है। किसी विशेष मन्त्र के लिये कोई विशेष साधन विधि ही नहीं है। साधन विधियाँ निम्नानुसार हैं—

पहली विधि

नाग लोक में जाकर किसी भी नागिनी मन्त्र का एक लाख जप करने से अष्ट नागिनी प्रसन्न होकर साधक की सब इच्छाओं को पूरा करती हैं।

दूसरी विधि

शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि के दिन नागलोक में जाकर बलिदान करके, गन्ध-पुष्पादि के उपचार द्वारा पूजन और मन्त्र का जप करने से सहस्र नाग-कन्यायें साधक के पास आती है। उस समय साधक को दूध का अर्घ्य देकर उनसे कुशल-क्षेम पूछनी चाहिये। तदुपरान्त वे नाग-कन्यायें साधक की पत्नी के रूप में उसका मनोरथ पूर्ण करती हैं और उसे आठ स्वर्ण-मुद्रा प्रदान करती हैं।

तीसरी विधि

किसी नदी के संगम-स्थल पर जाकर दूध भोजन सहित नागिनी-मन्त्र का प्रतिदिन एक सहस्र जप करे तो नाग-कन्या प्रतिदिन साधक के पास आती है। उस समय साधक को चन्दन के जल से अर्घ्य देना चाहिये। तदुपरान्त वह नाग-कन्या साधक को पत्नी बनकर उसे पाँच स्वर्ण-मुद्रा तथा अनेक प्रकार के भोज्य-पदार्थ भेंट करती है।

चौथी विधि

किसी नदी के संगम स्थल में बैठकर नागिनी मन्त्र का आठ सहस्र जप करे। जप के अन्त में नाग कन्या साधक के समीप आ

उपस्थित होती है। उस समय साधक को चाहिये कि वह नागिनी को सूर्य वर्ण का आसन देकर कुशल क्षेम पूछे। इस प्रकार वह नाग-कन्या साधक की पत्नी होकर प्रतिदिन १०० पल स्वर्ण प्रदान करती है। साधक को चाहिये कि उसे नाग-कन्या द्वारा जो भी स्वर्ण प्राप्त हो। उस सबको उसी दिन व्यय कर दे। उस स्वर्ण को संचित करके नहीं रखना चाहिये।

पाँचवी विधि

रात्रि के समय सरोवर पर जाकर नागिनी मन्त्र का आठ सहस्र जप करे तो सुन्दरी नाग कन्या साधक के समीप आती है और उसकी भगिनी स्वरूपा होकर प्रतिदिन स्वर्ण-मुद्रा तथा वस्त्र देती है। वह साधक पर प्रसन्न होकर रात्रि के समय किसी अन्य नाग-कन्या को लाकर साधक के अन्य मनोरथ को भी पूरा कर देती है।

छठी विधि

नाग भवन में जाकर, नाभि के बराबर जल में उतर कर नागिनी मन्त्र का आठ सहस्र संख्या में जप करे। जप के अन्त में नाग-कन्या साधक के निकट आती है। उस समय साधक को चाहिये कि वह उसके मस्तक पर पुष्प डाले। इस भाँति साधन करने से नागिनी साधक की पत्नी के रूप में उसके मनोरथ को पूरा करती है और उसे प्रतिदिन आठ स्वर्ण मुद्रा एवं भोज्य-पदार्थ भेंट करती है।

सातवी विधि

रात्रि के समय नाग भवन में जाकर नागिनी मंत्र का आठ सहस्र की संख्या में जप करे। फिर संयत मन से पुनर्वार जप करे तो नाग-कन्या सर्वाभूषणों से विभूषित होकर साधक के समीप आती है। उस समय साधक को चाहिये कि वह पुष्प, चन्दन, गन्ध और जल द्वारा अर्घ्य देकर उससे कुशल क्षेम पूछे। तब नागिनी प्रसन्न होकर साधक भार्या के रूप में उसे संचित द्रव्य, अनेक प्रकार के सरस भोजन, राज्य धन आदि प्रदान करती है।

आठवीं विधि

रात्रि के समय नाग स्थान में बैठकर आठ सहस्र की संख्या में नागिनी मन्त्र का जप करने से नागिनी शिरोरोग से ग्रस्त होकर साधक के समीप आती है और उसे सम्बोधित करती हुई कहती है—हे वत्स ! मैं तुम्हारा क्या कार्य साधक करूँ ? उस समय साधक उत्तर दे—'तुम मेरी माता हो जाओ ।' यह सुनकर वह नागिनी प्रसन्न होकर साधक को वस्त्र, आभूषण, मनोहर भोज्य पदार्थ तथा स्वर्ण-मुद्रा प्रदान करती है। साधक को चाहिये कि वह उन सब मुद्राओं को व्यय कर दे, क्योंकि उन सबको व्यय न करने से नागिनी क्रुद्ध हो जाती है तथा फिर मुद्रा नहीं देती ।

नवी विधि

रात्रिकाल में किसी सरोवर तट पर बैठकर नागिनी मन्त्र का आठ सहस्र जप करे तो नाग-कन्या आकर साधक की पत्नी के रूप में उसे अभिलाषित वस्तुयें प्रदान करती है। साधक को चाहिये कि वह उन सब वस्तुओं को व्यय कर दे। यदि उनमें से कुछ भी बच रहेगा तो नागिनी कुपित होगी तथा साधक को फिर कुछ नहीं देगी ।

दसवीं विधि

रात्रि के समय नाग स्थान में जाकर आठ सहस्र की सख्या में नागिनी मन्त्र का जप करे। जप के अन्त में नाग कन्या साधक के समीप आती है और उसकी पत्नी होकर, उसके सब मनोरथों को पूरा करती है तथा साधक को प्रतिदिन दिव्य वस्त्र, भोज्य पदार्थ एवं स्वर्ण-मुद्रा प्रदान करती है ।

ग्यारहवीं विधि

रात्रि के समय नाग-स्थान में जाकर नागिनी मन्त्र का आठ सहस्र की संख्या में जप करे। जप के अन्त में जब नाग-कन्या साधक के

समीप आये तो साधक को चाहिये कि वह उसके मस्तक पर पुष्प रक्खे। इस विधि से वह नाग कन्या साधक की पत्नी बनकर, उसे उत्तमोत्तम, आभूषण एवं भोज्य-पदार्थ प्रदान करती है।

टिप्पणी—नागिनी द्वारा प्रदत्त वस्तुओं को उसी दिन व्यय कर देना चाहिये। उसी दिन व्यय न करने से नागिनी क्रुद्ध हो जाती है और साधक को वस्तुयें देना बन्द कर देती है।

नव भूतनी साधन

अब क्रोधराज कथित भूतनी साधन का वर्णन किया जाता है। यह साधन संसार रूपी समुद्र से पार उतरने वाला तथा समस्त मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला है। भूतनी देवी के अनेक प्रकार के स्वरूप हैं। उसमें मुख्य स्वरूप यह है—

१. महाभूतनी, २. कुण्डल धारिणी अथवा कुण्डलवती, ३. सिन्दूरिणी, ४. हारिणी, ५. नटी, ६. अतिनटी अथवा महानटी, ७. चेटिका, ८. कामेश्वरी और ९. कुमारिका।

भूतनी देवी के उक्त रूपों के साधन मन्त्र तथा साधन-विधि का वर्णन नीचे किया गया है।

भूतनी मन्त्र

भूतनी देवी के पूर्वोक्त किसी भी स्वरूप का ध्यान करने के लिये निम्नलिखित मन्त्र का जप किया जाता है। मन्त्र में जिस स्थान पर अमुकं शब्द का प्रयोग हुआ है, उस स्थान पर, भूतनी देवी के जिस स्वरूप की उपासना करनी हो, उस स्वरूप के नाम का उच्चारण करना चाहिये।

मन्त्र यह है—

ॐ ह्रौं क्रूँ क्रूँ क्रूँ कटु कटु ॐ अमुकं क्रूँ क्रूँ क्रूँ ॐ अहः।

महाभूतनी साधन

मन्त्र—

ॐ ह्रौं क्रूँ क्रूँ क्रूँ कटु कटु ॐ महाभूतनी क्रूँ क्रूँ क्रूँ ॐ अः।

साधन विधि—रात्रि के समय चम्पा के वृक्ष के नीचे बैठकर उक्त मन्त्र का आठ सहस्र की संख्या में जप करे। इस प्रकार तीन दिन तक जप करते हुये महा पूजा करनी चाहिये। तदुपरान्त गूगल की धूनी देकर पुनर्वार जप में प्रवृत्त होना चाहिये। अर्द्धरात्रि के समय जब महाभूतनी देवी सम्मुख आ उपस्थित हो, उस समय चन्दन के जल से अर्घ्य देना चाहिये। इस विधि से भूतनी देवी प्रसन्न होकर साधक की अभिलाषा के अनुसार पत्नी, बहन अथवा माता के रूप में प्रकट होती हैं। माता के रूप में वह साधक को आठ सौ वस्त्र, आभूषण तथा आहार प्रदान करती है। बहन के रूप में अनेक प्रकार के रसायन तथा आहार प्रदान करती है एवं साधक के लिये दूर से सुन्दर स्त्री लाकर देती है। यदि स्त्री के रूप में आती है तो साधक को पीठ पर चढ़ाकर स्वर्ग लोक को ले जाती है तथा अनेक प्रकार के सरस भोज्य पदार्थ एवं प्रतिदिन एक सहस्र स्वर्ण-मुद्रा प्रदान करती है।

साधक को चाहिये कि वह भूतनी देवी को माता, बहन अथवा पत्नी—जिस रूप में भी प्राप्त करना चाहता हो, उसी स्वरूप में देवी का ध्यान करे।

कुण्डलवती भूतनी साधन

मन्त्र—

ॐ ह्रौं क्रूँ क्रूँ क्रूँ कटु कटु ॐ कुण्डलवती क्रूँ क्रूँ क्रूँ ॐ अः।

साधन विधि—रात्रि के समय श्मशान में बैठकर उक्त मन्त्र का आठ सहस्र की संख्या में जप करे। पूजनादि की क्रियायें पूर्वोक्त प्रकार से करनी चाहिये। जब तक देवी प्रकट न हो तब तक जप करते रहना चाहिये।

जिस समय कुण्डलवती भूतनी साधक के समीप प्रकट हो, उस समय साधक को चाहिये कि वह उसे रक्त से अर्घ्य दे। इस प्रकार

देवी प्रसन्न होकर माता के समान साधक की रक्षा करती है और उसे पच्चीस स्वर्ण-मुद्रा प्रदान करती है।

सिन्दूरिणी भूतनी साधन

मन्त्र—

ॐ ह्रौं क्रूं क्रूं क्रूं कटु कटु ॐ सिन्दूरिणी क्रूं क्रूं क्रूं ॐ अः।

साधन विधि—रात्रि के समय सूने देव-मन्दिर में बैठकर उक्त मन्त्र का आठ सहस्र की संख्या में जप तथा पूर्वोक्त प्रकार से पूजन करे तो सिन्दूरिणी भूतनी प्रसन्न होकर साधक की पत्नी के रूप में उसकी सब इच्छाओं को पूरा करती है तथा बारहवें दिन प्रसन्न होकर वस्त्र, भोजनादि तथा पच्चीस स्वर्ण-मुद्रा प्रदान करती है।

हारिणी भूतनी साधन

मन्त्र—

ॐ ह्रौं क्रूं क्रूं क्रूं कटु कटु ॐ हारिणी क्रूं क्रूं क्रूं ॐ अः।

साधन विधि—किसी शिवलिंग के समीप बैठकर रात्रि के समय में उक्त मन्त्र का आठ सहस्र की संख्या में तब तक जप करना चाहिये जब तक देवी प्रकट न हो। पूजन आदि पूर्वोक्त विधि से ही करना चाहिये।

जब देवी प्रकट होकर साधक से पूछे कि मैं तुम्हारा क्या कार्य करूँ? उस समय साधक को यह कहना चाहिये कि आप मेरी पत्नी बनें। यह सुनकर हारिणी देवी प्रसन्न होकर साधक की अभिलाषा को पूर्ण करती है तथा उसे आठ स्वर्ण-मुद्रा एवं भोज्य पदार्थ प्रदान करती है।

नटी भूतनी साधन

मन्त्र—

ॐ ह्रौं क्रूं क्रूं क्रूं कटु कटु ॐ नटी क्रूं क्रूं क्रूं ॐ अः।

साधन विधि—वज्रपाणि के मन्दिर में जाकर नटी देवी की प्रति मूर्ति, अंकित कर कनेर के फूलों द्वारा उसकी पूजा करे तथा पूर्वोक्त विधि से पूजन कर उक्त मन्त्र का आठ सहस्र की संख्या में जप करे। जब तक देवी प्रकट न हो, तब तक जप करता रहे। जिस दिन अर्द्ध रात्रि के समय देवी प्रकट हो, तब उन्हें लाल चन्दन के जल से अर्घ्य दे। इस प्रकार देवी प्रसन्न होकर साधक के पास आकर पूछती है—मैं तुम्हारा क्या करूँ? उस समय साधक कहे—हे देवी! तुम मेरी टहलनी हो जाओ। तब वह साधक की टहलनी होकर उसे प्रतिदिन वस्त्र, आभूषण एवं भोज्य पदार्थ समर्पित करती है। इस मन्त्र का जप करते समय नटी भूतनी का टहलनी के रूप में ही चिन्तन और स्मरण करना चाहिये।

अति (महा) नटी भूतनी साधन

मन्त्र—

ॐ ह्रौं क्रूँ क्रूँ क्रूँ कटु कटु ॐ अति नटी (महा नटी) क्रूँ क्रूँ क्रू ॐ अः।

साधन विधि—नदी के संगम-स्थल पर जाकर उक्त मन्त्र का आठ सहस्र की संख्या में जप करे तथा पूर्वोक्त प्रकार से पूजन करे। इस प्रकार सात दिन तक पूजन करे तदुपरान्त आठवे दिन जब सूर्यास्त हो, उस समय चन्दन द्वारा धूप दे। तब 'महानटी भूतनी प्रसन्न होकर अर्द्धरात्रि के समय साधक के समीप भार्या रूप में आती है तथा साधक को प्रतिदिन सौ स्वर्ण-मुद्रा देकर एवं उसकी अन्य अभिलाषाएँ पूर्ण कर प्रातःकाल के समय लौट जाती है।

चेटिका भूतनी साधन

मन्त्र—

ॐ ह्रौ क्रूँ क्रूँ क्रूँ कटु कटु ॐ चेटिका क्रूँ क्रूँ क्रूँ ॐ अः।

साधन विधि—रात्रि के समय अपने घर के द्वार पर बैठकर उक्त

मन्त्र को आठ सहस्र की संख्या में जप तथा पूर्वोक्त विधि से पूजन करे। इस प्रकार तीन दिन तक जप करने से चेटिका भूतनी साधक के समीप आकर, उसकी दासी के रूप में गृह-संस्कार(घर का झाड़ना बुहारना आदि) कार्य करती है तथा उसकी अन्य इच्छाओं को पूरा करती है।

कामेश्वरी भूतनी साधन

मन्त्र—

ॐ ह्रीं क्रूँ क्रूँ क्रूँ कटु कटु ॐ कामेश्वरी क्रूँ क्रूं क्रूं ॐ अः।

साधन विधि—रात्रि के समय मातृगृह में जाकर मत्स्य, मांस अर्पण कर पूर्वोक्त विधि से पूजन कर, उक्त मन्त्र का एक सहस्र संख्या में जप करे। इस प्रकार सात दिन तक जप करने से 'कामेश्वरी भूतनी' प्रसन्न होकर साधक के समीप आती है। उस समय साधक को भक्तिपूर्वक अर्घ्य देना चाहिए। जब देवी प्रसन्न होकर साधक से यह प्रश्न करे कि तुम्हारी क्या आज्ञा है ? उस समय साधक को उससे कहना चाहिए—तुम मेरी पत्नी हो जाओ। यह सुनकर कामेश्वरी साधक पर प्रसन्न होकर पत्नी रूप में उसके सब मनोरथों को पूरा करती हैं तथा उसे राज्याधिकार भी प्रदान करती है।

कुमारिका भूतनी साधन

ॐ ह्रीं क्रं क्रूं क्रूं कटु कटु ॐ कुमारिके क्रूं क्रूं क्रूं ॐ अः।

साधन विधि—रात्रि के समय किसी देवमन्दिर में जाकर उत्तम शैया बनाकर चमेली के पुष्प, वस्त्र तथा श्वेत चन्दन से पूजन कर, गूगल की धप देकर उक्त मन्त्र का आठ सहस्र की संख्या में जप करे। जब तक देवी प्रकट न हो, तब तक जप करना चाहिए। प्रसन्न होने के दिन कुमारिका भूतनी साधक के समीप आकर उसका चुम्बन, आलिंगन आदि करके प्रसन्नता प्रदान करती है तथा सुसज्जित पत्नी रूप में सहवास आदि से संतुष्ट कर, साधक को आठ स्वर्ण मुद्रा, दो

वस्त्र तथा सुन्दर भोजन—ये सब वस्तुयें तथा कुवेर के घर से धन लाकर देती है।

इस प्रकार प्रतिदिन रात्रि भर साधक के समीप रहकर, प्रातः काल चली जाती है।

विशेष—जो साधक किसी की भूतनी का पत्नी के रूप में वरण करे, उसे चाहिए कि वह अन्य किसी भी स्त्री के साथ सम्पर्क न रखे।

विविध साधन

अब प्रेतनी, डाकिनी, पिशाचिनी तथा स्वप्नावती, मधुमती, पद्मावती, मृत संजीवनी आदि विद्याओं की साधन विधि का वर्णन किया जाता है।

प्रेतिनी साधन

मन्त्र—

(१) ॐ ह्रौं क्रौं क्रौं क्रौं क्रूं फट् फट् त्रुट त्रुट ह्लीं ह्लीं प्रेतिनी आगच्छ आगच्छ ह्लीं ह्लीं ठः ठः।

(२) ॐ ह्रौं क्रौं क्रौं क्रूं फट् फट् क्रट् क्रट् ह्लीं ह्लीं प्रेतिनी आगच्छ आगच्छ ह्लीं ह्लीं ठः ठः।

साधन विधि—उपर्युक्त दोनों मन्त्र पाठ भेद के अनुसार दिए गए हैं इनमें से किसी भी एक मन्त्र द्वारा प्रेतिनी का साधन करना चाहिए। विधि यह है—रात्रि काल में निर्जन स्थान वाले वट वृक्ष की जड़ में बैठकर उक्त मन्त्र का आठ सहस्र की संख्या में जप करे। दूसरे दिन धूप तथा गूगल द्वारा पूजा करके रात्रि में फिर जप करे। तब अर्द्ध रात्रि व्यतीत होने पर प्रेतिनी साधक के समक्ष प्रकट होती है। उस समय साधक को चाहिए कि वह गन्ध एवं अर्घ्यादि से प्रेतिनी का पूजन करे। ऐसा करने वे प्रेतिनी प्रसन्न होकर साधक को वर देती है तथा सदैव साधक के वशीभूत रहकर उसकी प्रत्येक अभिलाषा को पूरा करती है। जिस समय प्रेतिनी प्रकट हो, उस समय साधक के

लिए आवश्यक है कि वह उसके स्वरूप को देख कर भयभीत न हो तथा दृढ़ निश्चय एवं भक्ति सहित प्रेतिनी का अर्घ्य-पूजनादि से सत्कार करे। भयभीत हो जाने पर साधक का अनिष्ट होता है।

पिशाची साधन

मन्त्र—

ॐ फट् फट् हुँ हुं अः भोः भोः पिशाचि भिन्द भिन्द छिन्द छिन्द लह लह दह दह पच पच मर्द्दय मर्द्दय पेषय पेषय धून धून महासुर पूजिते हुं हुँ स्वाहा।

साधन विधि—रात्रि के समय उच्छिष्ट मुख से श्मशान में बैठकर उक्त मन्त्र का जप करे। दस लाख की संख्या में जप करने से सिद्धि प्राप्त होती है तथा पिशाची साधक के समक्ष प्रकट होकर उसे अभिलाषित वर प्रदान करती और सदैव उसके वशीभूत रहती है। पिशाची जिस समय प्रकट हो, उस समय साधक को अर्घ्य, गंधादि द्वारा उसका पूजन करना चाहिए तथा जप काल में भी पूजनादि करना चाहिए। यह ध्यान रखना चाहिए कि मन्त्र-जाप के समय में न तो साधक ही किसी व्यक्ति को देखे और न कोई अन्य प्राणी ही साधक को देख पाये। किसी के देख लेने पर जप निष्फल हो जाता है।

डाकिनी साधन

मन्त्र—

डं डां डिं डीं द्रीं धूं धूं चालिनि मालिनि डाकिनि सर्व्व सिद्धि प्रयच्छ हुँ फट् स्वाहा।

साधन विधि—रात्रि के समय में शालमली वृक्ष के ऊपर चढ़कर, ऊर्ध्वबाहु होकर उक्त मन्त्र का जप करे। सम्पूर्ण रात्रि मन्त्र का जप करना चाहिए। इस क्रम से निरन्तर छै वर्ष तक जप करने से डाकिनी सिद्ध हो जाने पर साधक में परम अद्भुत सामर्थ्य उत्पन्न हो जाती

है और तब वह अपनी इच्छानुसार जो चाहे, उसे करने में समर्थ हो जाता है। कोई भी वस्तु उसे अप्राप्य नहीं रहती।

कुलकुण्डलिनी साधन

मन्त्र—

ळं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः कुण्डलिनि जगन्मातः सिद्धि देहि देहि स्वाहा।

साधन विधि—गुरु-पूजन करने के उपरान्त आचमन करके, श्मशान में अथवा एकान्त स्थान में बैठकर तीन वर्ष तक, प्रतिदिन उक्त मन्त्र का दस सहस्र की संख्या में जप करने से कुण्डलिनी सिद्ध होती है। कुण्डलिनी के सिद्ध हो जाने पर साधक को सहज ही में षट् चक्र का भेद ज्ञात हो जाता है।

देवियों के बीज मन्त्र

(१) आं ह्रीं क्रौं

यह भुवनेश्वरी देवी का बीज मन्त्र है।

(२) ह्रीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे स्वाहा।

यह अन्नपूर्णा देवी का बीज मन्त्र है।

(३) ॐ ह्रीं हुँ खे च छे क्ष स्त्रीं हुँ क्षे ह्रीं फट्।

यह त्वरिता का बीज मन्त्र है।

(४) एं क्लीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा।

यह नित्या का बीज मन्त्र है।

(५) ॐ ह्रीं हुँ दुर्गायै नमः।

यह दुर्गा का बीज मन्त्र है।

(६) महिषमर्द्दिनि स्वाहा।

यह महिषमर्द्दिनी का बीज मन्त्र है।

(७) ॐ दुर्गे रक्षिणि स्वाहा।

यह जय दुर्गा का बीज मन्त्र है।

(८) ज्वल ज्वल शूलिनी दुष्ट ग्रह हुँ फट् स्वाहा।

यह शूलिनी का बीज मन्त्र है।

(९) वद वद वाग्वादिनि स्वाहा।

यह वगीश्वरी का बीज मन्त्र है।

(१०) श्री

यह लक्ष्मी का बीज मन्त्र है।

उक्त बीज मन्त्रों द्वारा अभिलाषित देवी का साधन किया जा सकता है। इकके साधन की विशेष विधि की जानकारी प्राप्त करने के लिए हमारी देवी देवता सिद्धि नामक पुस्तक को पढ़ना चाहिए।

दैव विद्या साधन

मन्त्र—

क्रीं क्रीं क्रुं क्रुं क्लुं सः हसखक्रें ठः ठः स्वाहा।

साधन विधि—इस मन्त्र का प्रतिदिन दस सहस्र की संख्या में निरन्तर तीन वर्ष तक जप करने से मन्त्र सिद्धि होती है। इस मन्त्र का साधन करने से अत्यन्त दुर्बुद्धि मनुष्य भी सुबुद्धि प्राप्त करके, अत्यन्त कठिन बात को भी सहज ही समझ लेदे में समर्थ हो जाता है।

षोडशी कवच

अब धन दायक, भोगदायक, आयुदायक, यशदायक एवं मोक्षदायक षोडशी कवच का वर्णन किया जाता है। इस कवच के प्रसाद से स्त्री पुरुष के हृदय परस्पर मिल जाते हैं अर्थात् यह श्रेष्ठ वशीकरण है। इस कवच के द्वारा सम्पूर्ण विघ्न होते हैं तथा समस्त नर-नारियों को वशीभूत किया जा सकता है।

षोडशी कवच मूल संस्कृत में नीचे लिखे अनुसार है। साधकों को चाहिए कि वह साधन करते समय संस्कृत का ही प्रयोग करे।

षोडशीकवचस्यास्य ऋषिर्देवो जनार्दनः।
छन्दोऽनुष्टुप्च विलेयं मोक्षार्थे विनियोजकः ॥

भाषा टीका—इस षोडशी कवच के ऋषि जनार्दन है। छन्द अनुष्टुम् है तथा मोक्षार्थ में इसका विनियोग है।

उग्रामे हृदयं पातु कण्ठं पातु महेश्वरी।
उज्जटा नने पातु कर्णौ च विन्ध्यकसिनी।,
ललाहे विशाखा पातु शाकिनी राकिनी तथा।
लाकिनी बाहुयुग्मं मे पादौ दिक्कारवासिनी ॥
अंगन्यंग प्रत्यंग षोडशी पातु सन्ततम्।

भाषा टीका—उग्रादेवी मेरे हृदय की, महेश्वरी कण्ठ की, उज्जटा नेत्रों की, विन्ध्यवासिनी कानों की, पिशाखा, शाकिनी और राकिनी ललाट की लाकिनी दोनों बाहुओं की, दिक्कारवासिनी दोनों पाँवों की तथा षोडशी देवी मेरे अन्याय अंग प्रत्यंगों की रक्षा करे।

व्याधि बिनाशिनो कवच

अब सम्पूर्ण व्याधियों को नष्ट करने वाली देवी के कवच का वर्णन किया जाता है। यह कवच मूल-संस्कृत मैं नीचे लिखे अनुसार है। साधक को चाहिए कि वह साधन करते समय संस्कृत का ही प्रयोग करे।

कवचस्य ऋषिर्देवि महारुद्रो महेश्वरः।
छन्दोऽनुष्टुब् च विलेयं देवी संसार नाशिनी।
धर्मार्थ काम मोक्षाणाँ विनियोगश्च साधने ॥

भाषा टीका—हे देवी ! इस कवच के ऋषि महारुद्र महेश्वर है, छन्द अनुष्टुप् है तथा संसार नाशिनी देवी देवता है। चतुर्वर्ग के साधन में इसका विनियोग है।

ऐं क्लीं च पातुशीर्षे माँ शक्ति बीजं तथा हृदि ।
ह्सौः पातु नाभिदेशे सुन्दरी कण्ठदेवतः ।।
माहेश्वरी सर्वगात्रे कौमारीदक्षिणे तथा ।
वैष्णवी पूर्वतः पातु उत्तरे सर्वमंगला ।।
पश्चिमे पातु वाराही इन्द्राणी पातु नैऋर्ते ।
शून्येऽनलेऽनिले क्षेत्रे सर्वत्र भुवनेश्वरी ।।

भाषा टीका—ऐं क्लीं, मेरे मस्तक की शक्ति वीज हृदय की, ह्सौ, नाभिदेश की, सुन्दरी, कण्ठदेश की, माहेश्वरी, सम्पूर्ण गात्र की, कौमारी, दक्षिण दिशा कीं ओर, वाराहीं, पश्चिम दिशा की ओर, इन्द्राणी, नैऋर्त् दिशा को ओर तथा भुवनेश्वरो, शून्य में, अग्नि में, वायु में तथा क्षेत्र में सर्वत्र मेरी रक्षा करे ।

स्वप्नावती विद्या

मन्त्र—

ॐ ह्रीं स्वपुरावह्किालि स्वप्ने कथयामुकस्यामुकं देहि क्रीं स्वाहा ।

साधन विधि—चार वर्ष तक प्रतिदिन १०८ बार उक्त मन्त्र का जप करने से यह विद्या सिद्ध होती है । यह विद्या महाकाल द्वारा कथित, त्रैलोक्य दुर्लभ तथा महाचमत्कारिणी है । सिद्ध हो जाने पर यह विद्या प्रतिदिन स्वप्न में अवस्थिति करती है अर्थात् मने में जिस-जिस विषय की कल्पना कीं जाती है, उसके सम्बन्ध में स्वप्न में सव कुछ बता देती है ।

मृतसंजीवनी विद्या

मन्त्र—

वं मृतसञ्जीवनी मृरभुत्थायत्विमम् स्वाहा ।

साधन विधि—थह विद्या सोती हुई रहती है । प्रतिदिन केवल १०८ बार जप करने से ही यह विद्या सिद्धप्रद होती है । इस मन्त्र का जप जीवन भर करना चाहिए । पाँच वर्ष तक नित्य जप करने केबाद

मन्त्र सिद्ध हो जाता है। सिद्ध हो जाने पर यह विद्या मृत प्राणी को पुनरुज्जीवित करने की सामर्थ्य रखती है—ऐसा तन्त्र शास्त्रों में कहा गया है। जो प्राणी यमालय को चला गया हो और जिसकी चिता का धुआँ उठने वाला हो, यह विद्या जयपूर्वक उसका शव-स्पर्श करने से वह चिरजीवी होता है।

मधुमती विद्या

मन्त्र—

श्री मधुमति दिशः स्थावर जंगमाः सागर पुरत्नानि सर्वेषां कर्षिणी ठं ठं स्वाहा।

साधन विधि—जो मनुष्य इस मन्त्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन १०८ की संख्या में जप करता है, उसे यह विद्या सिद्ध होती है। यह विद्या समस्त ज्ञानों की प्रकाशक है। यह सुमेरू, दिशा, सागर, नदी, रत्न, पुरी, स्त्री, वनस्पति तथा पाताल स्थित सभी अलभ्य द्रव्यों का आकर्षण करती है। इसके द्वारा राजा का पुर, स्थान तथा वृतान्त सभी जाना जा सकता है। साधक मनुष्य रात्रिकाल में शैया पर १०८ बार इस मन्त्र का जप करके सिद्धि को प्राप्त होता है।

पद्मावती विद्या

मन्त्र—

ॐ ह्रीं पद्मावतीं देवीं कथय कथय स्वाहा।

साधन विधि—दो वर्ष तक प्रतिदिन १०८ बार इस मन्त्र का जप करने से यह विद्या सिद्ध होती है। विद्या सिद्ध हो जाने पर साधक को सब विषयों का ज्ञान प्राप्त हो जाता है। जो भक्त योगी शैया पर बैठ कर रात्रि के समय इस मन्त्र का प्रतिदिन १०८ बार जप करता है, वह प्रतिदिन के समस्त हितकर वृतान्त को जान लेता है। तन्त्र शस्त्रों में कहा गया है कि इस मन्त्र के साधक को ब्रह्मा, विष्णु आदि का तथा त्रैलोक्य का वृतान्त भी ज्ञात हो जाता है। शुभदायिनी पद्मावती विद्या उससे स्वप्न में सब वृतान्त कहती हैं।

बटुक भैरव साधन

अब बटुक भैरव का मन्त्र, उसकी पूजा एवं साधन विधि का वर्णन किया जाता है।

बटुक भैरव मन्त्र

"ह्रीं बटुकाय आप दुद्धारणाय कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं।"

बटुक भैरव की सिद्धि के लिए 'निबन्ध ग्रंथ' में उक्त इक्कीस अक्षर का मन्त्र कहा गया है। इसी मन्त्र से बटुक भैरव की पूजा आदि करनी चाहिए।

बटुक भैरव-मन्त्र साधन विधि

उक्त मन्त्र की पूजा का क्रम इस प्रकार है—

सर्वप्रथम सामान्य पूजा-पद्धति के क्रमानुसार प्रातः कृत्यादि से प्राणायाम तक सम्पूर्ण कर्म करके पीठन्यास करे। इस पीठन्यास में 'ॐ धर्माय नमः' इत्यादि 'ॐ ऐश्वर्याय नमः' यहां तक न्यास करे। फिर पूर्वोक्त मन्त्र से ऋष्यादि न्यास एवं पञ्चमूर्त्तिन्यास करे। पीछे अंगुष्ठा उंगली द्वारा मस्तक में 'ह्रों वों ईशानाय नमः', तर्जनी अंगुली द्वारा वदन में 'ह्रें वे अघोराय नमः, अनामिका उँगली द्वारा गुह्ज में 'ह्रि वि वामदेवाय नमः', तथा कनिष्ठा उंगली द्वारा चरण में 'ह्रँ वं सद्योजाताप नमः'—इस प्रकार न्यास करके ऊर्ध्व, पूर्व, दक्षिण, उत्तर और पश्चिम मुख होकर उक्त रीति से न्यास करे।

संस्कृत में न्यास की विधि इस प्रकार कही गई है—

"तद्यथा धर्माद्यिमैश्वर्यान्तिं विन्यस्य ऋष्यादिन्यासं कुर्यात् शिरसि वृहदारण्यक ऋषये नमः। मुखे गायत्रीच्छन्दसे नमः। हृदि बटुक भैरवाय देवतायै नमः ततो मूर्त्तिन्यासः। ह्लों वो ईशानाध अंगुष्ठयो। ह्लें वें तत्पुरुषाय नमः तर्जन्योः। ह्लुँ वुँ अघोराय नमः मध्यमयोः। ह्लिं विं वामदेवाय नमः अनामिकयोः। ह्लं वं सद्योजाताय नमः कनिष्ठेयाः। पुनस्त्त्तदंगुलीभिः शिरोवदनहृद्गुह्यपादेषु तत्तद्बीजादि का स्तत्तन्मूर्त्तीर्न्यसेत्। तथा ऊर्ध्वप्राग्दक्षिणोद्वीच्यपश्चियेषु च ता न्यसेत्। तथा च निबन्धे। अंगुलीदेह ववत्रेषु मूर्त्तीर्न्यस्येद्यथपुरा। सत्यादिपञ्च-ह्लस्वाढ्च शक्तिबीजपुरःसरम्। वकारं पञ्चह्लस्वाढ्यमीशानादिषु योजयेदिति।"

कारागन्यास

फिर कारांगन्यास निम्नलिखित विधि से करना चाहिए—

"ॐ ह्लाँ वाँ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्लीं वीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ ह्लूँ वूँ मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ ह्लैं वैं अनामिकाभ्यां हुं। ॐ ह्लौं वौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। ॐ ह्लः वः करतलकरपृष्ठाभ्या फट्।

इसी प्रकार—

'ॐ ह्लाँ वाँ हृदयाय नमः। ॐ ह्ली वीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्लूँ वूँ शिखाये वषट्। ॐ ह्लैं वैं कवचाय हुँ। ॐ ह्लौं वौ नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्लः वः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।"

इस विधि से करांगन्यास करना चाहिए।

ध्यान के स्वरूप

करांगन्यास करने के उपरान्त ध्यान करना चाहिए। इस देवता के ध्यान के तीन स्वरूप हैं—

(१) सात्विक, (२) राजस और (३) तामस।

सात्विक ध्यान

सात्विक ध्यान को मूल संस्कृत में इस प्रकार कहा गया है—

"वन्दे बालं स्फटिकसदृशं कुण्डलोद्भासिवक्त्रं
दिव्या कल्पैर्न म णिमयैः किंकिणी नूपराद्यैः,
दीप्ताकारं विशदवसनं सुप्रसन्नं त्रिनेत्रं
हस्ताब्जाभ्यां बटुकमनिशं शूलदण्डौदधानम्,

अर्थ—भैरव का बाल स्वरूप स्फटिक के समान कान्तिमान शरीर, कुण्डलों के द्वारा दैदीप्यमान मुख, नवीन मणि जटित किंकिणी तथा पायजेबादि से सुशोभित, निर्मल वस्त्र, प्रसन्नचित्त एवं त्रिनयन है। वे हाथ में शूल और दण्ड को धारण किए हुए हैं।

राजस ध्यान

राजस ध्यान को मूल संस्कृत में इस प्रकार कहा गया है—

उद्यद्भास्करसन्निभं त्रिनयनं रक्तांगरागस्रजं।
स्मेरास्यं वरदं कपालमभयं शूलंदधानं करैः॥
नीलग्रीवमुदार भूषणशतं शीतांशुचूडोज्ज्वलं।
बन्धूकारूणवाससं भयहरं देवं सदा भावये॥

अर्थ—भैरव के शरीर की प्रभा उदीयमान सूर्य की भांति है। वे त्रिनयन, रक्तांगराग, रक्तमालाधारी एवं स्मितमुख हैं। उनके हाथों में वर-मुद्रा, नर-कपाल, अभय-मुद्रा और शूल है। वे साधकों का भय हरने वाले हैं। उनकी ग्रीवा देश नीलवर्ण की है, जो अनेक आभूषणों से विभूषित है। उनके चूड़ा में चन्द्रमा है। वे बन्धूक पुष्प (गुलदुपहरिया का फूल) के समान अरुण वस्त्र धारण किए हुए हैं।

तामस ध्यान

तामस ध्यान को मूल संस्कृत में इस प्रकार कहा गया है—

ध्यायेन्नीलाद्रिकान्ति शशिशकलधरं मुण्डमालामहेशं ।
दिग्वस्त्रं पिंगलाक्षं डमरुमथसृणिं खंगशूलाभयानि ॥
नागं घंटां कपालं करसरसिरुहैर्विभ्रतं भीमदंष्ट्रं ।
कर्पाकल्पं त्रिनेत्रं मणिमयविलसत्किंकिणीनूपुराढ्यम् ॥

अर्थ—भैरव के शरीर की कान्ति नील पर्वत के समान है। वे चन्द्रकला और मोतियों की माला को धारण करने वाले दिगम्बर तथा पिंगलवर्ण नेत्रों वाले हैं। उन्होंने अपने हाथों में डमरू, अंकुश, खंग, शूल, अभयमुद्रा, सर्व, घण्टा तथा नरमुण्ड को धारण कर रक्खा है। उनके दाँतों की पंक्ति भयानक है। वे तीन नेत्रों वाले हैं तथा मणिमय किंकिणी, नूपुरादि आभूषणों से अलंकृत हैं।"

ध्यान का फल

उक्त तीनों प्रकार के ध्यान का फल इस प्रकार कहा गया है—

१. सात्विक ध्यान से अकाल मृत्यु का नाश, आयु की वृद्धि, आरोग्य एवं मुक्ति की प्राप्ति होती है।

२. राजसी ध्यान से धर्म में वृद्धि, कामना की पूर्ति तथा धन की प्राप्ति होती है।

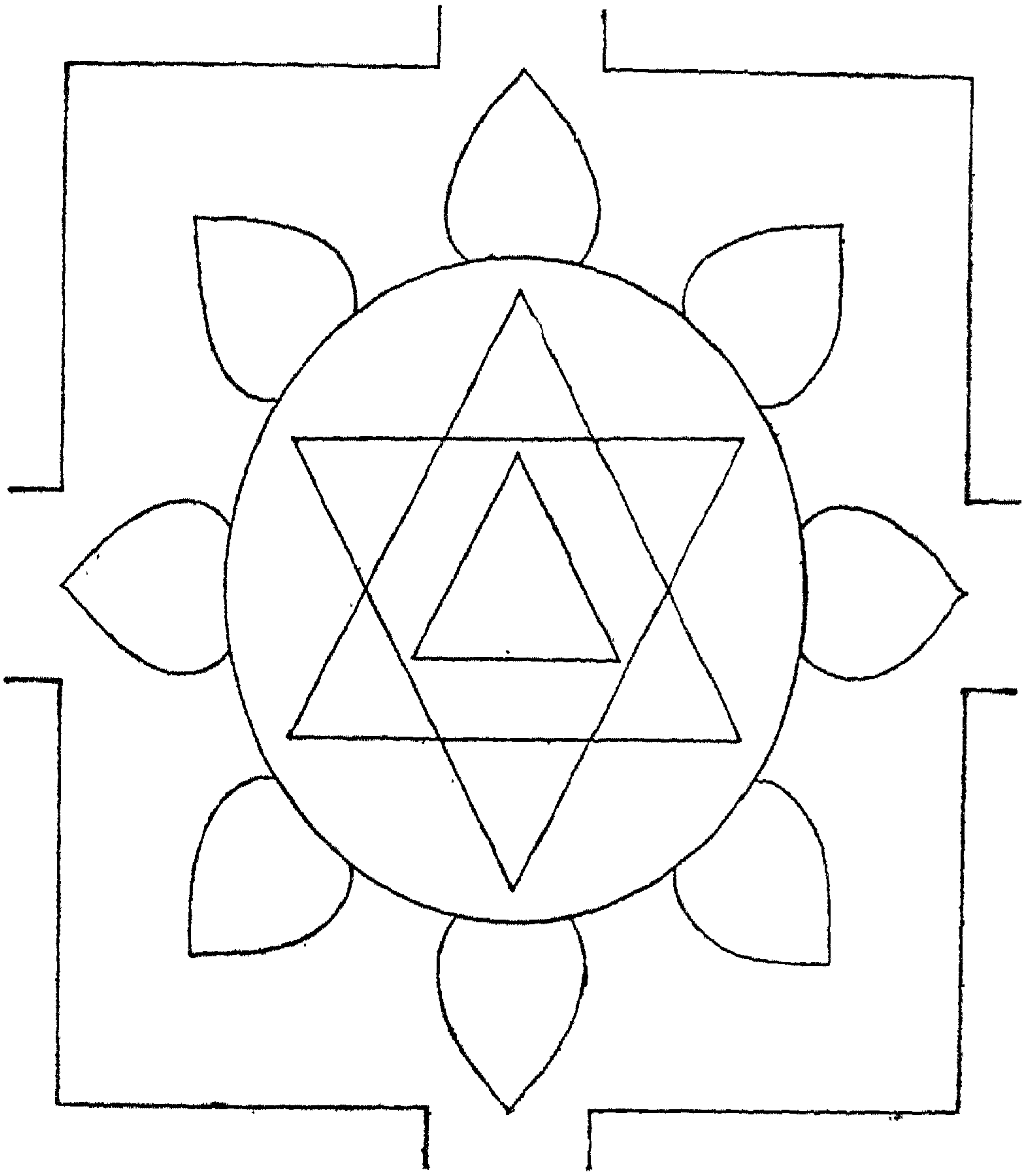
३. तामसी ध्यान से शत्रुकृत कृत्यादि एवं भूतावेश जनित रोगों का नाश हो जाता है।

साधक को चाहिए कि वह अपनी कामनानुसार पूर्वोक्त प्रकारों में से किसी भी स्वरूप का ध्यान करके मानस-पूजा एवं अर्ध्य-स्थापन करे।

भैरव पूजा का यन्त्र

बटुक भैरव की पूजा के यन्त्र को निम्नांकित विधि से लिखना चाहिए।

पहले त्रिकोण लिखकर, उसके बाहर षट्कोण तथा उसके बाहर अष्टदल पद्म को अंकित कर चतुर्द्वार अंकित करे। इस प्रकार यन्त्र का जो स्वरूप बनेगा, उसे नीचे प्रदर्शित किया गया है—



पूजन विधि

'उक्त प्रकार से यन्त्र बनाकर मूलमन्त्र से मूर्ति की कल्पना करके पुनर्वार ध्यान, आवाहनादि कर, पांच पुष्पांजलि देने तक सब कर्म करके आवरण पूजा प्रारम्भ करे।

इस देवता के आवाहन में कुछ विशेषता है। जिसे संस्कृत मूल

में इस प्रकार कहा गया है। इसका अर्थ किसी संस्कृतज्ञ विद्वान् पण्डित से पूछकर जान लेना चाहिए। यहाँ जानबूझकर नहीं लिखा गया है।

"मूलादि सद्योजातमन्त्रेणावाहनं। मूलादिवामदेवेन स्थापन्। मूलेन सान्निध्यं। अघोरेण सन्निरोधनं। तत्पुरुषेण योनिमुद्रा प्रदर्शनम्। ईशानेन वन्दनमिते विशेषः।"

कर्णिका की चारों दिशाओं और कोने में 'ॐ ईशानाम नमः, ॐ अघोराय नमः, ॐ तत्पुरुषाय नमः, ॐ सद्योजाताय नमः और 'ॐ वामदेवाय नमः तथा पद्मदल में 'ॐ असितांगभैरवाय नमः' इसी तरह 'रुरु भैरवाय नमः, चण्ड भैरवाय नमः, क्रोध भैरवाय नमः, उन्मत्त भैरवाय नमः, कपालिभैरवाय नमः, भीषण भैरवाय नमः' तथा 'संहार भैरवाय नमः'—इन आठ भैरवों की पूजा करे।

षट् कोण में 'ॐ ह्रां वां हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं वीं शिरसे स्वाहा, ॐ ह्रूं वूं शिखायै वषट्, ॐ ह्रैं वैं कवचाय हुं ॐ ह्रौं वौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ह्रः वः अस्त्राय फट्'—यह षडंग पूजन करे।

तत्पश्चात् पूर्वादि क्रम से 'ॐ डाकिनै पुत्राय नमः' इसी प्रकार 'लाकिनी पुत्राय नमः, राकिणी पुत्राय नमः, काकिनी पुत्राय नमः, शाकिनी पुत्राय नमः, हाकिनी पुत्राय नमः, मालिनी पुत्राय नमः और 'देवी पुत्राय नमः' इस उच्चारण के साथ आठों दिशाओं में पूजन करे।

दक्षिण की ओर 'उमापुत्राय नमः' रुद्रदुत्राय नमः, मातृपुत्राय नमः'—कहकर पूजन करे तथा ऊपर की ओर 'ऊर्ध्वमुखी पूत्राय नमः' तथा नीचे की ओर 'अधोमुखी पुत्राय नमः' उच्चारण करके पूजन करे।

फिर पूर्व से ईशान दिशा पर्यन्त 'डाकिनी पुत्र' राकिणी पुत्र, लाकिनी पुत्र, काकिनी पुत्र, शाकिनी पुत्र, हाकिडी पुत्र, मालिनी पुत्र तथा देवी पुत्र का पूजन करे। फिर दक्षिण की ओर 'रुद्रमातृणां

पुत्राय नमः' कहकर न्यास करे। ऊर्ध्वमुखी पुत्राय नमः कहकर ऊपर की ओर तथा 'अधोमुखी पुत्राय नमः कहकर नीचे की ओर इस प्रकार सब पुत्रवर्गों का पूजन करे।

फिर बाह्य अष्टदल में अष्ट दिक्पालों के बटक रूप का पूजन करें। उसके बाहर पूर्व में 'ब्राह्मणी पुत्राय नमः' ईशान में 'माहेश्वरी पुत्राय नमः, उत्तर में 'वैष्णवी पुत्राय नमः' वायव्यकोण में 'कौमारी पुत्राय नमः, पश्चिम में 'इन्द्राणी पुत्राय नमः' नैऋत्य कोण में 'महा लक्ष्मीं पुत्राय नमः', दक्षिण में 'वाराही पुत्राय नमः' तथा अग्निकोण में 'चामुण्डा पुत्राय नमः कहकर पूजन करें।

'ब्राह्मणी पुत्राय नमः' कहकर पूर्व दिशा में, 'माहेशी पुत्राय नमः' कहकर ईशान कोण में, 'वैष्णवी पुत्राय नमः कहकर उत्तर में, कौमारी पुत्राय नमः' कहकर गायक कोण में, 'इन्द्राणी पुत्राय नमः कहकर पश्चिम में, 'महालक्ष्मी पुत्राय नमः' कहकर नैऋत्य कोण में, 'वाराही पुत्राय नमः' कहकर दक्षिण में तथा 'चामुण्डा पुत्राय नमः' कहकर अग्नि कोण में अर्चना करे।

फिर उसके उपरान्त दशों दिशाओं में (१) हेतुक, (२) त्रिपुरा न्मक, (३) वेताल, (४) वह्निजिह्व, (५) कालात्मक, (६) कराल, (७) एकपाद, (८) भीमरूप, (९) अचल और (१०) हाटकेश्वर का पूजन करे।

तदुपरान्त ईशानादि सब दिशाओं, भूमि, अन्तरिक्ष एवं स्वर्लोक में स्थित योगियों का योगिनियों सहित पूजन करे। जैसे—'योगिनी सहित दिव्ययोगीशाय नमः', 'योगिनी सहितान्तरिक्षयोगीशाय नमः', 'योगिनी सहित भूमिष्ठ योगीशाय नमः' आदि।

इस देवता के पुरश्चरण में हविष्याशी तथा जितेन्द्रिय होकर इक्कीस लाख मन्त्र का जप करके घृत, मधु और शर्करा सहित तिल द्वारा जप का दशांश होम करना चाहिए।

बलिदान विधि

अब बटुक भैरव के बलिदान की विधि कही जाती है।

सर्वप्रथम विघ्ननाशक गणेश जी एवं दुर्गा का विधिवत् पूजन करके बलिदान करे। शालिधान्य का अन्न, खीर, घृत, लाजा चूर्ण शर्करा, गुड़, गन्ने का रस तथा मधु—इन सब पदार्थों को मिलाकर रात्रि के समय में लाल चन्दन तथा लाल पष्पों के साथ बलि निवेदन करे अथवा एक सर्वांग सुन्दर बकरे को मारकर बलि प्रदान करे।

बलि प्रदान करते समय शत्रुओं की सेना को भी बलि रूप में निवेदित कर देना चाहिए। बलिमन्त्र में शत्रु के नाम का उच्चारण करना चाहिए। बलि का मन्त्र इस प्रकार है—

शत्रुपक्षस्य रुधिरं पिशितं च दिने दिने।
भक्षय स्वगणैः सार्द्धं सारमेयसमन्वितः॥

इस प्रकार बलि प्रदान करने से बटुक भैरव सन्तुष्ट होकर साधक के समस्त शत्रुओं का मांस अपने गणों को बाँट देते हैं। इस तरह बलि देने से शत्रुपक्ष का नाश हो जाता है।

उक्त विधि से बटुक भैरव के सिद्ध हो जाने पर साधक को अभीप्सित फल की प्राप्ति होती है। सिद्ध बटुक भैरव साधक की प्रत्येक अभिलाषा को पूर्ण करते रहते हैं।

भैरव साधन

भैरव मन्त्र

ॐ ह्रीं बटुकाय कष्टुद्धारण कुरु कुरु बटुकाय ह्रीं स्वाहा।

भैरव-साधन न्यास

ॐ ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ ह्रं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां वौषट्। ॐ ह्रौं कनिष्ठकाभ्यां हुम्। ॐ ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। ॐ ह्रां हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रों कवचायहुँ। ॐ ह्रैं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ ह्रौं कवचाय हुँ। ॐ ह्रः अस्त्राय फट्।

इस विधि से न्यास करना चाहिये।

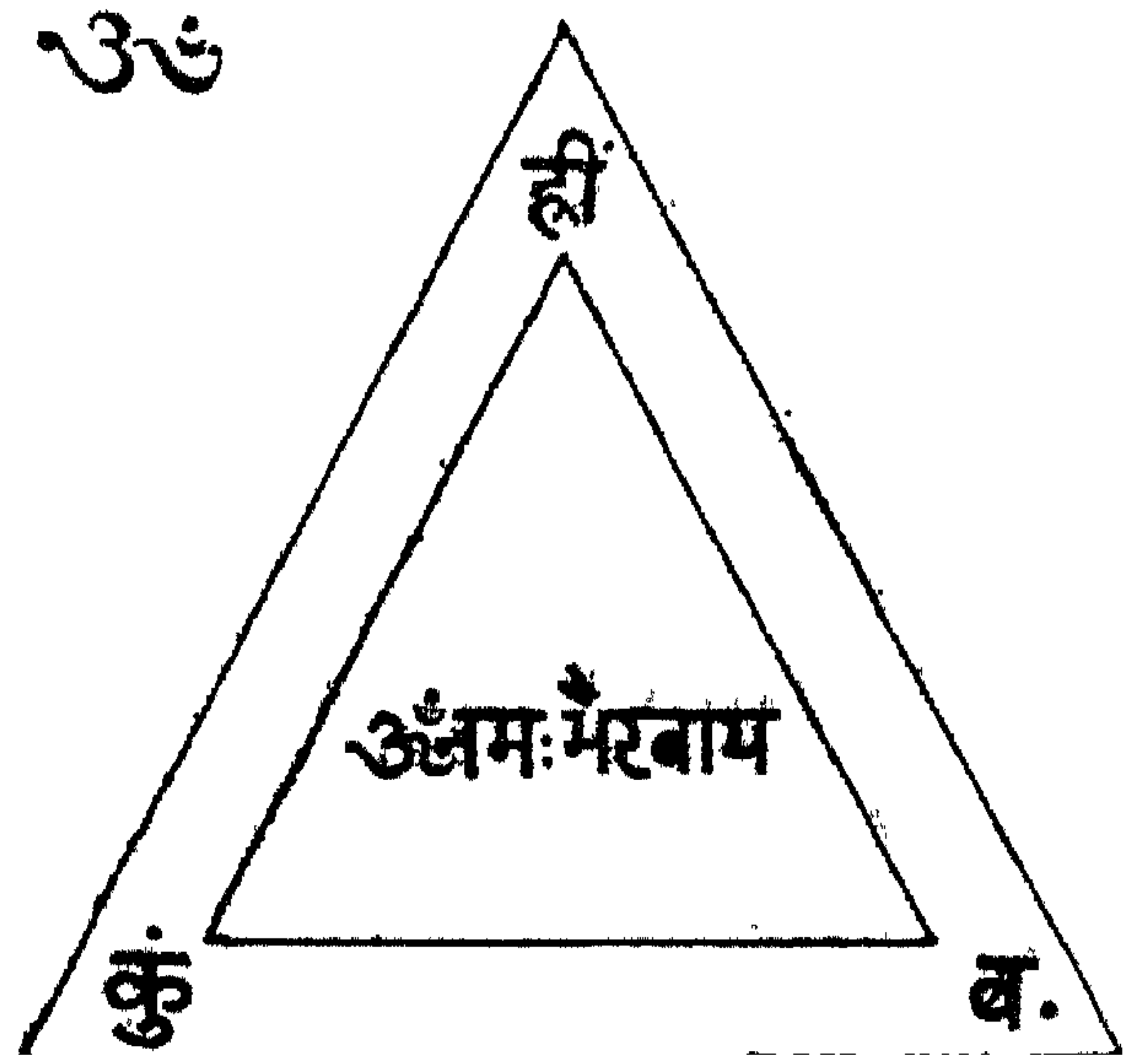
भैरव-ध्यान

न्यास के उपरान्त निम्नलिखित श्लोक से भैरव का ध्यान करें।

करकलितकपालः कुंडली दण्डपाणि
स्तरुणतिमिर नीलो व्याल यज्ञोपवीतः।
कृत समय सपर्य्याविघ्नविच्छेद हेतु
जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्।

भैरव-पूजन का यन्त्र

ध्यानोपरान्त सिन्दूर का चौका देकर उसमें एक त्रिकोण यन्त्र बनाये। यन्त्र में ह्रीं के ऊपर दीपक धरे तथा संकल्प, न्यास, ध्यान करके, आवाहनादि षोडशोपचार से भैरव का पूजन करे। यन्त्र का स्वरूप नीचे प्रदर्शित किया गया है—



भैरव के जप तथा होम की विधि

उक्त विधि से षोडशोपचार पूजन करने के पश्चात् यन्त्र के समीप तेल में पके हुए उड़द के बड़े रखकर उनके समीप ही दही तथा गुड़ रक्खे। थोड़ी सी सामग्री अछूती अलग रख दे। भोग में बड़े, दही और गुड़ को मिलाकर रक्खे। भैरव के भोग में निम्नलिखित पाँच वस्तुयें कही गई हैं—

१. तेल में पके हुए उड़द के बड़े, २. ३. गुड़, ४. मद्य (शराब) तथा अग्नि में भुनी हुई छोटी मछली।

पूर्वोक्त विधि से भोग आदि रखकर एक सहस्र की संख्या में मन्त्र का जप करे तथा घृत और शहद की १०० आहुति का होम करे। इस प्रकार ११ दिन तक जप, पूजन, एवं होम करने से भैरव की सिद्धि होती है। इस प्रकार के तीन प्रयोग कर लेने के बाद कैसा ही कठिन कार्य क्यों न हो, भैरव की कृपा से अवश्य पूरा होता है।

भैरव साधन की अन्य प्रणालियां

आधुनिक भाषा ग्रन्थों में भैरवादि साधन की जिन प्रणालियों का वर्णन किया गया है, पाठकों की जानकारी के लिए उन्हें संकलित करके यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

भैरव-साधन का मन्त्र तथा प्रयोग (१)

सर्व प्रथम भोज पत्र के ऊपर अष्ट गंध द्वारा नीचे की ओर प्रदर्शित यन्त्र को लिखे। फिर उसका धूप, दीपादि से विधिवत् पूजन कर, इस मन्त्र का जप करे—

ॐ नमो काल गौराक्षेत्रपाल बामं हाथं कांति जीवन हाथ कृपाल ॐ गंतीसूरजथंभ प्रातसायं रथभंजलतो विसाररारथंभ कुसीचाल पाषान चाल शिलाचाल चाल हो चालो ना चाले तो पृथ्वी मारे को पाप चलिये चोखा मंत्रा ऐसाकुनी अवनारहसही।

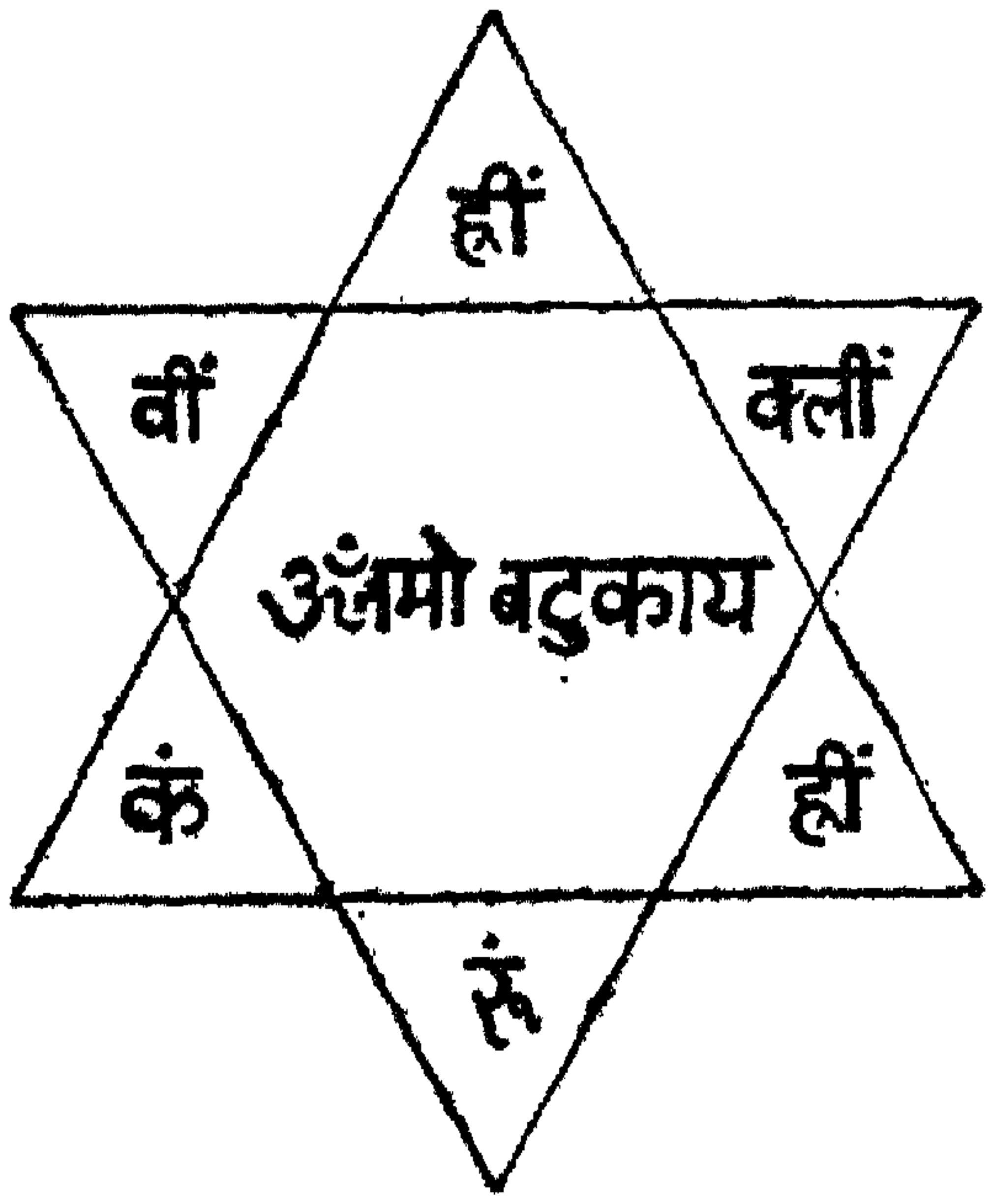
यह मन्त्र एक लाख जपने तथा दशांश होम करने से सिद्ध होता है। प्रतिदिन प्रात काल पवित्र हो यथा विधि पूजनादि करने के पश्चात् यथा शक्ति संख्या में मन्त्र का जप करना चाहिए। प्रतिदिन जप के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से नमस्कार करना चाहिये।

नमस्कार का मन्त्र—

ह्रीं ह्रों नमः।

इस विधि से साधन करने पर भैरव सिद्ध हो जाते हैं और वे

साधक की प्रत्येक मनोभिलाषा को पूरा करते हैं—ऐसा बताया गया है।



भैरव-साधन का मन्त्र तथा प्रयोग (२)

मन्त्र—

ॐ काली कंकाली महाकाली के पुत्र कंकाल भैरव हुकुम हाजिर रहै मेरा भेजा काल करै भेजा रक्षा करै आन बांधू वान बांधू चलते फूल में भेजूं फूल मैं जाप कोठे जी पडे थर थर कांपै हल हल हलै गिरि गिरि परै उठ उठ भगै बक बक बकै मेरा भेजा सवा घड़ी पहर सवा दिन सवा मास सवा बरस को बावला न करै तौ माता काली की शैया पै पग धरै वाचा चूकै तौ ऊमा सूखै वाचा छोड़ कुवाचा करै धोबी की नाद चमार के कूंडे में पड़ै, मेरा भेजा बावला न करै तौ रुद्र के नेत्र के आग की ज्वाला कढै सिर की लटा टूट भूमि में गिरै माता पार्वती के चीर पै चोट पडै बिना हुकुम नहीं मारना हो काली के पुत्र कंकाल भैरव फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच सत्यनाम आदेश गुरु को।

साधन विधि—इस मन्त्र को कालरात्रि अथवा सूर्य ग्रहण की रात्रि में सिद्ध करे। त्रिखूंटा चौका देकर दक्षिण की ओर मुँह करके बैठ जाय तथा एक सहस्र मन्त्र का जप करे। तदुपरान्त लाल कनेर के फूल, लड्डू, सिन्दूर, लौंग का जोड़ा तथा चौमुखा दीपक जलाकर आगे रक्खे एवं दशांश हवन करे। जिस समय भैरव ययंकर रूप धारण कर सामने आवे, उस समय उससे भयभीत न हो, अपितु पुष्पों की माला को उनके कण्ठ में तुरन्त डालकर, सामने लड्डू रख दे। इस विधि से भैरव साधक पर प्रसन्न हो जाते हैं तथा वर माँगने के लिये कहते हैं। उस समय साधक को चाहिये कि वह उनसे त्रिवाचा भरवाकर सदैव वशीभूद रहने का वचन ले ले। तदुपरान्त मन की जो भी अभिलाषा हो, उसे भैरव से कहे। भैरव साधक की उस अभिलाषा को तुरन्त पूरा कर देते हैं तथा भविष्य में भी साधक के वशीभूत बने रहकर, साधक जब भी जिस कार्य के लिये कहता है, उसे पूर्ण करते रहते हैं।

भैरव-साधन का मन्त्र तथा प्रयोग (३)

पाठ-भेद के अनुसार उपरोक्त मन्त्र का दूसरा स्वरूप नीचे लिखे अनुसार पाया जाता है, जिसे साधकों की जानकारी के लिये यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है—

ॐ नमो काली कंकाली महाकाली के पूत कंकाली भैरव हुक्मे हाजिर रहै मेरा भेजा तुरत करे रक्षा करे आन बांधो बान बांधो चलते फिरते को औसान बांधू दशोमुखा बांधू नौ नाड़ी बहत्तर कौण बांधू फूल में भेजूं फूल में जाप काठेजी पड़े थर थर कांपे हल हल हलै गिर गिर परै उठ उठ भगै बक बक बकै मेरा भेजा सवा घड़ी पहर सवा दिन मास सवा बरस का बावला न करे तो काली माता की सय्या पर पाँव धरे बचन जो चुकै तो समुद्र सूखे बाचा छोड़ कुबाचा करै तो धोबी की नाद चमार के कुंड में परै मेरा भेजा बावला न करै तो रुद्र के नेत्र से अग्नि ज्वाला कढ़ै सिर की जटा टूटि भूमि

पर गिरै माता पार्वती के चीर पै चोट पड़े बिना हुक्म के नहीं मारना हो, काली के पुत्र कंकाल भैरव फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

साधन विधि—सूर्य ग्रहण की रात्रि में त्रिकोण चौका लगाकर लाल कनेर के फूल, सिन्दूर, लड्डू, जोड़ा लौंग और चौमुखा दीपक रखकर, दक्षिण दिशा की ओर मुँह करके बैठ जाय। एक सहस्र की संख्या में मन्त्र का जप करके दशांश हवन करे तो भैरव भयंकर रूप रखकर साधक के सामने आये। उस समय उनसे भयभीत न हो, अपितु उनके गले में माला पहनाकर, उनके सामने लड्डू रख दे। तदुपरान्त उनसे जो कार्य कराना हो, उसे करने के लिये कहे तो वह तुरन्त पूरा हो।

भैरव-साधन का तन्त्र

बिना साफ किये हुये चावलों को लेकर हांडी में खूब रांधे। फिर उन्हें भोजन करते समय डाढ़ में जो कंकड़ लगे, उसे हाथ में लेकर गाँव के बाहर भागे। वहाँ पनघट पर जिस पनिहारिन को पानी भरते हुये देखे, उसके घड़े में उस कंकड़ को डाल दे जब उसका घड़ा फूट जाय तब उसके गिडना को लेकर उस वन में जाय, जहाँ से चरकर गायें गाँव को वापिस आ रही हों। सन्ध्या के समय गिडने में देखते हुए सामने की ओर चला जाय। गायों के पाँवों से उठने वाली धूली में जब भैरव के दर्शन हों, तब उसके समीप जा पहुँचे और उनसे त्रिवाचा भरवा ले। उस समय भैरव से जो कुछ वर माँगा जाय, उसकी वे पूर्ति करते हैं।

भैरव-साधन का तन्त्र (३)

अमावस्या की रात्रि में अपने वीर्य को निकालकर, सुखा कर और पीस कर रख ले। जब दूसरी अमावस्या आवे, तब-तब उसे आँखों में आँजकर, उस स्थान पर जाय, जहाँ सन्ध्या के समय भेड़-बकरियाँ चरने के बाद लौटकर आ रही हों। दृष्टि गढ़ा कर देखने पर, उनके

बीच किसी एक बकरे के ऊपर भैरव सवार दृष्टि पड़ेंगे। तब समीप पहुँचकर उनकी कुलह (टोपी) उतार कर अपने पास रख ले, जब भैरव पास आकर टोपी माँगे उस समय उसे छिपा ले। जब वे वशीभूत रहने के लिये तीन वचन दे दे, तब टोपी को वापिस कर दे। इस विधि से भैरव साधक के वशीभूत रहेंगे और जो भी इच्छा करेगा, उसकी पूर्ति करते रहेंगे।

भैरव-साधन का तन्त्र

शनिवार अथवा रविवार की रात्रि में किसी एकान्त स्थान में जाकर सिर पर पगड़ी बाँध कर आकाश की ओर देखे। जब कोई तारा टूटे तभी अपनी पगड़ी में एक गाँठ बाँध ले। इस प्रकार सात गाँठ बाँधे। दूसरे दिन किसी पनघट पर जाकर बैठ जाय। जब वहाँ से कोई पनिहारिन घड़ा लेकर चले तो अपनी पगड़ी की एक गाँठ खोल दे। उस समय घड़े फूट जायेंगे। जिस घड़े की गर्दन न टूटी हो उसे लेकर भेड़ बकरियों के झुण्ड में जाये और घड़े के गर्दन की गोलाई के भीतर से उन्हें देखना आरम्भ करे। जिस बकरे के ऊपर भैरव सवार दिखाई दें। वहाँ पास पहुँचकर, घड़े की गोलाई में हाथ डाल कर उनकी टोपी को उतार ले तथा घड़े की गर्दन को तोड़कर फेंक दे। इस विधि से भैरव साधक के सदैव वशीभूत रहेंगे और उसके मनोरथों को पूरा करते रहेंगे।